तीव्र पुरुषार्थ

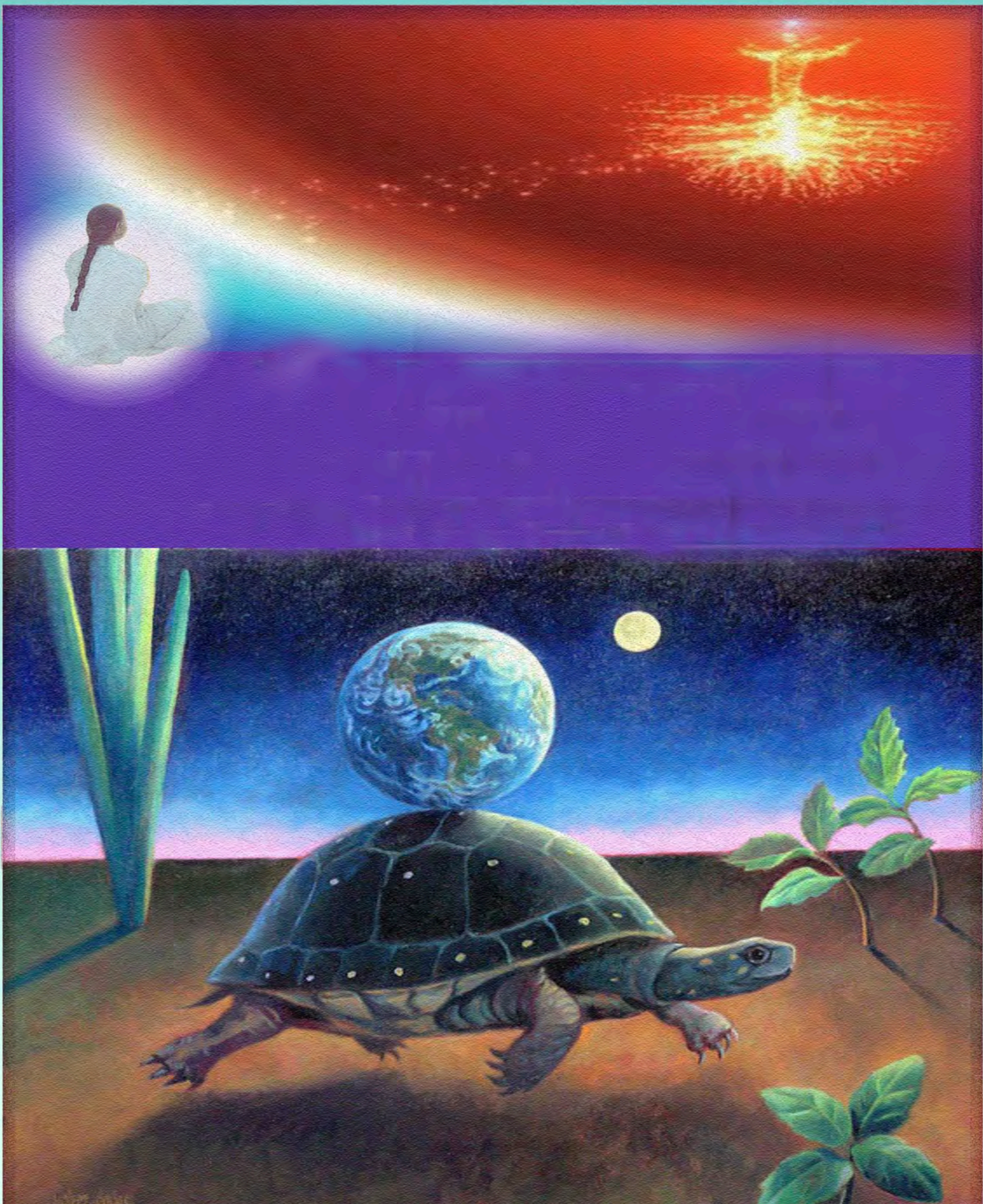

तीव्र पुरुषार्थ

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय
एवं
राजयोग एज्युकेशन एवं शोध प्रतिष्ठान
पाण्डव भवन, आबू पर्वत, राजस्थान

स्पार्क (**SpARC**)

स्पार्क (**SpARC**) एक अनुसन्धान प्रभाग (**Research Wing**) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (**SpARC**) शब्द का विस्तार (**Fullform) Spiritual Applications Research Centre** है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के ५ से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कईं वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहा है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 40 से अधिक विषयों पर अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'तीव्र पुरुषार्थ'**एक है।

अगर अभी तक भी कन्ट्रोलिंग पावर नहीं होगी तो फाइनल रिज़ल्ट में क्या होगा? फाइन भरने के लिए धर्मराज पुरी में जाना पड़ेगा। यह सजायें फाइन हैं। रिफाइन बन जाओ तो फाइन नहीं भरना पड़ेगा। जिसकी अभी से राज्य दरबार ठीक है वह धर्मराज की दरबार में नहीं जायेगे। धर्मराज भी उनकी स्वागत करेगा। स्वागत करानी है या बार-बार सौगन्ध खानी है। अभी नहीं करेंगे, अभी नहीं करेंगे - यह बार-बार कहना पड़े-गा। अपना फाइनल फैसला कर लिया है कि अभी फाइलों के भण्डार भरे हुए हैं? खाता क्लियर हो गया है या मस्तक के टेबल पर यह नहीं किया है, यह नहीं किया है - ये फाइलें रही हुई है? यह करना चाहिए, यह चाहिए की फाइलें तो नहीं भरी पड़ी हैं?

अगर अब तक भी पुराने खाते का हिसाब-किताब चुक्ता न कर बढ़ाते चलेंगे तो रिज़ल्ट क्या होगी! जितना पुराना खाता चलाते रहेंगे उतना ही चिल्लाना पड़ेगा। यह चिल्लाना बड़ा दर्दनाक है। एक-एक सेकेण्ड एक वर्ष के समान अनुभव होगा। इसलिए अभी भी - 'शिव-मन्त्र' द्वारा समाप्ति कर दो। अभी कईयों के खाते भस्म नहीं हुए हैं। अभी पुराने खाते ही चला रहे हैं।

सदैव अपने को बचाने के लिए, किसने किया है, कौन देखता है, ऐसे दिलासे से स्वयं को चलाते रहते हैं। समझते हैं दूसरों को धोखा देते हैं, लेकिन स्वयं का दु:ख जमा कर रहे हैं। एक का सौ गुणा होकर जमा होता रहता है। इसलिए ख्यानत और मिलावट को समाप्त करो।

नहीं तो मिट्टी पोंछते रहेंगे, साजन पहुँच जायेगा। वह मंजिल पर पहुँच जायेगा और आप पोंछते हुए रह जायेंगे। बरातियों की लिस्ट में आ जायेंगे। समय का इन्तज़ार नहीं करना। सदा स्वयं को ऑफर करो कि मैं एवररेडी हूँ। समझा, अब क्या करना है?

अब तक पुराने-पुराने दाग़ भी कईयों के रहे हुए हैं। रबड़ भी लगाते हैं, फिर दाग़ लगा देते हैं। कईयों का तो पहले छोटा दाग़ है लेकिन छिपाते-छिपाते बड़ा कर दिया है। कई छिपाते हैं और कई चालाकी से अपने को चलाते हैं। इसलिए गहरा दाग़ होता जाता है। जैसे बहुत गहरा दाग़ होता है तो जिस चिज़

पर दाग़ होता है, वही फट जाती है, चाहे कागज़ पर हो, चाहे कपड़े पर हो। वैसे यहाँ भी गहरे दाग़ वाले को दिल फाड़ कर रोना पड़ेगा। यह मैंने किया - यह मैंने किया। ऐसे दिल फाड़ करके रोना पड़ेगा। अगर एक सेकेण्ड भी वह दृश्य देखो तो विनाशकाल से भी दर्दनाक है, इसलिए सच्चे बनो, साफ बनो। बाप-दादा को अभी भी रहम आता है इसलिए रोज़ अपनी राज-दरबार लगाओ। कचहरी करो।

07/02/1980

इन्तज़ाम करने वाले अलबेले और इन्तज़ार करने वाले तेज हैं, आप क्या समझते हो? क्या इन्तज़ाम जोर-शोर से कर रहे हो या जैसे दुनियावी लोग कहते हैं, कि जो होगा सो देखा जावेगा, ऐसे ही आप इन्तज़ाम करने के निमित्त बनी हुई आत्माएॅ भी, यह तो नहीं सोचती हो, कि जो होगा सो देखा जावेगा? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। अब तो इतना बड़ा कार्य करने के लिए खूब तैयारी चाहिए, पता है कि क्या तैयारी चाहिए? क्या शंकर को कार्य कराना है? उसको ही तो नहीं देखते हो कि कब शंकर विनाश कराएंगे? विनाश ज्वाला प्रज्जवलित कब और कैसे हुई? कौन निमित्त बना? क्या शंकर निमित्त बना या यज्ञ रचने वाले बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने? जब से स्थापना का कार्य-अर्थ यज्ञ रचा तब से स्थापना के साथ-साथ यज्ञ-कुण्ड से विनाश की ज्वाला भी प्रगट हुई। तो विनाश को प्रज्जवलित करने वाले कौन हुए? बाप और आप साथ-साथ है न? तो जो प्रज्जवलित करने वाले हैं तो उन्हों को सम्पन्न भी करना है, न कि शंकर को? शंकर समान ज्वाला-रुप बन कर प्रज्जवलित की हुई विनाश की ज्वाला को सम्पन्न करना है। जब कोई एक अर्थी को भी जलाते हैं तो जलाने के बाद बीच-बीच में अग्नि को तेज किया जाता है, तो यह विनाश ज्वाला कितनी बड़ी अग्नि है। इनको भी सम्पन्न करने के लिए निमित्त बनी हुई आत्माओं को तेज करने के लिए हिलाना पड़े-कैसे हिलावें? हाथ से व लाठी से? संकल्प से इस विनाश ज्वाला को तेज करना पड़े, क्या ऐसा ज्वाला रुप बन, विनाश ज्वाला को तेज करने का संकल्प इमर्ज होता है या यह अपना कार्य नहीं समझते हो?

ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है। वह विनाश सर्व-आत्माओं की सर्व-कामनाएं पूर्ण करने का निमित्त साधन है। यह साधन आपकी साधना द्वारा पूरा होगा। ऐसा संकल्प इमर्ज होना चाहिए कि अब सर्व-आत्माओं का कल्याण हो। सर्व तड़पती हुई, दु:खी और अशान्त आत्मायें वरदाता बाप और बच्चों द्वारा वरदान प्राप्त कर सदा शान्त और सुखी बन जाएं और अब घर चलें। यह स्मृति समय की समीपता प्रमाण तेज होनी चाहिए। क्योंकि इस संकल्प से ही और इस स्मृति से ही विनाश ज्वाला भड़क उठेगी और सर्व का कल्याण होगा।

अब जितना ही, बेहद के विशाल स्वरुप की सर्विस तीव्र रुप से करते जा रहे हो इतना ही बेहद की उपराम वृत्ति तीव्र चाहिए। आपकी बेहद की उपरामवृत्ति अथवा वैराग्य वृत्ति विश्व की आत्माओं में अल्पकाल के लिए होगी। तो अपने सुख से वैराग्य उत्पन्न करेगी। तब ही वैराग्य के बाद समाप्ति होगी। अपने आप से पूछो कि क्या हमारे अन्दर बेहद की वैराग्य वृत्ति रहती है? जो गायन है कि करते हुए अकर्ता। सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है? कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे। अब अपने कार्य को समेटना शुरु करो। जब अभी से समेटना शुरु करेंगे तब ही जल्दी सम्पन्न कर सकेंगे। समेटने में भी टाइम लगता है।

कार्य समेटना अर्थात् स्वयं के लगाव को समेटना है। अगर स्वयं को सर्व तरफ से समेट कर एवर-रेडी बनाया तो आपके एवर-रेडी बनने से विनाश भी रेडी हो जायेगा। जब आग प्रज्जवलित करने वाले ही शीतल हो बैठ जावेंगे तो आग क्या होगी? तो आग मध्यम पड़ जावेगी ना? इसलिए अब ज्वाला रुप हो अपने एवर-रेडी बनने के पॉवरफुल संकल्प से विनाश ज्वाला को तेज करो। जैसे दु:खी आत्माओं के मन से यह

आवाज शुरु हुआ है कि अब विनाश हो, वैसे ही आप विश्व-कल्याणकारी आत्माओं के मन से यह संकल्प उत्पन्न हो कि अब जल्दी ही सर्व का कल्याण हो तब ही समाप्ति होगी, समझा?

पालना तो की, अब कल्याणकारी बनो और सबको मुक्त कराओ। विनाशकारियों की कल्याणकारी आत्माओं का सहयोग चाहिए। उनके संकल्प का इशारा चाहिये। जब तक आप ज्वाला-रुप न बने, तब तक इशारा नहीं कर सकते। इसलिये अब स्वयं की तैयारी के साथ-साथ विश्व के परिवर्तन की भी तैयारी करो। यह है आपका लास्ट कर्त्तव्य क्योंकि यही शक्ति स्वरुप का कर्तव्य है। स्वयं तो नहीं घबराते हो न? विनाश होगा कि नहीं होगा, क्या होगा और कैसे होगा? यह समझने के बजाए अब ऐसा समझो कि यह हमारे द्वारा होना है। यह जानकर अब स्वयं को शक्ति स्वरुप बनाओ, स्वयं को लाइट हाउस और पॉवर हाउस बनाओ। 03/02/1974

आधारमूर्त्त के दृढ़ संकल्प में कभी हलचल के संकल्प रहते हैं तो विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं में कभी जोश, कभी होश आ जाता है। **आधारमूर्त्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है।** तो अपने-आप से पूछो कि प्रेरक शक्ति-सेना का संकल्प दृढ़ निश्चय-बुद्धि है और स्वयं एवररेडी हैं? जैसे यज्ञ रचने के निमित ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्जवलित हुई यह जो विनाशज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते, तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है। कारण? क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधारमूर्त्त आत्माएँ अभी स्वयं ही सदा ज्वाला रूप नहीं बनी हैं। ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प स्मृति में नहीं रहता है।

ज्वाला-रूप बनने का मुख्य और सहज पुरुषार्थ कौनसा है? (मेरा तो एक शिव बाबा)। यह स्मृति सदा रहे, इसके लिए भी कौनसा पुरुषार्थ है? अब लास्ट विशेष पुरुषार्थ कौन-सा रह गया है? (उपराम अवस्था)। यह तो है रिजल्ट। लेकिन उसका भी पुरुषार्थ क्या है? (न्यारापन) न्यारापन भी किससे आयेगा - कौन-सी धुन में रहने से? धुन यही रहे कि अब वापिस घर जाना है - जाना है अर्थात् उपराम। जाना है-जहाँ जाना है वैसा पुरुषार्थ स्वत: ही चलता है। जब अपने निराकारी घर जाना है तो वैसा अपना वेश बनाना होता है। तो इस नये वर्ष का विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिए कि वापिस जाना है और सबको ले जाना है। इस स्मृति से स्वत: ही सर्व-सम्बन्ध, सर्व प्रकृति के आकर्षण से उपराम, अर्थात् साक्षी बन जायेंगे। साक्षी बनने से सहज ही बाप के साथी बन जायेंगे व बाप-समान बन जायेंगे। सर्व को सदा ज्वाला-रूप दिखाई देंगे, तब ही यह विनाश ज्वाला भी आपके ज्वाला-रूप के साथ-साथ स्पष्ट दिखाई देगी। जितना स्थापना के निमित्त बने ज्वाला-रूप होंगे उतना ही विनाश-ज्वाला रूप में प्रत्यक्ष होगा। इस दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ तब विनाश-ज्वाला भड़केगी। अभी शीतल रूप में हैं, क्योंकि आधारमूर्त्त भी पुरुषार्थ में शीतल हैं। **संगठन रूप का ज्वाला-रूप विश्व के विनाश का कार्य सम्पन्न करेगा।**

अल्प आत्माओं का दृढ़ संकल्प अल्पकाल के लिये कहीं-कहीं विनाशज्वाला भड़काने के निमित्त बना है। लेकिन महाविनाश, और विश्व-परिवर्तन - संगठन के एक श्रेष्ठ संकल्प के सिवाय सम्पन्न नहीं हो सकता। इसलिये इस वर्ष में अपनी लास्ट स्टेज, सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ। तब विनाश के नजारे और साथ-साथ नई दुनिया के नजारे स्पष्ट दिखाई देंगे। सबको इस वर्ष यह पुरुषार्थ करना है। इस लास्ट पुरुषार्थ से ही स्वयं की और विनाश की गति फास्ट होगी।

16/01/1975

ज्ञान के खजाने से प्रत्यक्ष जीवन में, हर कार्य में यूज़ करने से विधि से सिद्धि मिलती है - जो कई बंधनों से मुक्ति और जीवनमुक्ति मिलती है। अनुभव करते हो? ऐसे नहीं कि सतयुग में जीवनमुक्ति मिलेगी, अभी भी संगम के जीवन में भी अनेक हद के बंधनों से मुक्ति मिल जाती हैं। जीवन, बंधन मुक्त बन जाती है। जानते हो ना, कितने बंधनों से फ्री हो गये हो! कितने प्रकार के हाय-हाय से मुक्त हो गये हो! और सदा हाय-हाय खत्म, वाह! वाह! के गीत गाते रहते हो। अगर कोई भी बात में जरा भी मुख से नहीं लेकिन संकल्प मात्र भी, स्वप्न मात्र भी हाय.... मन में आती है तो जीवनमुक्त नहीं। वाह! वाह! वाह! ऐसे है?

चेक करो क्योंकि ब्राह्मण आत्मायें जब तक स्वयं बंधनमुक्त नहीं हुए हैं, कोई भी सोने की, हीरे की रॉयल बंधन की रस्सी बंधी हुई है तो सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का गेट खुल नहीं सकता। आपके बंधनमुक्त बनने से सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का गेट खुलेगा। तो गेट खोलने की वा सर्व आत्माओं को दु:ख, अशान्ति से मुक्त होने की जिम्मेवारी आपके ऊपर है। तो चेक करो जिम्मेवारी कहाँ तक निभाई है? आप सबने बापदादा के साथ विश्व परिवर्तन का कार्य करने का ठेका उठाया है। ठेकेदार हो, जिम्मेवार हो। अगर बाप चाहे तो सब कुछ कर सकता है लेकिन बाप को बच्चों से प्यार है, अकेला नहीं करने चाहते, आप सर्व बच्चों को अवतरित होते ही साथ में अवतरित किया है।

बाप के आदि से अन्त तक के साथी हो। यह नशा है - आदि से अन्त तक साथी हैं? भगवान के साथी हो।

बापदादा इस सीजन के समाप्ति समारोह में एक नये प्रकार की दीपमाला मनाने चाहते हैं।

बापदादा अपने दिल की आशाओं को सम्पन्न करने के दीप जगे हुए देखने चाहते हैं।

स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन। विश्व की बात तो छोड़ो लेकिन बापदादा स्व-परिवर्तन से ब्राह्मण परिवार परिवर्तन, यह देखने चाहते हैं। अभी यह नहीं सुनने चाहते कि ऐसे हो तो यह हो। यह बदले तो मैं बदलूं, यह करे तो मैं करूं..... इसमें विशेष हर एक बच्चे को ब्रह्मा बाप विशेष कह रहा है कि मेरे समान हे अर्जुन बनो। इसमें पहले मैं, पहले यह नहीं, पहले मैं। यह 'मैं' कल्याणकारी मैं है। बाकी हद की मैं, मैं नीचे गिराने वाली है। जो ओटे सो अर्जुन, तो अर्जुन अर्थात् नम्बरवन। नम्बरवार नहीं, नम्बरवन।

बापदादा की आशायें इस सीजन के समाप्ति की यही है कि हर एक बच्चा जो ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारी कहलाते हैं, मानते हैं, जानते हैं, वह हर एक ब्राह्मण आत्मा जो भी संकल्प रूप में भी हद के बंधन हैं, उस बंधनों से मुक्त हो। ब्रह्मा बाप समान बन्धनमुक्त, जीवनमुक्त। ब्राह्मण जीवनमुक्त, साधारण जीवनमुक्त नहीं, ब्राह्मण श्रेष्ठ जीवनमुक्त का यह विशेष वर्ष मनाये। हर एक आत्मा जीतना अपने सूक्ष्म बंधनों को जानते हैं, उतना और नहीं जान सकता है। बापदादा तो जानते हैं क्योंकि बापदादा के पास तो टी.वी. है, मन का टी.वी., बॉडी का नहीं, मन की टी.वी. है। तो क्या अभी जो फिर से सीजन होगी, सीजन तो होगी ना या छुट्टी करें? एक वर्ष छुट्टी करें? नहीं? एक साल तो छुट्टी होनी चाहिए? नहीं होनी चाहिए? पाण्डव एक साल छुट्टी करें? (दादीजी कह रही हैं, मास में १५ दिन की छुट्टी) अच्छा। बहुत अच्छा, सभी कहते हैं, जो कहते हैं छुट्टी नहीं करनी है वह हाथ उठाओ। नहीं करनी है? अच्छा। ऊपर गैलरी वाले हाथ नहीं हिला रहे हैं। (सारी सभा ने हाथ हिलाया) बहुत अच्छा। बाप तो सदा बच्चों को हाँ जी, हाँ जी करते हैं, ठीक है। अभी बाप को बच्चे कब हाँ जी करेंगे! बाप से तो हाँ जी करा ली, तो बाप कहते हैं, बाप भी अभी एक शर्त डालते हैं, शर्त मंजूर होगी? सभी हाँ जी तो करो। पक्का? थोड़ा भी आनाकानी नहीं करेंगे?

बापदादा यही चाहते हैं कि कोई कारण नहीं बताये, यह कारण है, यह कारण है, इसलिए यह बंधन है! समस्या नहीं, समाधान स्वरूप बनना है और

साथियों को भी बनाना है क्योंकि समय की हालत को दख रहे हो। भ्रष्टाचार का बोल कितना बढ़ रहा है। भ्रष्टाचार, अत्याचार अति में जा रहा है। तो श्रेष्ठाचार का झण्डा पहले हर ब्राह्मण आत्मा के मन में लहराये, तब विश्व में लहरेगा। कितनी शिवरात्रि मना ली! हर शिवरात्रि पर यही संकल्प करते हो कि विश्व में बाप का झण्डा लहराना है। विश्व में यह प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने के पहले हर एक ब्राह्मण को अपने मन में सदा दिल-तख्त पर बाप का झण्डा लहराना होगा। इस झण्डे को लहराने के लिए सिर्फ दो शब्द हर कर्म में लाना पड़ेगा। कर्म में लाना होगा। मुश्किल शब्द नहीं है कॉमन शब्द है। वह है - एक सर्व सम्बन्ध, सम्पर्क में आपस में एकता। अनेक संस्कार होते, अनेकता में एकता। और दूसरा - जो भी श्रेष्ठ संकल्प करते हो, बापदादा को बहुत अच्छा लगता है, जब आप संकल्प करते हो ना, तो बापदादा वह संकल्प देखकर, सुनकर बहुत खुश होते हैं, वाह! वाह! बच्चे वाह! वाह! श्रेष्ठ संकल्प वाह! लेकिन, लेकिन..... आ जाता है। आना नहीं चाहिए लेकिन आ जाता है। संकल्प मैजारिटी, मैजारिटी अर्थात् 90 परसेन्ट, कई बच्चों के बहुत अच्छे-अच्छे होते हैं। बापदादा समझते हैं आज इस बच्चे का संकल्प बहुत अच्छा है, प्रोग्रेस हो जायेगी लेकिन बोल में थोड़ा आधा कम हो जाता, कर्म में फिर पौना कम हो जाता, मिक्स हो जाता है। कारण क्या? संकल्प में एकाग्रता, दृढ़ता नहीं। अगर संकल्प में एकाग्रता होती तो एकाग्रता सफलता का साधन है। दृढ़ता सफलता का साधन है। उसमें फर्क पड़ जाता है। कारण क्या? एक ही बात बापदादा देखते हैं रिजल्ट में, दूसरे के तरफ ज्यादा देखते हैं। आप लोग बताते हो ना, (बापदादा ने एक अंगुली आगे करके दिखाई) ऐसे करते हैं, तो एक अंगुली दूसरे तरफ, चार अपने तरफ हैं। तो चार को नहीं देखते, एक को बहुत देखते हैं। इसीलिए दृढ़ता और एकाग्रता, एकता हिल जाती है। यह करे, तो मैं करूं, इसमें ओटे अर्जुन बन जाते, उसमें दूजा नम्बर बन जाते हैं। नहीं तो स्लोगन अपना बदली करो। स्व परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के बजाए करो - विश्व परिवर्तन से स्व परिवर्तन। दूज़े परिवर्तन से स्व परिवर्तन। बदली करें? बदली करें? बापदादा ६ मास में रिजल्ट देखेंगे,

फिर आयेंगे, नहीं तो नहीं आयेंगे। जब बाप ने हाँ जी किया, तो बच्चों को भी हाँ जी करना चाहिए ना! कुछ भी हो जाए, बापदादा तो कहता है, स्व परिवर्तन के लिए इस हद के मैं-पन से मरना पड़ेगा, मैं-पन से मरना, शरीर से नहीं मरना। शरीर से नहीं मरना, मैं-पन से मरना है। मैं राइट हूँ, मैं यह हूँ, मैं क्या कम हूँ, मैं भी सब कुछ हूँ, इस मैं-पन से मरना है। तो मरना भी पड़े तो यह मृत्यु बड़ा मीठा मृत्यु है। यह मरना नहीं है, २१ जन्म राज्य भाग्य में जीना है। तो मंजूर है?

आप नहीं करेंगे तो पीछे वाले करेंगे क्या! माला तो आपकी है ना! 16108 में तो आप पुराने ही आने हैं ना। नये तो पीछे-पीछे आयेंगे। हाँ कोई-कोई लास्ट सो फास्ट आयेंगे। कोई-कोई मिसाल होंगे जो लास्ट सो फास्ट जायेंगे, फर्स्ट आयेंगे। लेकिन थोड़े। बाकी तो आप ही हैं, आप ही हर कल्प बने हो, आप ही बनने हैं। चाहे कहाँ भी बैठे हैं, विदेश में बैठे हैं, देश में बैठे हैं लेकिन जो आप पक्के निश्चय बुद्धि बहुतकाल के हैं, वह अधिकारी हैं ही हैं। बापदादा का प्यार है ना, तो जो बहुतकाल वाले अच्छे पुरुषार्थी, सम्पूर्ण पुरुषार्थी नहीं, लेकिन अच्छे पुरुषार्थी रहे हैं उनको बापदादा छोड़ के जायेगा नहीं, साथ ही ले चलेगा। इसीलिए पक्का, निश्चय करो हम ही थे, हम ही हैं, हम ही साथ रहेंगे। ठीक है ना! पक्का है ना? बस सिर्फ शुभ चिंतक, शुभ चिन्तन, शुभ भावना, परिवर्तन की भावना, सहयोग देने की भावना, रहमदिल की भावना इमर्ज करो। अभी मर्ज करके रखी है। इमर्ज करो। शिक्षा बहुत नहीं दो, क्षमा करो। एक दो को शिक्षा देने में सब होशियार हैं लेकिन क्षमा के साथ शिक्षा दो। मुरली सुनाने, कोर्स कराने या जो भी आप प्रोग्राम्स चलाते हो, उसमें भले शिक्षा दो, लेकिन आपस में जब कारोबार में आते हो तो क्षमा के साथ शिक्षा दो। सिर्फ शिक्षा नहीं दो, रहमदिल बनके शिक्षा दो तो आपका रहम ऐसा काम करेगा जो दूसरे की कमजोरी की क्षमा हो जायेगी। समझा।

(20/03/2004)

बाप अपना कर्तव्य कर रहे हैं, डायरेक्शन देते, पढ़ाते हैं। जब तक पढ़ाना है, पढ़ाते रहेंगे। विनाश सामने खड़ा है, उसका कनेक्शन बाप के साथ है। ऐसे मत समझो-बाप की जुदाई है। जुदाई भी नहीं, विदाई भी नहीं। **जब तक विनाश नहीं तब तक बाप साथ है।** वतन में बाप गया है कोई कार्य के लिए। (15/12/1969)

संगठन में रहने के लिए भी सहनशक्ति चाहिए। फाइनल पेपर जो विनाश का है उसमें पास होने के लिए भी सहनशक्ति चाहिये। वह सहनशक्ति की रिजल्ट मैजा-रिटी में बहुत कम है। इसलिए उसको अब बढ़ाओ। सहनशक्ति कैसे आयेगी? जितना-जितना स्नेही बनेंगे। जितना जिसके प्रति स्नेह होता है तो उस स्नेह में शक्ति आ जाती है। स्नेह में सहनशक्ति कैसे आती है, कभी अनुभव किया है? जैसे -"देखो, कोई बच्चे की माँ है। बच्चे पर आपदा आती है, माँ का स्नेह है तो स्नेह के कारण उसमें सहनशक्ति आ जाती है। बच्चे के लिए सब कुछ सहन करने लिए तैयार हो जाती है। उस समय स्नेह में कुछ भी अपने तन का वा परिस्थितियों का कुछ फिक्र नहीं रहता है। तो ऐसे ही अगर निरन्तर स्नेह रहे तो उसे स्नेही प्रति सहन करना कोई बड़ी बात नहीं है। स्नेह कम है, इसलिए सहनशक्ति भी कम है। (26/05/1969)

एक-एक के मस्तक में लाइट देखने आये। विनाश के समय भी यह लाइट रूप आपको बहुत मदद देगी। कोई किस भी वृत्ति वाला आपके सामने आयेंगे। वह इस देह को न देख आपके चमकते हुए इस बल्ब को देखेंगे। जो बहुत तेज लाइट होती है और उसको जब देखने लगते हैं तो दूसरी सारी चीजें छिप जाती हैं। वैसे ही जितनी-जितनी आप सभी की लाइट तेज होगी उतना ही उन्हों को आपकी देह देखते हुए भी नहीं देखने आयेगी। जब देह को देखेंगे ही नहीं तो तमोगुणी दृष्टि और वृत्ति स्वत: ही खत्म हो जायेगी। यह परीक्षाएं आनी है। (02/02/1970)

सदैव एकरस स्थिति रहे और विघ्नों को भी हटा सकें। इसके लिए सदैव दो बातें अपने सामने रखनी हैं। जैसे एक आंख में मुक्ति दूसरी आंख में जीवनमुक्ति रखते हैं। **वैसे एक तरफ विनाश के नगाड़े सामने रखो और दूसरे तरफ अपने राज्य के नजारे सामने रखो, दोनों ही साथ में बुद्धि में रखो।** विनाश भी, स्थापना भी। नगाड़े भी नज़ारे भी। तब कोई भी विघ्न को सहज पार कर सकेंगी। (28/05/1970)

विनाश के पहले अगर स्नेह के साथ सहयोगी बनेंगे तो वर्से के अधिकारी बनेंगे। विनाश के समय भल सभी आत्मायें पहचान लेंगी लेकिन वर्सा नहीं पा सकेंगी क्योंकि सहयोगी नहीं बन सकेंगी। (07/06/1970)

अब दिन प्रतिदिन नाजुक समय होने के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका? अपने संस्कारों का। अपने विकर्मो पर और विकर्मी आत्मायें जो इस समय हैं उन्हों के ऊपर अब विकराल रूप धारण कर एक सेकेण्ड में भस्म करने का है। शंकर के लिए कहते हैं ना कि एक सेकेण्ड में ऑख खोली और विनाश। यह संहारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है। कोई के भी ऊपर विकराल रूप बनकर दृष्टि डाली और उनके विकर्मी संस्कारों को भस्म कर दें। तो विकर्मों और व्यर्थ कर्मों, विकर्मियों के ऊपर अब विकराल रूप धारण करना है। **अब स्नेहीमूर्त भी नहीं, अब तो काली रूप चाहिए। विकराल संहारी रूप चाहिए। अब लास्ट समय है।** (11/07/1970)

बापदादा के गुण और कर्तव्य को निशाना बनाओ। सदैव बापदादा के कर्तव्य की स्मृति रखो कि बापदादा के साथ मैं भी अधर्म विनाश और सतधर्म की स्थापना के कर्तव्य अर्थ निमित्त बनी हुई हूँ। **जो अधर्म के विनाश अर्थ निमित्त हैं वह स्वयं फिर अधर्म का कार्य वा दैवी मर्यादा को तोड़ने का कर्तव्य कैसे कर सकते हैं।** मैं मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम हूँ। तो मर्यादाओं को तोड़ नहीं सकते हैं। ऐसी स्मृति रखने से समान और सम्पूर्ण स्थिति हो जायेगी।

समझा। **सोचो कम, कर्तव्य अधिक करना है। सिर्फ सोचने में समय नहीं गंवाना है। सृष्टि के कयामत के पहले कमजोरी और कमियों की कयामत करो।** (23/10/1970)

सिर्फ एक शब्द ऐड करो - अटेन्शन। फिर यह बहुरूप एक ही सम्पूर्ण रूप बन जायेगा। इसलिए अब कदम-कदम पर अटेन्शन। सुनाया था कि आजकल सर्व आत्मायें सुख और शान्ति का अनुभव करने चाहती हैं। ज्यादा सुनने नहीं चाहती हैं। अनुभव कराने के लिए स्वयं अनुभव स्वरूप बनेंगे तब सर्व आत्माओं की इच्छा पूर्ण कर सकेंगे। दिन-प्रतिदिन देखेंगे-जैसे धन के भिखारी भिक्षा लेने के लिए आते हैं वैसे शान्ति के अनुभव के भिखारी आत्मायें भिक्षा लेने के लिए तड़पेंगी। अब सिर्फ एक दुःख की लहर आयेगी तो जैसे लहरों में लहराती हुई आत्मायें वा लहरों में डूबती हुई आत्मा एक तिनके का भी सहारा ढूँढ़ती है, ऐसे आप लोगों के सामने अनेक भिखारी आत्मायें यह भीख मांगने के लिए आयेंगी। तो ऐसी तड़फती हुई या भिखारी प्यासी आत्माओं की प्यास मिटाने के लिए अपने को अतीन्द्रिय सुख वा सर्व शक्तियों से भरपूर किया हुआ अनुभव करते हो?

धीर-धीरे यह आवाज़ फैलेगा कि सुख-शान्ति का अनुभव ब्रह्माकुमारियों के पास मिलेगा। भटकते-भटकते असली द्वार पर अनेकानेक आत्मायें आकर पहुँचेंगी। (21/01/1971)

ईश्वरीय पालना का कर्त्तव्य भी चल ही रहा है। अब लाइट में तपस्या द्वारा अपने विकर्मो और हर आत्मा के तमोगुण और प्रकृत्ति के तमोगुणी संस्कारों को भस्म करने का कर्त्तव्य चलना है। अब समझा कि कौन-से कर्त्तव्य का अभी समय है? तपस्या द्वारा तमोगुण को भस्म करने का। जैसे अपने चित्रों में शंकर का रूप विनाशकारी अर्थात् तपस्वी रूप दिखाते हैं, ऐसे एक रस स्थिति के आसन पर स्थित हो तपस्वी रूप अपना प्रत्यक्ष दिखाओ।

(19/04/1971)

आज दो की गिनती ही सुना रहे हैं। दो कर्त्तव्य बताओ। सारे दिन में डबल कर्त्तव्य आपका चलता रहता है। मुख्य कर्त्तव्य है ही विनाश और स्थापना का। कुछ विनाश करना है और कुछ रचना रचनी है। रचना सभी प्रकार की रचते हो। एक तो सर्विस द्वारा अपनी राजधानी की रचना कर रहे हो और दूसरी करनी है बुद्धि में शुद्ध संकल्पों की रचना और व्यर्थ संकल्पों वा विकल्पों के विनाश की विधि भी आप लोग समझ गये हो। रचना मनसा द्वारा भी और वाणी द्वारा भी; दोनों प्रकार की रचना रचते हो। इसी प्रकार डबल कर्त्तव्य करते हो। इसी कार्य में सारा दिन बिजी रहें तो बताओ एकरस स्थिति नहीं हो सकती? एकरस स्थिति नहीं रहती, उसका कारण रचना रचने नहीं आती वा विनाश करना नहीं आता। दोनों कर्त्तव्य में कमी होने कारण एकरस स्थिति ठहर नहीं सकती। (20/08/1971)

आप लोग मुख्य स्लोगन लिखते भी हो विनाश काले प्रीत बुद्धि पाण्डव विजयन्ती और विनाश काले विप-रीत बुद्धि विनशयन्ती। इस स्लोगन को सारे दिन में अपने आप से लगाते हो कि कितना समय प्रीत बुद्धि अर्थात् विजयी बनते हैं और कितना समय विपरीत होने से हार खा लेते हैं? जब माया से हार खाते हो तो क्या प्रीत बुद्धि हो? प्रीत बुद्धि अर्थात् विजयी। तो **जब दूसरों को सुनाते हो कि विनाश काले विपरीत बुद्धि मत बनो; प्रीत बुद्धि बनो तो अपने को भी देखते हो कि इस समय हम प्रीत बुद्धि हैं वा विपरीत बुद्धि हैं? प्रीत बुद्धि वाला कब श्रीमत के विपरीत एक संकल्प भी नहीं उठा सकता।**

ऐसे विनाश काले प्रीत बुद्धि बने हो अर्थात् एक ही लगन में एकरस स्थिति वाले बने हो? (02/02/1972)

तीनों कर्तव्य इक्कठे साथ-साथ चलनी चाहिए। ऐसे नहीं-स्थापना का कर्तव्य करने का समय अलग है, विनाश का कर्तव्य का समय अलग है, फिर और आना है। नहीं। नई रचना रचते जाते हैं और पुरानी का विनाश। आसुरी संस्कार वा जो भी कमजोरियाँ हैं उनका विनाश भी साथ-साथ करते जाना है।

नये संस्कार ला रहे हैं, पुराने संस्कार खत्म कर रहे हैं। तो सम्पूर्ण और शक्ति रुप विनाशकारी रुप न होने कारण सफलता न हो पाती है। दोनो ही साथ होने से सफलता हो जाती है। यह दो रुप याद रहने से देवता रुप आपे ही आवेंगा। दोनो रुप के स्मृति को ही फाईनल पुरुषार्थ की स्टेज कहेंगे। अभी-अभी ब्राह्मण रुप अभी-अभी शक्ति रुप। (28/02/1972)

तीनों कर्तव्य इक्कठे साथ-साथ चाहिए। ऐसे नहीं - स्थापना का कर्तव्य करने का समय अलग है, विनाश के कर्तव्य का समय और आना है। नहीं। नई रचना रचते जाओ, और पुराने का विनाश करते जाओ। आसुरी संस्कार वा जो भी कमजोरी है, उनका विनाश भी साथ-साथ करते जाना है। नये संस्कार ला रहे हैं, पुराने संस्कार खत्म कर रहे हैं। कईयों में रचना रचने का गुण होता है लेकिन शक्ति रुप विनाश कार्य रुप न होने कारण सफलता नहीं हो पाती। इसलिये दोनों साथ-साथ चाहिए। (12/03/1972)

अब की स्टेज प्रमाण अब होना चाहिए अच्छे से अच्छा। जबकि चैलेन्ज करते हो-४ वर्ष में विनाश की ज्वाला प्रत्यक्ष हो जायेगी; तो स्थापना में भी जरुर बाप की प्रत्यक्षता होगी तब तो कार्य होगा ना। अच्छा! कमाल यह है जो विस्तार द्वारा बीज को प्रगट करें। विस्तार में बीज को गुप्त कर देते है। अब तो वृक्ष की अन्तिम स्टेज है ना। मध्य में गुप्त होता है। अन्त तक गुप्त नहीं रह सकता। **अति विस्तार के बाद आखरीन बीज ही प्रत्यक्ष होता है ना।** (17/05/1972)

जो आधारमूर्त हैं उनके संकल्प में समर्थ नहीं तो समय के परिवर्तन में भी कमजोरी पड़ जाती। इस कारण जितना-जितना समय समर्थ बनेंगे उतना ही सृष्टि के परिवर्तन का समय समीप ला सकेंगे। **ड्रामा अनुसार भले निश्चित है लेकिन वह भी किस आधार से बना है? आधार तो होगा ना। तो आधारमूर्त आप हो।** अभी तो आप सभी की नजरों में हो। चैलेंज की है ना ४ वर्ष की! जब यह बातें सुनते हो तो थोड़ा-बहुत संकल्प चलता है कि - ठअगर सचमुच

नहीं हुआ तो, यह भी हो सकता है कि 4 वर्ष में ना हो-यह संकल्प रुप में नहीं चलता है? सामना कर लेंगे वह दूसरी बात है। इसका मतलब यह संकल्प में कुछ है तब तो आता है ना। बिल्कुल पक्का है कि 4 वर्ष में होगा? अच्छा, समझो आप लोगों से कोई पूछते हैं कि विनाश न हो तो क्या होगा? फिर आप क्या कहेंगे? जिस समय समझाते हो तो यह स्पष्ट समझाना चाहिए-ऐसे नहीं 4 वर्ष में कम्पलीट विनाश हो जावेगा। नहीं, 4 Jर्ष में ऐसे नजारे हो जावेंगे जिससे लोग समझेंगे कि बरोबर यह विनाश हो रहा है, विनाश शुरु हो गया। एक बात सहज लग गई तो दूसरी बातें भी सहज लगेंगी ही। विनाश में भी समय तो लगेगा। स्वयं सम्पूर्ण हो जावेंगे तो कार्य भी सम्पूर्ण होगा कि सिर्फ स्वयं सम्पूर्ण होंगे?

एडवांस पार्टी का तो अपना कार्य चल रहा है। लेकिन वह भी आपकी स्थिति एडवांस में जाने लिये रुके हुए हैं। उनका कार्य ही आपके कनेक्शन में चलना है। **सारे कार्य का आधार विशेष आत्माओं के ऊपर है।**

(02/08/1972)

लाइट रूप से कोई भी सामने आये तो एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाये-वह लाइट रूप से ही होगा। ऐसा चलता-फिरता लाइट-हाऊस हो जावेंगे जो किसी को भी यह शरीर दिखाई नहीं पड़ेगा। **विनाश के समय पेपर में पास होना है तो सर्व परिस्थितियों का सामना करने के लिये लाइट-हाऊस होना पड़े, चलते-फिरते अपना यह रूप अनुभव होना चाहिए।** यह प्रैक्टिस करनी है। शरीर बिल्कुल भूल जाय। अगर कोई काम भी करना है, चलना है, बात करनी है, वह भी निमित्त आकारी लाइट का रूप धारण करना है।

(22/11/1972)

जब आत्माएं बाप की समानता के मेले को मनावेंगी तब जय-जयकार होगी, विनाश के समीप आवेंगे। **बाप की समानता ही विनाश को समीप लावेगी।** मेला लगने के बाद क्या होता है? अति शांति। तो आत्माएं भी मेला

मनावेंगी, फिर वानप्रस्थ में चली जावेंगी। वानप्रस्थ कहो अथवा कर्मातीत कहो, लेकिन पहले यह मेला होगा। (04/12/1972)

वैसे भी कोई भी बात, कोई दृश्य, कोई भी चीज परिवर्तन तो होनी ही है। **यह ड्रामा ही परिवर्तनशील है। लेकिन जैसे लोगों को कहते हो कि विनाश तो होना ही है, मुक्तिधाम में तो सभी को जाना ही है लेकिन अगर विनाश के पहले ज्ञान-योग के आधार से विकर्म विनाश कर देंगे तो सजाओं से छूट जावेंगे। जाना तो है ही, फिर भी जो करेगा सो पावेगा।**
(24/12/1972)

परसेन्टेज अर्थात् डिफेक्ट वाला कभी परफेक्ट नहीं बन सकता, इसलिये इस वर्ष में परसेन्टेज को मिटा कर परफेक्ट बनो। तब यह वर्ष विनाश की वर्षा लायेगा। एक वर्ष का समय दे रहे हैं जो कि फिर यह उलहाना न दें कि 'हमको क्या पता' ? एक वर्ष अनेक वर्षो की श्रेष्ठ प्रारब्ध बनाने के निमित्त है।
(18/01/1973)

अभी तो समय ऐसा आ रहा है जो सारे भंभोर को जब आग लगेगी, उस आग से बचाने के लिए कुछ मुख्य बातें आवश्यक हैं। जैसे कहीं भी आग लगती है, तो आग से बचने के लिए पहले किस वस्तु कि आवश्यकता होती है?

जब इस विनाश की आग चारों ओर लगेगी, उस समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का पहला-पहला कर्तव्य कौन-सा है? शान्ति का दान अर्थात् शीतलता का जल देना। पानी डालने के बाद फिर क्या-क्या करते हैं? जिसको जो-कुछ आवश्यकता होती है वह उन की आवश्यकताएॅ पूर्ण करते हैं। किसी को आराम चाहिए, किसी को ठिकाना चाहिए, मतलब जिसकी जैसी आवश्यकता होती है वही पूरी करते हैं। आप लोगों को कौन-सी आवश्यकताएॅ पूर्ण करनी पड़ेंगी, वह जानते हो? उस समय हरेक को अलग-अलग शक्ति की आवश्यकता होगी। किसी को सहनशक्ति की आवश्यकता, किसी को समेटने की शक्ति की आवश्यकता, किसी को निर्णय करने की शक्ति की

आवश्यकता और किसी को अपने-आप को परखने की शक्ति की आवश्यकता होगी। किसी को मुक्ति के ठिकाने की आवश्यकता होगी। भिन्न-भिन्न शक्तियों की उन आत्माओं को उस समय आवश्यकता होगी। बाप के परिचय द्वारा एक सेकेण्ड में अशान्त आत्माओं को शान्त कराने की शक्ति भी उस समय आवश्यक है। वह अभी से ही इक्ट्ठी करनी होगी। नहीं तो उस समय लगी हुई आग से कैसे बचा सकेंगे? जी-दान कैसे दे सकेंगे? यह अपने-आप को पहले से ही तैयारी करने के लिए देखना पड़ेगा। (01/06/1973)

अभी समय ऐसा आ रहा है जो सारे भंभोर को आग लगेगी। उस आग से बचाने के लिए मुख्य दो बातें आवश्यक हैं। जब विनाश की आग चारों ओर लगेगी उस समय आप श्रेष्ठ आत्माओं का पहला कर्तव्य है-शान्ति का दान अर्थात् सफलता का बल देना। उसके बाद क्या चाहिए? फिर जिसको जो आवश्यकता होती है वह पूर्ण की जाती है। आप लोगों को ऐसे समय उनकी कौन-सी आवश्यकता पूर्ण करनी पड़ेगी। उस समय हरेक को अलग-अलग शक्ति की आवश्यकता होगी। कोई को सहन करने की शक्ति की आवश्यकता होगी, किसी को समेटने की शक्ति की आवश्यकता होगी, किसी को निर्णय करने की शक्ति की आवश्यकता होगी और कोई को मुक्ति की आवश्यकता होगी। जिसकी जो आशा होगी वह पूर्ण करने के लिये बाप के परिचय द्वारा एक सेकेण्ड में अशान्त आत्मा को शान्त कराने की शक्ति भी उस समय आवश्यक होगी। तो यह सभी शक्तियाँ अभी से ही इक्ट्ठी करनी हैं, नहीं तो उस समय जी-दान कैसे दे सकेंगे? सारे विश्व की सर्व-आत्माओं को शक्तियों का दान देना पड़ेगा। इतना स्टॉक जमा करना है जो स्वयं भी अपने को शक्ति के आधार पर चला सकें और दूसरों को भी दे सकें। कोई भी वंचित न रहे। **एक आत्मा भी यदि वंचित रही तो बोझ किस पर होगा? जो निमित्त बने हुए हैं जी-दान देने के लिये। तो अपनी हर शक्ति के स्टॉक को चेक करो। जिनके पास शक्तियों का स्टॉक जमा है वही लक्की स्टार्स के रूप में विश्व की**

आत्माओं के बीच चमकते हुये नजर आवेंगे। तो अब ऐसी चेकिंग करनी है। (28/06/1973)

छः मास जो दिये हैं वह विनाश की तारीख नहीं दी है। लेकिन हरेक संगमयुगी राजा अपने राज्य कारोबार अर्थात् सदा सहयोगी शक्तियों को एवररेडी बनाकर तैयार कर सके उसके लिए यह समय दिया है।

(30/06/1973)

जैसे विनाशकारी आत्मायें विनाश के लिए तड़पती हैं, क्या ऐसे ही आप स्थापना वाले विश्व-कल्याण के लिये तड़पते हो? ऐसी सेल्फ सर्विस और विश्व की सर्विस इन दोनों के लिये नये-नये इन्वेन्शन निकालते हो? जैसे वह लोग अभी इन्वेन्शन कर रहे हैं कि ऐसे पॉवरफुल यन्त्र बनायें जो विनाश सहज और शीघ्र हो जावे तो क्या ऐसे आप महावीर, सायलेन्स की शक्ति के इन्वेन्टर ऐसा प्लेन बना रहे हो कि जो सारे विश्व को परिवर्तन होने में अथवा उसे मुक्ति और जीवनमुक्ति का वरसा लेने में सिर्फ एक सेकेण्ड ही लगे और सहज भी हो जाये? आप मुआफिक पैतीस वर्ष न लगें। तो ऐसी रिफाईन इन्वेन्शन से एक सेकेण्ड में नज़र से निहाल, एक सेकेण्ड में दु:खी से सुखी, निर्बल से बलवान और अशान्ति से शान्ति का अनुभव करा सको। **क्या ऐसे रिफाईन रुहानी शस्त्र और युक्तियाँ सोचते हो कि एक सेकेण्ड में उनका तड़पना बन्द हो जाय? जैसे बम द्वारा एक सेकेण्ड में मर जायें, वैसे एक सेकेण्ड में उनको वरदान, महादान दे सको क्या ऐसे महादानी और ऐसे वरदानी बने हो?**

(15/07/1973)

जो अपने को विश्व-कल्याणकारी समझ कर चल रहे हैं, उनको तो सदैव ताली अथवा सीटी का इन्तजार करना चाहिए। इन्तज़ार वह करेगा जिसका पहले से ही अपना इन्तज़ाम हुआ पड़ा होगा। अगर इन्तजाम नहीं है तो वह इन्तज़ार नहीं कर सकता तो **पहले से ही इन्तज़ाम करना-यह हैं**

महारथियों की व महावीरों की निशानी। तो अभी एवर-रेडी बनने के लिये अभी से ही अपनी चैंकिग करो। (21/07/1973)

ड्रामा-अनुसार समय भले ही निश्चित है, लेकिन वह ड्रामा भी किसके आधार से बना है? आखिर आधार तो होगा ना? उसके आधार-मूर्त तो आप हो। अभी तो आप सभी की नज़रों में हो। चैलेन्ज किया है ना दो वर्ष का? जब यह बातें सुनते हो तो थोड़ा-बहुत संकल्प चलता है कि अगर सचमुच नहीं हुआ तो? यह भी हो सकता है कि 'दो वर्ष में न हो' - यह संकल्प-रुप में क्या नहीं चलता है? चलो सामना कर लेंगे, यह दूसरी बात है। इसका मतलब हुआ कि संकल्प में कुछ है तब तो आता है ना? बिल्कुल आपको पक्का है कि दो वर्ष में होगा? अच्छा समझो आप लोगों से कोई पूछते हैं कि विनाश न हो तो क्या होगा? फिर आप क्या कहेंगे? जिस समय समझाते हो तो यह स्पष्ट समझाना चाहिए कि ऐसे नहीं कि दो वर्ष में कम्पलीट विनाश हो जावेगा, नहीं। दो वर्ष में ऐसे नज़ारे हो जावेंगे कि जिससे लोग यह समझेंगे कि बराबर यह विनाश हो रहा है और विनाश शुरु हो गया है। एक बात सहज लग गई तो दूसरी बात सहज लगेगी ही। विनाश में समय तो लगेगा ना? जब स्वयं सम्पूर्ण हो जावेंगे तो कार्य भी सम्पूर्ण होगा कि सिर्फ स्वयं ही सम्पूर्ण होंगे? (02/08/1973)

यह तो अन्डरस्टुड (समझ) है कि अगर स्थापना की तैयारी कम है, तो विनाश की तैयारी कैसे होगी? इन दोनों का आपस में कनेक्शन (सम्बन्ध) है न? समय पर तैयार हो ही जावेंगे, यह समझना भी राँग (गलत) है। अगर बहुत समय से महाविनाश का सामना करने की तैयारी का अभ्यास न होगा तो उस समय भी सफल न हो सकेंगे। इसका बहुत समय से अभ्यास चाहिए; नहीं तो इतने वर्ष अभ्यास के क्यों दिये गये हैं? बहुत समय का कनेक्शन है, इसलिए ही ड्रामानुसार बहुत समय पुरुषार्थ के लिए भी मिला है। **बहुत समय की प्राप्ति के लिये बहुत समय से पुरुषार्थ भी करना है, क्या ऐसे बहुत समय का पुरुषार्थ है? साइंस वालों को महाविनाश के लिये ऑर्डर करें? एक**

सेकेण्ड की ही तो बात है, इशारा मिला और किया। क्या ऐसे ही शक्ति-सेना तैयार है? एक सेकेण्ड का इशारा है-सदा देही-अभिमानी। अल्पकाल के लिये नहीं, सदा काल के लिए हो जाओ। ऐसा इशारा मिले तो आप क्या देही-अभिमानी हो जावेंगे या फिर उस समय साधन ढूढेंगे, प्वाइन्टस् सोचेंगे या अपने को ठहराने की कोशिश करेंगे? इसलिए अभी से ऐसा पुरुषार्थ करो। **मिलिट्री को तो अचानक ही ऑर्डर मिलते हैं न?** (23/01/1974)

अपने को हर परिस्थिति से पार करने वाले, शक्तिशाली स्थिति में अनुभव करते हो? शक्तिशाली परिस्थितियों को मास्टर सर्व-शक्तिवान् स्थिति वाले ही सहज पार कर सकते है। दिन-प्रतिदिन प्रकृति द्वारा विकराल रूप से परिस्थितियाँ दिखाई देती जायेंगी। अब तक यह साधारण परिस्थितियाँ हैं। विकराल रूप तो प्रकृति अब धारण करेगी जिसमे विशेष आपदाओं का वार अचानक ही होगा। अभी तो थोड़ा समय पहले मालूम पड़ जाता है। लेकिन **प्रकृति का विकराल रूप क्या होगा? एक ही समय प्रकृति के सभी तत्व साथ-साथ और अचानक वार करेंगे। किसी भी प्रकार के प्रकृति के साधन बचाव के काम के नहीं रहेगे और ही साधन समस्या का रूप बनेंगे। ऐसे समय पर प्रकृति के विकराल रूप का सामना करने के लिये किस बात की आवश्यकता होगी? अपने अकाल-तख्त नशीन अकालमूर्त बनने से महाकाल बाप के साथ-साथ 'मास्टर महाकाल' स्वरूप में स्थित होंगे तब ही सामना कर सकेंगे। महाविनाश देखने के लिये मास्टर महाकाल बनना पड़ेगा। मास्टर महाकाल बनने की सहज विधि कौन-सी है? अकालमूर्त्त बनने की विधि है - हर समय अकाल-तख्त नशीन रहना। जरा-सा भी देहभान होगा, तो अकाले मृत्यु के समान अचानक के वार में हार खिला देगा!**

जैसे प्रकृति के पाँच तत्व विकराल रूप को धारण करेंगे, वैसे ही पाँच विकार भी अपना शक्तिशाली रूप धारण कर अन्तिम वार अति सूक्ष्म रूप में

ट्रायल करेंगे अर्थात् माया और प्रकृति दोनों ही अपना फुल फोर्स का अन्तिम दाव लगायेंगे। जैसे किसी भी स्थूल युद्ध में भी अन्तिम दृश्य ह्रास पैदा करने वाला होता है और हिम्मत बढ़ाने वाला भी होता है, ऐसे ही कमजोर आत्माओं के लिये भी ह्रास पैदा करने वाला दृश्य होगा - मास्टर सर्वशक्तिवान् आत्माओं के लिये वह हिम्मत और हुल्लास देने वाला दृश्य होगा।

ऐसे समय में जैसी स्थिति सुनाई उसके लिये विशेष कौनसी शक्ति की आवश्यकता होगी? सेकेण्ड के हार-जीत के खेल में कौन-सी शक्ति चाहिए? ऐसे समय में समेटने की शक्ति आवश्यक है। जो अपने देह-अभिमान के संकल्प को, देह की दुनिया की परिस्थितियों के संकल्प को, क्या होगा? - इस हलचल के संकल्प को भी समेटना है। शरीर और शरीर के सर्व सम्पर्क की वस्तुओं को भी वा अपनी आवश्यकताओं के साधनों की प्राप्ति के संकल्प को भी समेटना है। घर जाने के संकल्प के सिवाय अन्य किसी संकल्प का विस्तार न हो - बस यही संकल्प हो कि अब अपने घर गया कि गया। शरीर का कोई भी सम्बन्ध व सम्पर्क नीचे न ला सके। जैसे इस समय साक्षात्कार में जाने वाले साक्षात्कार के आधार पर अनुभव करते हैं कि मैं आत्मा इस आकाश तत्व से भी पार उड़ती हुई जा रही हूँ, ऐसे ही ज्ञानी एवं योगी आत्मायें ऐसा अनुभव करेंगी। उस समय ट्रान्स की मदद नहीं मिलेगी। ज्ञान और योग का आधार चाहिए। इसके लिये अब से अकाल-तख्त-नशीन होने का अभ्यास चाहिए। जब चाहे अशरीरीपन का अनुभव कर सकें, बुद्धियोग द्वारा जब चाहे तब शरीर के आधार में आयें। 'अशरीरी भव!' का वरदान अपने कार्य में अब से लगाओ।

ऐसे समय में श्रीमत कैसे लेंगे? टेलीफोन व टेलीग्राम से वायरलेस (बिना तार के विद्युत-चुम्बकीय तरंगों द्वारा समाचार भेजने का यंत्र) सेट है - चाहिये तो वायरलेस लेकिन सेट है? वायरलेस की सेटिंग कैसे होगी? बिल्कुल वाइसलेस (पाप-रहित) वाइसलेस बनना ही वायरलेस सेट की सेटिंग है। **जरा**

अंश के भी अंश-मात्र विकार, वायरलेस के सेट को बेकार कर देगा। इसलिये महीन रूप से स्वयं के स्वयं ही चेकर बनो। तब ही प्रकृति और पाँच विकारों की अन्तिम विदाई के वार को विजयी बन सामना कर सकेंगे। यही प्रकृति वार करने के बजाय बधाई के नजारे सामने लायेगी। चारों ओर जय-जयकार की शहनाइयाँ बजायगी। और बाप-दादा के विजय माला के मणके विश्व के बीच प्रसिद्ध होंगे। सारा विश्व 'अमर भव!' का नारा लगायेगा। ऐसे समय के लिये तैयार हो? अथवा समय आपको तैयार करेगा कि आप समय का आह्वान करेंगे? समय पर जागने वाले को क्या टाइटल देते हैं? समय पर कौन जागा? अगर समय पर जागेंगे या यह सोचेंगे कि समय तैयार कर ही देगा या समय पर हो ही जायेगा तो ब्राह्मण वंश की बजाय क्षत्रिय वंश के हो जायेंगे। इसलिये यह आधार भी नहीं लेना। समझा?

प्रश्न करते हैं कि अब आगे क्या होने वाला है - विनाश होगा या नहीं होगा? विनाश ज्वाला प्रकट करने वाले इस हलचल में होंगे तो विनाश के निमित्त बनी हुई विनाशकारी आत्माओं के बने हुए प्लैन में भी हलचल हो जाती है। जैसे निमित्त बनी हुई आत्मायें सोचती हैं कि होगा या नहीं होगा - अब होगा या कब होगा? वैसे ही विनाशकारी आत्मायें इसी हलचल में है अब करे या कब करें, करें या न करें? **जैसे यादगार चित्र कलियुगी पर्वत को अंगुली देने का है, वैसे ही विनाश कराने के निमित्त बनी हुई सर्व आत्माओं के अन्दर यह संकल्प दृढ हो कि होना ही है। यह संकल्प रूपी अंगुली जब तक सभी की नहीं हुई है, तब तक विनाश का कार्य भी रुका हुआ है। इसी अंगुली से ही कलियुगी पर्वत खत्म होने वाला है।** (14/09/1975)

दूसरा था चारों ओर की अज्ञानी व भक्त आत्माओं का सैर। उसमें क्या देखा? एक तरफ अनेक आत्माएँ अपने शरीर निर्वाह-अर्थ जीवन के साधनों अर्थ किसी-न-किसी यन्त्रों द्वारा स्वयं में व्यस्त थी। साथ-साथ कुछ आत्मायें विनाश-अर्थ यन्त्र रिफाइन (त्रुटिरहित, उन्नत) करने में व्यस्त थी। दूसरी तरफ

कई गृहस्थी और भक्त आत्मायें अपने जन्त्र-मन्त्र से अपनी भावना का फल पाने के लिए व अल्पकाल की प्रत्यक्ष प्राप्ति करने के लिए अपने-अपने कार्य में व्यस्त थी। इन सबमें विशेष भारत और कुछ विदेश में भी सिद्धि प्राप्त करने की कामना से देवियों का विशेष आह्वान कर रही थी। मैजॉरिटी सिद्धि के पीछे ज्यादा व्यस्त थी। सिद्धि प्राप्त करने के लिए स्वयं को समर्पण करने को भी तैयार हो जाते। सिद्धि की विधि में मुख्य दो बातें करते हैं। कोई भी सिद्धि के लिए एक तो एकान्त दूसरी एकाग्रता, दोनों की विधि द्वारा सिद्धि को पाते हैं।

(01/10/1975)

आज वृक्षपति और आदि देव दोनों ही अपने वृक्ष की देख-रेख करने गये। आदि देव अर्थात् साकार मनुष्य सृष्टि का रचयिता बाप (प्रजापिता ब्रह्मा) ने जब वृक्ष को चारों ओर से देखा तो क्या देखा? हर-एक मनुष्य आत्मा रूपी पत्ता पुराना तो हो ही गया है लेकिन मैजॉरिटी पत्तों को बीमारी भी लगी हुई है जिससे उस पत्ते का रंग-रूप बदला हुआ है अर्थात् रौनक बदली हुई है। एक तरफ राज्य-सत्ता को देखा, दूसरी तरफ धर्म सत्ता, तीसरी तरफ भक्ति की सत्ता, चौथी तरफ प्रजा की सत्ता - यह चारों ही सत्तायें बिल्कुल अन्दर से शक्तिहीन, खोखली दिखाई दीं। अन्दर खाली, बाहर से सिर्फ रूप रहा हुआ था। जैसे दीमक लगती है तो अन्दर से खाया हुआ होता है सिर्फ बाहर का रूप ही दिखाई पड़ता है, ऐसे ही राज्य सत्ता में राज्य की सत्ता नहीं थी। नाम राज्य लेकिन अन्दर दिन-रात एक-दूसरे में खींचातान अर्थात् ईर्ष्या की अग्नि जल रही थी। राज्य से सुखों की प्राप्ति तो क्या लेकिन एक मिनट भी चैन नहीं। नींद का भी चैन नहीं। जो मानव जीवन में सारे दिन की थकावट का, संकल्पों को समाने का साधन निद्रा का नियम बना हुआ है, वह अल्पकाल का भी चैन भाग्य में नहीं। अर्थात् भाग्यहीन राज्य। न राज्य सत्ता, न राज्य द्वारा अल्पकाल की प्राप्ति की सत्ता, ऐसा सत्ताहीन राज्य देखा। सदा भय के भूतों के बीच कुर्सी पर बैठा हुआ देखा। यह देखते हुए फिर और तरफ क्या देखा?

धर्म सत्ता - धर्म सत्ता में कुछ थोड़े बहुत छोटे-छोटे नये पत्ते दिखाई दे रहे थे, लेकिन उन पत्तों को बहुत जल्दी अहंकार अर्थात् स्व-अभिमान और सिद्धि स्वीकार की चिड़िया खा रही थी। दूसरी तरफ क्या देखा-नाम धर्म लेकिन है अति कुकर्म। कुकर्म अर्थात् विकर्म का कीड़ा उन्हों की धर्म सत्ता अर्थात् शक्ति को खत्म कर रहा है। अनेक प्रकार के उलटे नशों में चूर, धर्म के होश से बेहोश थे। तो धर्मसत्ता भी बाहर के आडम्बर रूप में देखी। त्याग, तपस्या और वैराग्य के बदले लोगों को रिद्धियों-सिद्धियों में खेलते हुए देखा। वैराग्य के बजाय राग-द्वेष में देखा। मैजॉरिटी जैसे राज्य सत्ता लॉटरी की जुआ खेल रही है वैसे ही वे धर्म सत्ता होते हुए भी भूले भक्तों से अल्पकाल की सिद्धियों का जुआ खेल रहे थे। बड़े-बड़े दाव लगा रहे हैं - यह प्राप्त करा दूंगा तो इतना देना होगा, बीमारी को मिटायेंगे तो इतना दान पुण्य करना होगा। ऐसे सिद्धियों के जुआ के दाव लगा रहे हैं। फिर क्या देखा?

भक्ति की सत्ता - उसमें क्या देखा? अन्ध-श्रद्धा की पट्टियाँ ऑखों पर बंधी हुई हैं - और ढूँढ रहे हैं मन्जिल को। यह खेल देखा है ना, जो ऑखों पर पट्टी बांधे हुए होते हैं तो फिर रास्ता कैसे ढूँढते हैं? जहाँ से आवाज आयेगा वहाँ चल पड़ेंगे। अन्दर घबराहट होगी क्योंकि ऑखों पर पट्टी है। तो भक्त भी अन्दर से दुःख-अशान्ति से घबड़ा रहे हैं। जहाँ से कोई आवाज सुनते हैं कि फलानी आत्मा बहुत जल्दी प्राप्ति कराती है तो उस आवाज के पीछे अन्ध-श्रद्धा में भाग रहे हैं। कोई ठिकाना नहीं। दूसरी तरफ गुड़ियों के खेल में इतने मस्त कि यदि कोई घर (परमधाम) का सही रास्ता बतायें तो कोई सुनने के लिये तैयार नहीं। भक्ति की सत्ता है अति स्नेह की लेकिन स्नेह की सत्ता स्वार्थ में बदल गई है। स्वार्थ का बोल बाला होता है। सब स्वार्थ में भिखारी दिखाई दिया - शान्ति दो, सुख दो, सम्बन्धी की आयु बड़ी दो, सम्पत्ति में वृद्धि हो, यह दो, यह दो, वह दो - ऐसे भीख मांगने वाले भिखारी थे। तो भक्तों को भिखारी रूप में देखा और आगे चलो।

प्रजा की सत्ता - प्रजा में क्या देखा? सभी चिन्ता की चिता पर बैठे हुए हैं। खा भी रहे हैं, चल भी रहे हैं और कोई कर्म भी कर रहे हैं लेकिन सदैव यह भय का संकल्प है कि अभी तीली अर्थात. आग लगी कि लगी। संकल्पों में स्वप्न मुआफिक यह दिखाई देता रहता है कि अभी पकड़ गये कि पकड़े गये - कभी राज्य सत्ता द्वारा, कभी प्रकृति की आपदाओं द्वारा, कभी डाकुओं द्वारा - ऐसे ही संकल्पों में स्वप्न देखते रहते। ऐसी चिन्ताओं की चिता पर सवार, परेशान, दु:खी और अशान्त थे जो कोई रास्ता नजर न आये जिससे अपने को बचा सकें। वहाँ जायें तो आग है, वहाँ जायें तो पानी है। ऐसे चारों ओर की टेन्शन (तनाव) के बीच घब-राये हुए नज़र आये यह थी आज की सैर।

जब यह सैर कर लौटे तो नये वृक्ष की कलम को देखा। कलम में कौन थे? आप सभी अपने को कलम समझते हो? जब पुराने वृक्ष को बीमारी लग गई, जड़जड़ीभूत हो गया तो अब नया वृक्ष-आरोपण आप आधार मूर्तियों द्वारा ही होगा। ब्राह्मण हैं ही नये वृक्ष की जड़ें अर्थात् फाउण्डेशन, आप हो फाउण्डेशन। तो देखा कि फाउण्डेशन कितना पॉवरफुल निमित्त बना हुआ है। **ब्रह्मा बाप को चारों ओर की दुर्दशा देखते हुए संकल्प आया कि अभी-अभी बच्चों के तपस्वी रूप द्वारा योग अग्नि द्वारा इस पुराने वृक्ष को भस्म कर लें।** इतने में तपस्वी-रूप ब्राह्मण व रूहानी सेना इमर्ज की। सब तपस्वी रूप में अपने-अपने यथा शक्ति फोर्स (शक्ति) लगा रहे थे। योग-अग्नि प्रज्जवलित हुई दिखाई दे रही थी। **संगठन रूप में योग अग्नि का प्रभाव अच्छा जरूर था, लेकिन विश्व के विनाश अर्थ विशाल रूप नहीं था। फोर्स था लेकिन फुलफोर्स नहीं था। अर्थात् सर्व ब्राह्मणों के नम्बर अनुसार यथा-शक्ति फुल स्टेज जो हर ब्राह्मण को अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्ण अर्थात् फुल स्टेज प्राप्त करनी थी, उसमें फुल नहीं थे अर्थात् सम्पन्न नहीं थे इस लिये फुल-फोर्स नहीं था, जो एक धक से विनाश हो जाए व पुराना वृक्ष भस्म हो जाय।** अब क्या करेंगे? ब्रह्मा बाप के संकल्प को साकार में लाओ।

बाप स्नेही बन इस विशाल कार्य में सहयोगी बनो। लेकिन कब नहीं, अभी से ही स्वयं को सम्पन्न बनाओ। समझा? (19/10/1975)

आज बाप-दादा चारों तरफ के ब्राह्मण बच्चों की जन्म-पत्री देख रहे थे। जन्म-पत्री देखते वर्तमान समय मैजॉरीटी के अन्दर एक विशेष संकल्प चलता हुआ देखा। वह क्या? **विश्व की आधारमूर्त्त आत्मायें भी कोई आधार पर खड़ी हुई देखीं।** वह आधार क्या? दुनिया के विनाशकारी साधनों को देखते हैं वा प्रकृति की हलचल कब होती है, कहाँ होती है, होती है या नहीं होती है? - इस आधार पर आधारमूर्त्त को खड़े हुए देखा। ऐसे आधार पर ठहरने वाले बच्चों से बाप-दादा का प्रश्न है कि स्थापना करने वाले विनाश के आधार पर रहेगे तो स्थापना करने वालों का भविष्य क्या होगा? विनाश ज्वाला प्रज्जवलित करने के आधारमूर्त्त कौन? प्रकृति का परिवर्तन करने वाले कौन? **प्रकृति व विनाश के साधनों के आधार पर खड़े हुए पुरुषों से उत्तम पुरुषोत्तम हो सकते हैं अथवा पुरुषोत्तम के ऑर्डर पर अर्थात् श्रेष्ठ संकल्प के आधार पर, सर्व आधारमूत्ती के सम्पूर्ण बनने के आधार पर विनाशकारी साधन व प्रकृति अपना कार्य करेगी?** ऑर्डर देने वाला कौन? अधिकारी कौन - प्रकृति या पुरुषोत्तम? आधारमूर्त्त का किसी आधार पर रहना उनको अधिकारी कहेगे? तो क्या देखा?-इन्तज़ाम करने वाले इन्तज़ार में हैं। इन्तज़ाम करने में अलबेलापन और इन्तज़ार करने में अलर्ट (चौकन्ने) हैं। इसको देखते हुए बाप-दादा को हँसी भी आई और रहम भी आया, - क्यों? माया की चतुराई को अब तक बच्चे परख नहीं सके हैं। इन्तज़ार की मीठी नींद में माया सुला रही है और बच्चे आधे कल्प के सोने के संस्कार-वश हो कर कोई तो सेकेण्ड का झुटका खाते हैं और फिर होश में आते हैं, फिर इन्तज़ाम करने के जोश में आ जाते हैं और कोई तो कुछ मिनटों के लिये सो भी जाते हैं, फिर जोश और होश में आते हैं।

(23/10/1975)

संगठित रूप में, ऐसे विशेष पुरुषार्थ की लेन-देन और याद की यात्रा के प्रोग्राम होने चाहिएँ। विशेष पुरुषार्थ अथवा विशेष अनुभवों की आपस में लेन-देन हो। ऐसा संगठन पाण्डवों का होना चाहिए। **ऐसे विशेष योग के प्रोग्राम चलते रहे तो फिर देखो विनाश ज्वाला को कैसे पंखा लगता है। योग-अग्नि से विनाश की अग्नि जलेगी। वह है विनाश-ज्वाला, यह है योग ज्वाला। जो ज्वाला से ज्वाला प्रज्वलित होगी।** आप लोगों के योग का साधारण रूप है तो विनाश ज्वाला भी साधारण है। संगठन पॉवरफुल हो। जैसे जब कोई चीज बनती है तो उसमें पानी चाहिए, घी चाहिए और नमक भी चाहिए, नहीं तो वह चीज़ बन न सके। वैसे हर-एक में अपनी-अपनी विशेषता है लेकिन यहाँ तो सर्व की विशेषताओं का संगठन चाहिए। क्योंकि समय भी अब चैलेन्ज कर रहा है ना। (09/12/1975)

दूसरा - यादव-सेना का समाचार। उनके पोतामेल में क्या देखा? हर कदम पर उनके क्वेश्चन-मार्क्स (?) देखे। स्पीड तेज करने के बहुत चात्रक देखे। लेकिन जितना स्पीड को तेज करते, उतना ही क्वेश्चन-मार्क की दीवार बार-बार आने के कारण स्पीड को तीव्र नहीं कर पाते। क्वेश्चन मार्क्स कौन-से? **एक तो आरम्भ कौन करे - मैं करूँ या वह करे? दूसरा - अब करें या कब करें? तीसरा- इसकी रिजल्ट क्या होगी?** कभी क्रोध-अग्नि प्रज्वलित होती, कभी फिर 'क्या होगा' का संकल्प रूपी पानी छींटे समान अग्नि शीतल कर देता है। चौथा क्वेश्चन यह सब कराने वाला कौन, प्रेरक कौन? इसमें कन्फ्यूज़ हो जाते। उनकी गतिविधि क्या देखी? अपने आप को ही नहीं समझ रहे हैं। होश और जोश - इसी दुविधा में हैं। इसलिये स्वयं से ही परेशान हो जाते हैं। एकान्तवासी बनना चाहते, लेकिन बुद्धि एकाग्र नहीं होती। इसलिये बार-बार जोश में आ जाते। बहुत तेजी से प्लैन बनाते, फुल तैयारी भी कर लेते, समय, सेना, शस्त्र और स्थान सब सेट कर लेते हैं, ऐसे ही समझते कि अभी हुआ कि हुआ। बहुत फास्ट तैयारी में रहते। लेकिन लास्ट प्रैक्टिकल के समय में कन्फ्यूज्ड रूपी सिग्नल लग जाता। इसलिये **उनकी तैयारी में सिर्फ प्रेरक की**

प्रेरणा के एक सेकेण्ड का फर्क है। इन्तज़ाम है लेकिन उस सेकेण्ड की प्रेरणा के इन्तज़ार में हैं। उनकी गतिविधि सेकेण्ड तक पहुँची है। इन्तज़ाम समाप्त कर इन्तज़ार कर रहे हैं। तो उनका पोतामेल सम्पन्न तैयारियों का देखा। अब सिर्फ एक कार्य में लगे हुए हैं - रिफाइन है लेकिन अपने विवेक द्वारा अपनी तैयारी को फाइनल कर रहे हैं। फाइनल करने की एक फाइल अभी रही हुई है। यह था यादवों का समाचार। अभी अपना सुनने की इच्छा है?

ब्राह्मणों के परिवर्तन करने की विधि सिद्धि-स्वरूप न बनने का कारण भावना बदल 'कामना' हो जाना है। इसलिये पुरुषार्थ ज्वाला रूप में नहीं होता है। ब्राह्मणों का ज्वाला-रूप विनाश-ज्वाला को प्रज्वलित करेगा। इसलिये ब्राह्मणों के पोतामेल में अब लास्ट सो फास्ट पुरुषार्थ ज्वाला-रूप का ही रहा हुआ है। (02/02/1976)

आवाज़ द्वारा सर्विस, स्थूल साधनों द्वारा सर्विस और आवाज़ से परे 'सूक्ष्म साधन - संकल्प' की श्रेष्ठता, संकल्प शक्ति द्वारा सर्विस का बैलेन्स प्रत्यक्ष रूप में दिखाओ तब विनाश का नगाड़ा बजेगा। समझा? (07/01/1977)

डेट बताने की जरूरत ही नहीं। कभी भी फ़ाइनल विनाश की डेट फ़िक्स नहीं हो सकती। अगर डेट फ़िक्स हो जाए तो सब सीट्स भी फ़िक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनर्स की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट आ ही जायेगी। जब सभी इस संकल्प से निरसंकल्प होंगे वही डेट विनाश की होगी। अच्छा। (18/01/1977)

लॉफुल और लवफुल का बैलेन्स हो। दोनों साथ-साथ हों। यह जो कमज़ोरी की लहर है, यह ऐसे नहीं कि विनाश के कारण प्रत्यक्ष हो गए हैं, कमज़ोरी बहुत समय की होती, लेकिन अभी छिप नहीं सकते। पहले अन्दर-अन्दर गुप्त कमज़ोरी चलती रहती, **अभी समय नजदीक आ रहा है। इसलिए**

कमज़ोरी छिप नहीं सकती। राजा बनने वाला, प्रजा पद वाले, कम पद पाने वाले, सेवाधारी बनने वाले, सब अभी प्रत्यक्ष होंगे। अन्त में जो साक्षात्कार कहा है, वह कैसे होगा? यह साक्षात्कार करा रहे हैं। बाकी ऐसे नहीं है, कमज़ोरी नहीं थीं अब हुई है - लेकिन अब प्रसिद्ध रूप में चान्स मिला है। **जैसे समाप्ति के समय सब बीमारी निकलती, वैसे समाप्ति का समय होने के कारण हरेक की वैरायटी कमज़ोरियां प्रत्यक्ष होंगी।** अभी तो एक लहर देखी है और भी कई लहरें देखेंगे। अति में जाना जरूर है, अति हो तब तो अन्त हो। जो भी अन्दर कमज़ोरियां हैं, अन्दर छिप नहीं सकती, किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष रूप में आएगी, लेकिन **आपकी भावना रहे कि - इन सबका भी कल्याण हो जाए। आप वरदानी हो तो आपका हर संकल्प, हर आत्मा के प्रति कल्याण का हो।** लहरें तो और भी आएगी एक खत्म होगी, दूसरी आएगी, यह सब मनोरंजन के बाइप्लाटस हैं। और पद भी स्पष्ट हो रहे हैं। यह होते रहेंगे। आश्चर्यवत् सीन होनी चाहिए। एक तरफ नए-नए रेस में आगे दिखाई देंगे। दूसरे तरफ थकने वाले, रुकने वाले भी प्रसिद्ध होंगे। तीसरे तरफ जो बहुत समय से कमज़ोरियाँ रही हुई हैं, वह भी प्रत्यक्ष होगी। नथिंग न्यू हैं, लेकिन रहम की दृष्टि और भावना दोनों साथ हों। अच्छा। (25/06/1977)

अभी ड्रामानुसार समय मिला है, यह अपना लक (भाग्य) समझ समय का लाभ उठाओ। विनाश की घड़ी के कांटे 'आप' हो। **आपका सम्पन्न होना समय का सम्पन्न होना है।** इसलिए सदा स्व-चिन्तन, स्वदर्शन चक्रधारी बनो। (30/06/1977)

सुना तो बहुत है अब बाकी क्या करना है। अब तो सिर्फ मिलन मनाते रहना है। जैसे अभी का मिलन सम्पन्न स्टेज का अनुभव कराता है ऐसे निरन्तर मिलन मनाओ। सुनने का रिटर्न सदा बाप समान सम्पन्न स्वरूप में दिखाओ। **अनेक तड़पती हुई आत्माओं के इन्तज़ार को समाप्त करो - सम्पन्न दर्शनीय मूर्त्त बन अनेकों को दर्शन कराओ।** अब दु:ख अशान्ति की अनुभूति

अति में जा रही है - उन्हें अपनी अन्तिम स्टेज द्वारा समाप्त करने का कार्य अति तीव्रता से करो। मास्टर रचता की स्टेज पर स्थित हो अपनी रचना के बेहद दु:ख और अशान्ति की समस्या को समाप्त करो - दु:ख हर्ता सुख कर्ता का पार्ट बजाओ। सुख शान्ति के खज़ाने से अपनी रचना को महादान और वरदान दो, रचना की पुकार सुनने में आती है!

बड़े में बड़ी आपदा मनोरंजन दृश्य अनुभव हो - यह है मास्टर रचता की स्टेज। जैसे महाविनाश को भी स्वर्ग के गेट खुलने का साधन बताते हो - कहाँ महाविनाश और कहाँ स्वर्ग का गेट! तो महाविनाश की आपदा को भी मनोरंजन का रूप दे दिया ना - तो ऐसे किसी भी प्रकार की छोटी बड़ी समस्या वा आपदा मनोरंजन का रूप दिखाई दे। हाय-हाय के बजाए ओहो! शब्द निकले। इसको कहा जाता है अंगद के समान स्टेज।

(27/11/1978)

जैसे विनाशकारी ग्रुप बहुत तीव्रगति से अपने कार्य को आगे बढ़ाते जा रहे हैं - बहुत रिफाइन सेकेण्ड में शारीरिक बन्धन से मुक्त होने अर्थात शारीरिक दु:ख से सहज मुक्त होने, अनेक आत्माओं को बचाने के सहज साधन बना रहे हैं। किस आधार से? साइन्स की अथार्टी से। ऐसे स्थापना के कार्य में निमित्त बने हुए मास्टर आलमाइटी अथार्टी ग्रुप-आत्माओं को जन्म-जन्मान्तर के लिए माया के बन्धन से, माया द्वारा प्राप्त हुए अनेक प्रकार के दु:खों से, एक सेकेण्ड में मुक्त करने वा सदाकाल के लिए सुख-शान्ति का वरदान देने, हरेक आत्मा को ठिकाने लगाने के लिए तैयार हो! विनाशकारी ग्रुप अब भी एवररेडी है। सिर्फ आर्डर की देरी है - ऐसे स्थापना निमित्त बने हुए ग्रुप एवररेडी हो? क्योंकि **स्थापना का कार्य सम्पन्न होना अर्थात विनाशकारियों को आर्डर मिलना है। जैसे समय समीप अर्थात पूरा होने पर सुई आती है और घण्टे स्वत: ही बजते हैं - ऐसे बेहद की घड़ी में स्थापना की सम्पन्नता अर्थात समय पर सुई (काँटा) का आना और विनाश के घण्टे बजना।** तो बताओ सम्पन्नता में एवररेडी हो?

आज बच्चों के अमृतबेले से नये वर्ष के नये उमंग सुनते बाप-दादा की भी एक नई टापिक पर - रूह-रूहान हुई।

ब्रह्मा बोले - मुक्ति का गेट कब खोलना है! जब तक मुक्ति का गेट ब्रह्मा नहीं खोलते तब तक अन्य आत्माएं भी मुक्ति में जा नहीं सकती। ब्रह्मा बोले अब चाबी लगावें ?

बाप बोले - उद्घाटन अकेला करना है या बच्चों के साथ! ब्रह्मा बोले - सौतेले और मातेले बच्चों के दु:ख के आलाप, तड़फने के आलाप सुनते-सुनते अब रहम आता है। बाप बोले - बच्चों में से सर्व श्रेष्ठ विजयी रत्न जो साथ-साथ भिन्न-भिन्न स्म्बन्ध और स्वरूप से ब्रह्मा की आत्मा के साथी बनने वाले हैं ऐसे साथी विजयी रतनों की माला तैयार हैं! जिन्हों का आदि से यही संकल्प है कि साथ जिएंगे, साथ मरेंगे - किसी भी भिन्न रूप वा सम्बन्ध में साथ रहेंगे - उन्हीं से किए हुए वायदे के प्रमाण साथियों के बिना चाबी कैसे लगावेंगे!

तो नये वर्ष का नया संकल्प ब्रह्मा का सुना! बाप के इस संकल्प को प्रैक्टिकल में लाने वाले विजयी ग्रुप अब क्या करेंगे! **श्रेष्ठ विजयी रतन ही बाप के इस संकल्प को पूरा करने वाले हैं** - इसलिए इस वर्ष में विशेष रूप से मास्टर आलमाइटी अथार्टी के स्वरूप से सेकेण्ड में मुक्त करने की मशीनरी तीव्र करो। अभी मैजारटी आत्माएं प्रकृति के अल्पकाल के साधनों से, वा आत्मिक शान्ति प्राप्त करने के बने हुए अल्पज्ञ स्थानों से अर्थात परमात्म मिलन मनाने के ठेकेदारों से अब थक गए हैं, निराश हो गए हैं - समझते हैं सत्य कुछ और है - सत्यता की मंजिल की खोज में हैं - प्राप्ति के प्यासे हैं। ऐसी प्यासी आत्माओं को आत्मिक परिचय, परमात्म परिचय की यथार्थ बूँद भी तृप्त आत्मा बना देगी - इसलिए ज्ञान कलष धारण कर प्यासों की प्यास बुझाओ। अमृत कलष सदा साथ रहे। **चलते फिरते सदा अमृत द्वारा अमर बनाते चलो। तब ही ब्रह्मा बाप के साथ-साथ मुक्ति के गेट का उद्घा-टन कर सकेंगे! अभी तो भवनों का उद्घाटन कर रहे हो - अभी विशाल गेट का उद्घाटन करना है।** उसके लिए सदा अमर बनो और अमर बनाओ - अमर भव के वरदानी मूर्त

बनो। अब पुरुषार्थ करने वाली आत्माएं जो अन्तिम अति कमजोर आत्माएं हैं, ऐसी कमजोर आत्माओं में पुरुषार्थ करने की भी हिम्मत नहीं है ऐसी आत्माओं को स्वयं की शक्तियों द्वारा समर्थ बनाकर प्राप्ति कराओ। इसलिए **ज्ञान मूर्त से ज्यादा अभी वरदानी मूर्त का पार्ट चाहिए। सुनने की शक्ति भी नहीं हैं। चलने की हिम्मत नहीं है सिर्फ एक प्यास है कि कुछ मिल जाए - ऐसी अनेक आत्माएं विश्व में भटक रही हें - चलने के पांव अर्थात हिम्मत भी आपको देनी पड़ेगी।** तो हिम्मत का स्टाक जमा है! अमृत कलष सम्पन्न है! अखुट है! अखण्ड है! **क्यू लगावें? स्वयं की क्यू समाप्त की है - अगर स्वयं की क्यू में बिजी होंगे तो अन्य आत्माओं को सम्पन्न कैसे बना-वेंगे! इसलिए इस वर्ष में अपनी क्यू को समाप्त करो। क्यों, क्या, की भाषा चेन्ज करो। एक ही भाषा हो - सर्व प्रति संकल्प से, वाणी से वरदानी भाषा हो - वरदानी मूर्त हो - वरदानों की वर्षा के भाषण हों। जो भी सुनें वह अनुभव करे कि भाषण नहीं लेकिन वरादानों के पुष्पों की वर्षा हो रही है - तब उद्घाटन करेंगे।**

(दीदी जी से) ब्रह्मा को यह संकल्प क्यों उठा - इसका रहस्य समझते हो! ब्रह्मा के संकल्प से सृष्टि रची और ब्रह्मा के संकल्प से ही गेट खुलेगा। अब शंकर कौन हुआ? यह भी गुह्य हहस्य है - जब ब्रह्मा ही विष्णु है तो शंकर कौन? इस पर भी रूह-रूहाण करना।

अभी परमात्म बाम्ब द्वारा धरनी को परिवर्तन करो। इसका सहज साधन है सदा मुख पर वा संकल्प में बापदादा - बापदादा की निरन्तर माला के समान स्मृति हो। सबकी एक ही धुन हो बाप-दादा। संकल्प, कर्म और वाणी में यही अखण्ड धुन हो - जैसे वह अखण्ड धुनी जगाते हैं वैसे यह अखण्ड धुन हो। यही अजपाजाप हो - जब यह अजपाजाप हो जायेगा तो और सब बातें स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। क्योंकि इसमें ही बिजी रहेंगे। फुर्सत ही नहीं होती तो व्यर्थ स्वत: ही समाप्त हो जायेगा। तो अब सुना कि इस वर्ष में क्या करना है - **आज के संकल्प से समय को जानना - सुई तो ब्रह्मा**

ही हैं ना। तो सुई कहाँ तक पहुँची हैं! सूक्ष्मवतन से आगे भी बढ़ेगी ना!
(01/01/1979)

जैसे बाप को निश्चय है कि फल निकलना ही है वैसे स्वयं भी निश्चयबुद्धि रहो। कोई फल जल्दी निकलना कोई थोड़ा देरी से इसलिए इसका भी सोचो नहीं - करते चलो, अभी जल्दी ही ऐसा समय आयेगा जो स्वत: आपके पास इनक्वायरी करने आयेंगे कि यह सन्देश वा सूचना कहाँ से मिली थी। **थोड़ा सा विनाश का ठका होने दो सिर्फ - तो फिर देखो कितनी लम्बी क्यू लग जाती है फिर आप लोग कहेंगे हमको समय नहीं है, अभी वह लोग कहते हैं हमें टाइम नहीं, फिर आप कहेंगे टू लेट।** (14/01/1979)

आप तो बाप को प्रत्यक्ष कराने वाले अर्थात स्वयं द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले हो। बादलों के बीच से कैसे साक्षात्कार होगा? तो साक्षात्कार कब करायेंगे? क्या जब विनाश होगा तब, अभी ही ऐसा बनना पड़ेगा अगर बहुत समय का बादलों को दूर करने का अभ्यास नहीं होगा तो बादल भी उसी समय लास्ट घड़ी आयेंगे। साक्षात्कार के लिए खड़े हों और बादल आ जाएं तो सारा प्रोग्राम ही अपसेट हो जायेगा। (26/11/1979)

काज़ी को छोड़ दो और राज़ी हो जाओ। जब पसन्द कर लिया फिर बीच में किसी को क्यों डालते हो? बीच में डालते हो तो बीच भँवर में आ जाते हो। बचाने की मेहनत फिर भी मियाँ को ही करनी पड़ती है इसलिए विश्व-कल्याण का कार्य रह जाता है। **फिर पूछते हैं विनाश कब होगा? अब बीबियाँ तैयार ही नहीं तो विनाश क्या करे। समझा, विनाश क्यों नहीं हो रहा?** ड्रेंस का परिवर्तन करने नहीं आता तो विश्व को कैसे परिवर्तन करेंगे।
(28/11/1979)

जितना जल्दी विशेष आत्माओं को सम्पर्क में लायेंगे उतना ही जल्दी आवाज़ बुलन्द होगा। जब भारत में आवाज़ निकले तब समझो सेवा की सामप्ति

होगी। एक तरफ आवाज़ बुलन्द होगा दूसरे तरफ हालते खराब होंगी। दोनों का मेल होगा। इसलिए सहज ही अनुभव करेंगे कि हमने क्या किया अब जल्दी जल्दी तैयारी करो। जैसे फारेन में विनाश के साधन बहुत बढ़िया बना रहे हैं ना। वैसे नाम बाला, आवाज़ बुलन्द करने के स्थापना के निमित्त भी आप अच्छे प्लैन बनाओ। अभी सन्देश मिलना रहा हुआ है। इसलिए विनाश का बुलन्द आवाज़ नहीं निकलता वह भी बिचारे सोच में हैं क्या हो रहा है। **स्थापना के कारण विनाश रूका हुआ है।** जैसे विनाश की सामग्री सिर्फ बटन तक रही हुई है, इतनी तैयारी हो गई है, ऐसे स्थापना की तैयारी भी इतनी पावरफुल हो जाए। जो आवे सेकेण्ड में जो प्राप्ति चाहे वह कर ले। संकल्प का बटन दबाना पड़े बस। तब वह भी बटन दबेगा। तो इसकी भी तैयारी करनी पड़े। **संकल्प इतने पावरफुल हों। सिर्फ एक बाप सदा संकल्प में हो तो सेवा भी स्वतः होती रहेगी।** अभी अटेन्शन रखना पड़ता है लेकिन नैचुरल पावरफुल स्टेज बन जाए। तो ऐसे बटन तैयार हैं? टीचर्स क्या समझती हैं? अभी कानफ्रेंस करना माना शस्त्र चलाना, और वह बटन दबाना। अभी तो आपको निमंत्रण देना पड़ता, स्टेज बनानी पड़ती और फिर स्वंय आयेंगे, अभी सुनने के लिए आते हैं फिर लेने के लिए आयेंगे। कुछ दे दो, माँगनी करेंगे, जरा भी दे दो। बटन दबाते जायेंगे और स्टैम्प लगती जायेगी, प्रजा, साहूकार, पहली प्रजा, दूसरी प्रजा। तो अब यह करना पड़ेगा। (27/03/1981)

विनाश काल में विश्व के लिए महान कल्याणकारी, महावरदानी, महादानी, महान पुण्य आत्माओं के स्वरूप में होंगे। (03/04/1981)

अन्तिम काल में आत्माओं के अन्तिम समय में आप सम्पूर्ण आत्माओं द्वारा प्राप्ति के अनुभव और सम्पूर्ण स्वरूप के प्रत्यक्षता का सम्पन्न स्वरूप, यही अन्तिम अनुभव का संस्कार लेकर आत्माएं आधाकल्प के लिए अपने घर में विश्रामी होगीं। कुछ प्रजा बनेंगी कुछ भक्त बनेंगी। इसलिए अन्त काल जो अन्त मती सो द्वापर में भक्तपन की गति में अर्थात् श्रेष्ठ भक्त माला के शिरोमणि

आत्मायें बन जायेंगी। कोई विश्व अधिकारी के रूप में देखेंगे, कोई प्रजा बनने के संस्कार कारण आपके राज्य में प्रजा बन जायेंगी। काई अति पूज्य स्वरूप में देखेंगे तो भक्त आत्मायें बन जायेंगे। ऐसी श्रेष्ठ स्थिति जिस स्थिति द्वारा इतनी सिद्धि को पायेंगे। (04/10/1981)

प्रैक्टिस करो आवाज में कम आने की तो आवाज से परे की स्थिति स्वत: ही आकर्षण करेगी। पहला गेट तो आवाज से परे जाने का खुलता है ना। तो गेट खोलने का उद्‌घाटन कब करेंगे? और तो उद्‌घाटन बहुत करते हो ना - मधुबन में? **इसका उद्‌घाटन बापदादा अकेले करेंगे या साथ मे करेंगे?** तो तैयार हो? (04/10/1981)

वे लोग आवाज की गति से भी तेज जाना चाहते हैं। सब कार्य सेकेण्ड की गति से भी आगे करना चाहते हैं। इतने सारे विश्व का विनाश कितने थोड़े समय में करने के लिए तैयार हो गये है। तो स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्मायें सेकेण्ड में करना, सेकेण्ड में पाना, ऐसी तीव्र गति के अनुभवी नहीं होंगे। (03/11/1981)

सदा यह स्मृति में रखो। लेकिन यह सारा कार्य सहज सम्पन्न कैसे होगा? जैसे आपकी रचना साइंस वाले विस्तार को सार में समा रहे हैं। अति सूक्ष्म और शक्तिशाली साधन बना रहे हैं। जिससे समय, सम्पत्ति और शस्त्र कम से कम खर्चा हो। पहले विनाश के कार्य में कितनी बड़ी सेना, कितने शस्त्र और कितना समय लगता था। और अब विस्तार को सार में लाया है ना! ऐसे आप मास्टर रचयिता बन स्थापना के कार्य में ऐसे ही सूक्ष्म द्वारा, निमित्त स्थूल साधन कार्य में लगाओ। नहीं तो स्थूल साधनों के विस्तार में सूक्ष्म शक्ति गुप्त हो जाती है। स्थूल साधन का विस्तार, जैसे वृक्ष का विस्तार बीज को छुपा देता है, वैसे सूक्ष्म शक्ति की परसेन्टेज गुप्त हो जाती है। **आप पूर्वज आतमाओं की अलौकिकता - 'सूक्ष्म शक्ति' है। जो सब अनुभव करें कि पूर्वजों द्वारा कोई विशेष शक्ति उत्पन्न हो रही है। वंशावली आप आत्माओं द्वारा कोई**

नवीनता चाहती है। साधनों की शक्ति, वाणी की शक्ति यह तो सबके पास है। लेकिन अप्राप्त शक्ति कौन-सी है? वह है श्रेष्ठ संकल्प की शक्ति, शुभ वृति की शक्ति। स्नेह और सहयोग की दृष्टि। यह किसके पास नहीं है। (28/11/1981)

आजकल के समय अनुसार जो बहुत जन्मों के हिसाब-किताब अर्थात् कर्मभोग हैं वह समाप्त भी जरुर होने हैं। कर्मभोग का हिसाब खत्म करने के लिए स्थूल दवाई और कर्मयोगी बनाने के लिए यह रुहानी दवाई। **अभी सब भोग कर खत्म करेंगे। चाहे मंसा द्वारा, चाहे शरीर द्वारा। सभी आत्मायें मुक्तिधाम में जायेंगी ना।** अभी न रोगी रहेंगे, न डाक्टर रहेंगे। इसकी प्रैक्टिस अन्त में भी होगी। जो डाक्टर होंगे लेकिन कुछ कर नहीं सकेंगे। इतने पेशन्ट होंगे। बस उस समय सिर्फ अपनी दृष्टि द्वारा, वायब्रेशन द्वारा, उनको टैम्प्रेरी वरदान द्वारा शान्ति दे सकते हो। **मरेंगे भी बहुत। मरने वालों के लिए जलाने का ही समय नहीं होगा। क्योंकि अति में जाना है ना अभी। अति में जाकर अन्त हो जायेगी।** अभी के समाचारों के अनुसार भी देखों कोई नई बीमारी फैलती है तो कितनी फास्ट फैलती है। जब तक डाक्टर उस नई बीमारी की दवाई निकाले- तब तक कई खत्म हो जाते हैं। क्योंकि अति में जा रहा है। और जब ऐसा हो तब तो डाक्टर भी समझें कि हमसे भी कोई श्रेष्ठ चीज़ है। अभी तो अभिमान के कारण कहते हैं, आत्मा वगैरा कुछ नहीं है। डाक्टरी ही सब कुछ है। फिर वह भी अनुभव करेंगे। **जब कुछ भी कन्ट्रोल नहीं कर पायेंगे तो कहां नजर जायेगी?** अभी तो नई-नई बीमारियां कई आने वाली हैं। लेकिन यह नई बीमारियां नया परिवर्तन लायेगी।

आप लोग तो बहुत-बहुत भाग्यवान आत्मायें हो जो विनाश के पहले अपना अधिकार पा लिया। और सब चिल्लायेंगे, हाय हमने कुछ नहीं पाया, और आप बापदादा के साथ दिलतख्त नशीन होकर उन्हों को वरदान देंगे। तो कितने भाग्यवान हो। सदा ही खुश रहते हो ना? सदा इसी

मस्ती में झूमते हुए सभी पेशन्ट को भी सदा खुशी के झूले में झुलाओ। फिर आपको ही भगवान का ही अवतार मानने लग जायेंगे लेकिन आप फिर इशारा करेंगे यथार्थ की तरफ। जब ऐसे भावना में आवें तब इशारा कर सकेंगे ना।
(29/12/1981)

साइंस, साइलेंस की शक्ति के आगे झुकेगी जरुर। अभी बड़े-बड़े साइंस वाले भी नाउम्मीद होने लग गये हैं। कहां जायेंगे? जहां आप साइलेंस वालो की किरणें दिखाई देंगी वहां ही नजर जायेगी। आपके एटम से ही उन्होंने एटम बनाया है। कापी तो आपही कि की है। अगर आत्मिक शक्ति नहीं होते तो यह एटामिक बाम्बस बनाने वाला कौन?

जब चारों ओर अधंकार छा जायेगा तब आपकी किरणें अधंकार में स्पष्ट दिखाई देंगी। नालेज की लाइट, गुणों की लाइट, शक्तियों की लाइट, सब लाइट्स, लाइट हाउस का कार्य करेंगी। (29/12/1981)

हरेक अगर बाप को प्रत्यक्ष करने के लिए लाइट हाउस हो जाए तो 'व्हाइट हाउस' और 'लाइट हाउस' कांट्रास्ट हो जायेगा। वह विनाशकारी और यह स्थापना वाले। अभी कमाल करके दिखाओ। विशेष आत्माओं को निमित्त तो बनाया है, अभी और सम्पर्क से सम्बन्ध में लाना है। ऐसा समीप सम्बन्ध में लाओ जो उन्हों के मुख द्वारा बाप की महिमा सारे विश्व में हो जाए।
(04/01/1982)

जैसे अमेरिका में विनाशकारियों के विनाश की स्पीड बढ़ती जा रही है। ऐसे स्थापना के निमित्त बच्चों की स्पीड भी तीव्र है? वे तो बहुत फास्ट गति से विनाश के लिए तैयार हैं। ऐसे आप सभी भी स्थापना के कार्य में इतने एवररेडी तीव्रगति से जा रहे हो? उन्हों की स्पीड तेज है या आपकी तेज है? वो १५ सेकण्ड में विनाश के लिए तैयार हैं और आप - एक सेकण्ड में? क्या गति है? सेकण्ड में स्थापना का कार्य अर्थात् सेकण्ड में दृष्टि दी और सृष्टि बन गई - ऐसी स्पीड है? तो सदा स्थापना के निमित्त आत्माओं को यह स्मृति रखनी चाहिए कि

हमारी गति विनाशकारियों से तेज हो क्योंकि पुरानी दुनिया के विनाश का कनेक्शन नई दुनिया की स्थापना के साथ-साथ है। पहले स्थापना होनी है या विनाश? स्थापना की गति पहले तेज़ होनी चाहिए ना! स्थापना की गति तेज़ करने का विशेष आधार है - सदा अपने को पावरफुल स्टेज पर रखो। नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल, स्टेज पर रखो। नालेजफुल के साथ-साथ पावरफुल दोनों कम्बा-इन्ड हो। तब स्थापना का कार्य तीव्रगति से होगा।
आपके सेन्टर द्वारा पहले-पहले आत्मिक बाम्ब चलेगा ना? उससे क्या होगा? सभी बाप के परिचय को जान लेंगे। जैसे उस बाम्ब से विनाश होता है ना! तो इस आत्मिक बाम्ब से अंधकार का विनाश हो जायेगा। तो यह बाम्ब छोड़ने की कौन-सी तारीख है? वह गवर्मेन्ट भी डेट बतलाती है ना कि इस तारीख को रिहर्सल होगी, तो आपके रिहर्सल की डेट कब होगी? (14/01/1982)

यू.के. ग्रुप से :- रानी का महल देखते हुए अपने महल याद आते हैं? आपके महल कितने सुन्दर होंगे, जानते हो ना! ऐसा आपका राज्य है जो अब तक कोई ऐसा राज्य न हुआ है। न होगा। ऐसा नशा है? **भल अभी तो सब विनाश हो जायेगा। लेकिन आप तो भारत में आ जायेंगे ना। यह तो पक्का है ना! जहाँ भी ब्राहमण आत्माओं ने इतनी सेवा की है वह पिकनिक स्थान ज़रूर रहेंगे। आदमशुमारी कम होगी, इतने विस्तार की आवश्यकता नहीं होगी।** (18/02/1983)

सभी राइट हैण्ड्स बनना, लेफ्ट हैण्ड नहीं। अगर इतने सब राइट हैण्ड हो जाएँ तो विनाश हुआ कि हुआ। इतनी शक्तियाँ विजय का झण्डा लेकर आ जाएं तो रावण राज्य का समय समाप्त हो जाए। (17/05/1983)

विदेश की भी बहुत महिमा है। विदेश से भी विशेष प्रत्यक्षता के नगाड़े देश तक आयेंगे। विदेश नहीं होता तो देश में प्रत्यक्षता कैसे होती। इसलिए विदेश का भी महत्व है। विदेश की आवाज़ को सुन भारत वाले

जगेंगे। प्रत्यक्षता का आवाज निकलने का स्थान तो विदेश ही हुआ ना। तो यह है विदेश का महत्त्व। (21/12/1983)

इस ग्रुप में किसी को भी कहें कि यहाँ बैठ जाओ तो एवररेडी हो? कोई का पीछे का कोई बन्धन तो नहीं है। ऐसे भी होगा, जब समय आयेगा सभी को टिकेट कैन्सिल कराके यहाँ बिठा देंगे। ऐसे समय पर कोई सैलवेशन भी नहीं लेंगे। सभी को याद है - जब ब्रह्मा बाप अव्यक्त हुए तो वह 4 दिन कैसे बिताये? मकान बड़ा था? खाना बनाया था? फिर 4 दिन कैसे बीता था! विनाश के दिन भी ऐसे ही बीत जायेंगे। उस समय लव-लीन थे ना। ऐसे ही लवलीन स्थिति में समाप्ति होगी। फिर यहाँ की पहाड़ियों पर रहकर तपस्या करेंगे। तीसरी ऑख से सारा विनाश देखेंगे। ऐसे निश्चिंत हो ना। कोई चिंता नहीं। न मकान की, न परि-वार की, न काम की। सदा निश्चिंत क्या होगा यह क्वेश्चन नहीं। जो होगा अच्छा होगा। इसको कहा जाता है ‘निश्चिंत’। सेन्टर का मकान याद आ जाए, बैंक बैलन्स याद आ जाए... कुछ भी याद न आये। क्योंकि आपका सच्चा धन है ना। चाहे मकान में लगा है, चाहे बैंक में रहा हुआ है। लेकिन आपका तो पदमगुणा होकर आपको मिलेगा। आपने तो इनश्योर कर लिया ना। मिट्टी, मिट्टी हो जायेगी और आपका हक आपको पदमगुणा होकर मिल जायेगा और क्या चाहिए! सच्चा धन कभी भी वेस्ट नहीं जा सकता! समझा! ऐसे सदा निश्चिंत रहो। पता नहीं पीछे सेन्टर का क्या होगा? घर का क्या होगा? यह क्वेश्चन नहीं। सफल हुआ ही पड़ा है। सफल होगा या नहीं यह क्वेश्चन नहीं। पहले से ही विल कर दिया है ना। जैसे कोई विल करके जाता है पहले से ही निश्चिन्त होता है ना। तो आप सबने अपना हर श्वांस, संकल्प, सेकण्ड, सम्पत्ति शरीर सब बिल कर दिया है ना। विल की हुई चीज कभी भी स्व के प्रति यूज नहीं कर सकते। (20/01/1984)

विशेष दो बातें देखी। अज्ञानी बच्चे भारत में 'सीट' लेने में वा सीट दिलाने में लगे हुए हैं। दिन रात स्वप्न में भी सीट ही नजर आती और ब्राह्मण बच्चे 'सेट' होने में लगे हुए हैं। सीट मिली हुई है लेकिन सेट हो रहे हैं। विदेश में अपने ही बनाये हुए विनाशकारी शक्ति से बचने के साधन ढूँढने में लगे हुए हैं। **मैजारटी की जीवन, जीवन नहीं लेकिन क्वेश्चन मार्क बन गई है। अज्ञानी बचाव में लगे हुए हैं और ज्ञानी प्रत्यक्षता का झण्डा लहराने में लगे हुए हैं। यह है विश्व का हाल चाल। अब परेशानियों से बचाओ। भिन्न-भिन्न परेशानियों में भटकती हुई आत्माओं को शान्ति का ठिकाना दो।**

(28/11/1984)

अभी विश्व में और भी विकारों की आग तेज़ होनी है - जैसे आग लगने पर मनुष्य चिल्लाता है ना। शीतलता का सहारा ढूँढता है। ऐसे यह मनुष्य आत्मायें, आप शीतल आत्माओं के पास तड़पती हुई आयेंगी। ज़रा-सा शीतलता के छींटे भी लगाओ। ऐसे चिल्लायेंगी। **एक तरफ़ विनाश की आग, दूसरे तरफ़ विकारों की आग, तीसरे तरफ़ देह और देह के संबंध, पदार्थ के लगाव की आग, चौथे तरफ़ पश्चाताप की आग। चारों ओर आग ही आग दिखाई देगी। तो ऐसे समय पर आप शीतलता की शक्ति वाली शीतलाओं के पास भागते हुए आयेंगे। सेकण्ड के लिए भी शीतल करो।** ऐसे समय पर इतनी शीतलता की शक्ति स्वयं में जमा हो जो चारों ओर की आग का स्वयं में सेक न लग जाए। चारों तरफ़ की आग मिटाने वाले शीतलता का वरदान देने वाले शीतला बन जाओ। **अगर ज़रा भी चारों प्रकार की आग में से किसी का भी अंश मात्र रहा हुआ होगा तो चारों ओर की आग अंश मात्र रही हुई आग को पकड़ लेगी।** जैसे आग, आग को पकड़ लेती है ना। तो यह चेक करो।

विनाश ज्वाला की आग्नि से बचने का साधन - निर्भयता की शक्ति है। निर्भयता, विनाश ज्वाला के प्रभाव से डगमग नहीं करेगी। हलचल में नहीं लाएगी। निर्भयता के आधार से विनाश ज्वाला में भयभीत आत्माओं को

शीतलता की शक्ति देंगे। आत्मा भय की अग्नि से बच शीतलता के कारण खुशी में नाचेगी। विनाश देखते भी स्थापना के नजारे देखेंगे। उनके नयनों में एक आँख में मुक्ति-स्वीट होम दूसरी आँख में जीवन मुक्ति अर्थात् स्वर्ग समाया हुआ होगा। उसको अपना घर, अपना राज्य ही दिखाई देगा। **लोग चिल्लायेंगे हाय गया, हाय मरा और आप कहेंगे अपने मीठे घर में, अपने मीठे राज्य में गया। नथिंग न्यू। यह घुँघरू पहनेंगे। हमारा घर, हमारा राज्य - इस खुशी में नाचते-गाते साथ चलेंगे। वह चिल्लायेंगे और आप साथ चलेंगे।** सुनने में ही सबको खुशी हो रही है तो उस समय कितनी खुशी में होंगे! तो चारों ही आग से शीतल हो गये हो ना? सुनाया ना - विनाश ज्वाला से बचने का साधन है - 'निर्भयता'।

ऐसे ही **विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है -** अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा १६ कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो **अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।**

ऐसे ही तीसरी देह, देह के सम्बन्ध और पदार्थ के ममता की आग - इस अग्नि से बचने का साधन है - बाप को संसार बनाओ। बाप ही संसार है तो बाकी सब असार हो जायेगा। लेकिन करते क्या हैं वह फिर दूसरे दिन सुनायेंगे। बाप ही संसार है यह याद है तो न देह, न सम्बन्ध, न पदार्थ रहेगा। सब समाप्त।

चौथी बात-पश्चाताप की आग- इसका सहज साधन है सर्व प्राप्ति स्वरूप बनना। अप्राप्ति पश्चाताप कराती है। प्राप्ति पश्चाताप को मिटाती है। अब हर प्राप्ति को सामने रख चेक करो। किसी भी प्राप्ति का अनुभव करने में रह तो नहीं गये हैं। प्राप्तियों की लिस्ट तो आती हैं ना। अप्राप्ति समाप्त अर्थात् पश्चाताप समाप्त। (21/02/1985)

ऐसी विश्व की आत्मायें जो दुख अशान्ति के समाचार सुन सुन, विनाश के भय में भयभीत हो, दिलशिकस्त हो गई हैं, नाउम्मींद हो गई हैं ऐसे विश्व की आत्माओं को इस गोल्डन जुबली द्वारा शुभ उम्मीदों का सूर्य उदय होने का अनुभव कराओ। जैसे विनाश की लहर है वैसे सतयुगी सृष्टि के स्थापना की खुशखबरी की लहर चारों ओर फैलाओ। सभी के दिल में यह उम्मीद का सितारा चमकाओ। क्या होगा, क्या होगा के बजाए समझें कि 'अब यह होगा'। ऐसी लहर फैलाओ। गोल्डन जुबली गोल्डन एज के आने की खुशखबरी का साधन है। जैसे आप बच्चों को दु:खधाम देखते हुए भी सुखधाम सदा स्वत: ही स्मृति में रहता है और सुखधाम की स्मृति दु:खधाम भुला देती है। और सुखधाम वा शन्तिधाम जाने की तैयारियों में खोये हुए रहते हो। जाना है और सुखधाम में आना है। जाना है और आना है - यह स्मृति समर्थ भी बना रही है और खुशी-खुशी से सेवा के निमित्त भी बना रही है। अभी लोग ऐसे दु:ख की खबरें बहुत सुन चुके हैं। अब इस खुशखबरी द्वारा दु:खधाम से सुखधाम जाने के लिए खुशी-खुशी से तैयार करो उन्हों में भी यह लहर फैल जाए कि हमें भी जाना है। नाउम्मीद वालों को उम्मीद दिलाओ। दिलशिकस्त आत्माओं को खुशखबरी सुनाओ। (09/03/1985)

आज बापदादा रूहानी सेनापति के रूप में अपनी रूहानी सेना को देख रहे हैं। इस रूहानी सेना में कौन से, कौन से महावीर हैं, कौन से शक्तिशाली शस्त्र धारण किये हुए हैं। जैसे जिस्मानी शस्त्रधारी दिन प्रतिदिन अति सूक्ष्म और तीव्रगति के शक्ति सम्पन्न साधन बनाते जाते हैं, ऐसे रूहानी सेना अति सूक्ष्म शक्तिशाली शस्त्रधारी बनी है? जैसे विनाशकारी आत्माओं ने एक स्थान पर बैठे हुए कितने माइल दूर विनाशकारी रेज़िज़ द्वारा विनाश कराने के लिए साधन बना लिए हैं। वहाँ जाने की भी आवश्यकता नहीं। दूर बैठे निशाना लगा सकते हैं। ऐसे रूहानी सेना 'स्थापनाकारी' सेना है। वह विनाशकारी, आप स्थापनाकारी हो। वह विनाश के प्लैन सोचते आप नई रचना के, विश्व-परिवर्तन के प्लैन सोचते। स्थापनाकारी सेना, ऐसे तीव्रगति के रूहानी साधन धारण कर लिए है?

एक स्थान पर बैठे जहाँ चाहो वहाँ रूहानी याद की रेज़िज़ (किरणों) द्वारा किसी भी आत्मा को टच कर सकते हो। परिवर्तन शक्ति इतनी तीव्रगति की सेवा करने लिए तैयार है? नालेज अर्थात् शक्ति सभी को प्राप्त हो रही है ना। नालेज की शक्ति द्वारा ऐसे शक्तिशाली शस्त्रधारी बने हो? (21/03/1985)

आज अमेरिका वालों का टर्न है! अमेरिका वालों को बाप कहते हैं - 'आ मेरे'। अमेरिका वाले भी कहते हैं, 'आ मेरे'। यह विशेषता है न। वृक्ष के चित्र में आदि से विशेष शक्ति के रूप में अमेरिका दिखाया हुआ है। जब से स्थापना हुई है तो अमेरिका को बाप ने याद किया है। विशेष पार्ट है ना। जैसे एक विनाश की शक्ति श्रेष्ठ है - दूसरी क्या विशेषता है? विशेषतायें तो स्थान की हैं ही। लेकिन **अमेरिका की विशेषता यह भी है - एक तरफ विनाश कि तैयारियाँ भी ज़्यादा हैं। दूसरी तरफ फिर विनाश को समाप्त करने की यू.एन. भी वहाँ है।** एक तरफ विनाश की शक्ति। दूसरे तरफ है सभी को मिलाने की शक्ति। तो डबल शक्ति हो गई ना। वहाँ सभी को मिलाने के लिए प्रयत्न करते हैं, तो **वहाँ से ही फिर यह रूहानी मिलन का भी आवाज बुलन्द होगा।** वह लोग तो अपनी रीति से सभी को मिलाकर शांति का प्रयत्न करते हैं लेकिन यथार्थ रीति से मिलाना तो आप लोगों का ही कर्त्तव्य है ना। वह मिलाने की कोशिश करते भी हैं लेकिन कर नहीं पाते हैं। **वास्तव में सभी धर्म की आत्माओं को एक परिवार में लाना यह है - आप ब्राह्मणों का वास्तविक कार्य। यह विशेष करना है।** जैसे विनाश की शक्ति वहाँ श्रेष्ठ है ऐसे ही स्थापना की शक्ति का आवाज बुलन्द हो। विनाश और स्थापना साथ-साथ दोनों झण्डे लहरावें। एक साइंस का झण्डा और एक साइलेन्स का। साइन्स की शक्ति का प्रभाव और साइलेन्स की शक्ति का प्रभाव दोनों जब प्रत्यक्ष हों तब कहेंगे प्रत्यक्षता का झण्डा लहराना। (04/03/1986)

चेक करो - सम्पन्न और संपूर्ण का जो गायन है, वह कहाँ तक बने हैं? अगर ड्रामा अनुसार आज भी इस शरीर का हिसाब समाप्त हो जाए तो कितनी

परसेन्टेज में पास होंगे? वा ड्रामा को कहेंगे - थोड़ा समय ठहरो! यह तो सोचकर नहीं बैठे हो कि छोटे-छोटे तो जाने वाले हैं ही नहीं? एवररेडी का अर्थ क्या है? समय का इंतजार तो नहीं करते कि अभी 10-11 वर्ष तो हैं? बहुत करके 2000 का हिसाब सोचते हैं! लेकिन **सृष्टि के विनाश की बात अलग है, अपने को एवररेडी रखना अलग बात है। इसलिए यह उससे नहीं मिलाना।** भिन्न-भिन्न आत्माओं का भिन्न-भिन्न पार्ट है। इसलिए यह नहीं सोचो कि मेरा एडवांस पार्टी में तो नहीं है या मेरा तो विनाश के बाद भी पार्ट है! कोई आत्माओं का है लेकिन मैं एवररेडी रहूँ। नहीं तो अलबेलेपन का अंश प्रकट हो जायेगा। एवररेडी रहो, फिर चाहे 20 वर्ष जिंदा रहो कोई हर्जा नहीं। लेकिन ऐसे आधार पर नहीं रहना। इसको कहते हैं - 'होलीहंस'। (06/01/1990)

जब साइन्स के साधन तीव्र गति के हो रहे हैं, एक सेकेण्ड में क्या नहीं कर लेते हैं! विनाश के साधन तीव्र गति के तरफ जा रहे हैं तो स्थापना के साइलेन्स के शक्तिशाली साधन क्या नहीं कर सकते! अभी तो प्रकृति आप मालिकों का आवाहन कर रही है। आप लोग उनको आर्डर नहीं करते तो प्रकृति कितनी धमाल कर रही है! **मालिक तैयार हो जाओ तो प्रकृति आपका स्वागत करे।** (25/02/1991)

वह फिर कहते कि समय श्रेष्ठ है, पुरुषोत्तम युग है, आत्मा परमात्मा के मेले का युग है यह सब मानते हैं फिर क्या कहते? अभी थोड़ा समय तो है ही, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह तो स्थापना के समय से कहते आये हैं कि विनाश होना है। दूसरी दीवाली नहीं आनी है। तो विनाश की बाते तो स्थापना के समय से चल रही हैं। विनाश कहते-कहते कितने वर्ष हो गये। अभी भी पता नहीं विनाश कब हो! थोड़ा सा अलबेले के, आलस्य के, ढीले पुरुषार्थ के डनलप के तकियें में आराम कर लें। समय पर ठीक हो जायेंगे। बाप को भी यह पक्का कराते हैं कि आप देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे। लेकिन बापदादा ऐसे

बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं हैं। लेकिन समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ में यह पुरुषार्थ की मार्क्स जमा होगी और अगर समय पर किया तो समय को मार्क्स मिलेगी आपको नहीं मिलेगी। तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेले या आलस्य के नींद के कारण धोखा खा लेंगे। यह भी कुम्भ्ज्ञकरण के नींद का अंश है। बड़ा कुम्भकरण नहीं है, छोटा है। फिर उसको क्या हुआ? अपने को बचा सका? नहीं बच सका ना! तो अन्त समय में भी अपने को फुल पास के योग्य नहीं बना सकेंगे। समझा! (15/04/1992)

कल विनाश हो जाए-इतने सम्पन्न बने हो? एवररेडी बनना ही सेफ्टी का साधन है। अगर समय मिलता है तो संगमयुग की मौज मनाओ लेकिन रहो एवररेडी। क्योंकि फाइनल विनाश की डेट कभी भी पहले मालूम नहीं पड़ेगी, अचानक होना है। एवररेडी नहीं होंगे तो धोखा हो जायेगा। इसलिए एवररेडी बनो। सदा ये याद रखो कि हम और बाप सदा साथ हैं। तो जैसे बाप सम्पन्न है वैसे साथ रहने वाले भी सम्पन्न हो जायेंगे। जब साथ का अनुभव करेंगे तो निरन्तर योगी सहज बन जायेंगे। सदा साथ हैं, साथ रहेंगे और स्वीट होम में साथ चलेंगे। जो कम्पैनियन होंगे वे साथ चलेंगे और बराती होंगे, देखने वाले होंगे तो पीछे-पीछे चलेंगे। समान बनने वाले ही साथ चलेंगे। (09/01/1993)

गायन तो है अप्राप्त नहीं कोई वस्तु। ये अब का गायन है या विनाश के समय का? विनाश के समय सम्पन्न हो जायेंगे कि अभी होना है?

मैक्सिकों वालों की भी कमाल है। वहाँ के मनी की हालत तो खराब है लेकिन मैक्सिको के ब्राह्मणों की हालत सबसे अच्छी है। बेफिक्र बादशाह हैं। देश की हालत तो होनी ही है लेकिन वो कलियुग की हालत है और आप सभी

संगमयुग पर बैठे हो। इसीलिये मैक्सिको वाले साक्षी दृष्टा बन हर दृश्य को देखने वाले हैं। हलचल में आने वाले नहीं, लेकिन साक्षीपन की सीट पर दृष्टा बन खेल देख रहे हैं और खेल में हर्षित हो रहे हैं। नीचे-ऊपर होने के प्रभाव से न्यारे और प्यारे। **अच्छा है, देश की हालत लोगों को हिलाती है तो जब हिलते हैं ना तो और ही स्प्रिचुअलिटी की तरफ अटेन्शन जाता है।** वैराग्य की धरनी तैयार होती है और जितनी वैराग्य की धरनी तैयार होती है उतना बीज फल जल्दी देता है। (16/03/1995)

कई बच्चे बार-बार पूछते हैं, चाहे निमित्त बच्चों से या रूहरिहान में बापदादा से एक ही क्वेश्चन करते हैं, बाबा विनाश की डेट बता दो। सभी का क्वेश्चन है ना? अच्छा बापदादा कहते हैं डेट बता देते हैं - चलो दो हजार में पूरा होगा तो क्या करेंगे? यह कोई डेट नहीं दे रहे हैं, मिसअन्डरस्टैण्ड नहीं करना। बापदादा पूछ रहे हैं कि समझो २ हजार तक आपको बताते हैं तो क्या करेंगे? अलबेले बनेगे या तीव्र पुरूषार्थी बनेंगे? तीव्र पुरूषार्थी बनेंगे! और बापदादा कहते हैं कि इस वर्ष में हलचल होगी तो फिर क्या करेंगे? और तीव्र पुरुषार्थ कर लेंगे? या थोड़ा-थोड़ा डेट कानसेस हो जायेंगे, गिनती करते रहेंगे कि इतना समय पूरा हुआ, एक मास पूरा हुआ, एक वर्ष पूरा हुआ, बाकी इतने मास हैं! ..... तो डेट कानसेस बनेंगे या सोल कानसेस बनेंगे? क्या करेंगे? अलबेले नहीं बनेंगे? यह तो नहीं सोचेंगे कि अभी तो ४ वर्ष पड़े हैं? क्या हुआ, लास्ट वर्ष में कर लेंगे - ऐसे अलबेले नहीं बनेंगे या थोड़ा-थोड़ा बन जायेंगे? **आप नहीं भी बनेंगे तो माया सुन रही है, वह ऐसी बातें आपके आगे लायेगी जो अलबेलापन, आलस्य बीच-बीच में आयेगा, फिर क्या करेंगे? इसीलिए बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि डेट कानसेस नहीं बनो लेकिन हर समय अन्तिम घड़ी है, इतना हर घड़ी में एवररेडी रहो।** अच्छा मानों बापदादा कहते हैं २ हजार के बाद होगा, चलो आपने मान लिया, रीयल नहीं है लेकिन मान लिया तो आप दो हजार में सम्पूर्ण बनेंगे और दूसरों को कब बना-येंगे? सतयुग में बनायेंगे क्या? बनाने वाले थोड़े हैं और बनने वाले बहुत हैं, उन्हों के

लिए भी समय चाहिए या नहीं? अगली सीजन में भी पूछा था कि कम से कम सतयुग आदि के ९ लाख बने हैं? नहीं बने हैं तो विनाश कैसे हो? किस पर राज्य करेंगे? पुरानी आत्माओं के ऊपर राज्य करेंगे? नई आत्मायें तो तैयार हुई नहीं और विनाश हो जाए तो क्या करेंगे? इसलिए बापदादा ने यह काम अपने बच्चे जो ज्योतिषी हैं ना, उन्हों के ऊपर ही रखा है। जो ज्योतिषी कर सकते हैं, वह बाप क्यों करेगा! फिर भी बाप के बच्चे हैं, उन्हों को कमाने दो। उन्हों की कमाई का साधन यही है। अगर किसको बहुत जल्दी हो तो उन बच्चों से पूछो। बाप नहीं बतायेगा। (31/12/1996)

बाप यही चाहते हैं कि मेरा हर एक बच्चा अपनी मूर्त से बाप की सीरत दिखायें। सूरत भिन्न-भिन्न हो लेकिन सबकी सूरत से बाप की सीरत दिखाई दे। **जो भी देखे, जो भी संबंध में आये - वह आपको देखकर आपको भूल जाये, लेकिन आप में बाप दिखाई दे तब ही समय की समाप्ति होगी।** सबके दिल से यह आवाज निकले हमारा बाप आ गया है, मेरा बाप है। ब्रह्माकुमारियों का बाप नहीं, मेरा बाप है। जब सभी के दिलों से आवाज निकले कि मेरा बाप है, तब ही यह आवाज चारों ओर नगाड़े के माफिक गूँजेगा। जो भी सांइस के साधन हैं, उन साधनों में यह नगाड़ा बजता रहेगा - मेरा बाप आ गया। अभी जो भी कर रहे हो, बहुत अच्छा किया है और कर रहे हो। लेकिन अभी सबका इकट्ठा नगाड़ा बजना है। जहाँ भी सुनेंगे, एक ही आवाज सुनेंगे। आने वाले आ गये - इसको कहा जाता है बाप की स्पष्ट प्रत्यक्षता। अभी नाम प्रसिद्ध हुआ है। पहला कदम नाम प्रत्यक्ष हुआ है कि ब्रह्माकुमारियां - ब्रह्माकुमार अच्छा काम कर रहे हैं। विद्यालय वा कार्य की, नॉलेज की अभी महिमा करते हैं, खुश होते हैं। यह भी समझते हैं कि ऐसा कार्य और कोई कर नहीं सकता, इतने तक पहुँचे हैं। यह बात स्पष्ट हुई है, चारों ओर इस बात की महिमा है। लेकिन **इस बात का अभी स्पष्टीकरण नहीं हुआ है कि बापदादा आ गये हैं। अभी थोड़ा-थोड़ा पर्दा खुलने लगा है लेकिन स्पष्ट नहीं है।** जानते भी हैं कि इन्हों का बैकबोन कोई अथॉरिटी है लेकिन वही बापदादा है और हमें भी बाप से

वर्सा लेना है, यह दीवार अभी उमंग-उत्साह में आगे आ रही है, वो अभी होना है। एक कदम उठाते हैं, वो एक कदम है - सहयोग का। एक कदम उठने लगा है, सहयोग देने की प्रेरणा अन्दर आने लगी है, अभी दूसरा कदम है - स्वयं वर्सा लेने की उमंग में आये। जब दोनों ही कदम मिल जायेंगे तो चारों ओर बाजे बजेंगे। कौन से बाजे ? - मेरा बाबा। तेरा बाबा नहीं, मेरा बाबा। जैसे कार्य की महिमा करते हैं, ऐसे करन-करावनहार बाप की महिमा झूम-झूम कर गायें। होने वाला ही है। आपको भी यह नज़ारा आंखों के समाने दिल में, दिमाग में आ रहा है ना! क्योंकि बाप और दादा आये हैं - सब बच्चों को वर्सा देने के लिए। चाहे मुक्ति का, चाहे जीवनमुक्ति का, लेकिन वर्सा मिलना जरूर है। कोई भी वंचित नहीं रहेगा क्योंकि बाप बेहद का मालिक है, बेहद का बाप है। तो बेहद को वर्सा लेना ही है। भल योगबल से अपने जन्म-जन्म के पाप नहीं भी काट सकें लेकिन सिर्फ इतना भी जान लिया कि बाप आये हैं, तो कुछ न कुछ पहचान से वर्से के अधिकारी बन ही जायेंगे। तो जैसे बाप को बेहद का वर्सा देने का संकल्प है और निश्चित होना ही है। ऐसे आप सबके दिल में ये शुभ भावना, शुभ कामना उत्पन्न होती है कि हमारे सब भाई-बहन बेहद के वर्से के अधिकारी बन जायें ? तो ये शुभ भावना और शुभ कामना कब तक प्रत्यक्ष रूप में करेंगे ? उसकी डेट पहले से अपने दिल में फिक्स करो, संगठन से पहले दिल में करो फिर संगठन में करो तो विनाश की डेट आपेही स्पष्ट हो जायेगी, उसकी चिन्ता नहीं करो। **रहम आता है या इसी मौज में रहते हो कि हम तो अधिकारी बन गये ?** मौज में रहो, यह तो बहुत अच्छा है लेकिन रहमदिल बाप के बच्चे अभी बेहद पर रहम करो। जब दूसरे पर रहम आयेगा तो अपने ऊपर रहम पहले आयेगा।

(18/01/1997)

ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय तो पड़ा है, इतने में विनाश तो होना नहीं है, यह नहीं सोचना। **विनाश होना है अचानक। पूछकर नहीं आयेगा कि हाँ तैयार हो ! सब अचानक होना है।** आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बनें ? अचानक ही सन्देश मिला, प्रदर्शनी देखी, सम्पर्क-सम्बन्ध हुआ बदल गये। क्या

सोचा था कि इस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना! तो परिवर्तन भी अचानक होना है। **आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेगी, सोचेंगे हमने तो दो हजार सोचा था - वह भी पूरा हो गया, अभी तो थोड़ा रेस्ट कर लो।** पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में यह तो चलता ही है, यह तो होता ही है ...., **ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा,** फिर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! **इसलिए पहले ही सुना देते हैं - अलबेले कभी भी किसी भी बात में नहीं बनना। चार ही सबजेक्ट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी आओ, अभी साथ निभाओ, अभी थोड़ी शक्ति दे दो, उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भण्डार हैं, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपाल मदद नहीं करता।**

(23/02/1997)

अभी सिर्फ ब्रह्मा बाप आप बच्चों का इन्तज़ार कर रहा है। **रोज़ बांहे पसार कर आओ बच्चे, आओ बच्चे कहते हैं। तो बाप समान बनो और चलो वतन में। परमधाम का दरवाजा ही नहीं खोलते हैं। आपके लिए रुका हुआ है। ब्रह्मा बाबा तो बीच-बीच में कहते हैं, दरवाजा खोलो, दरवाजा खोलो। लेकिन बाप कहते हैं अभी थोड़ा रुको, थोड़ा रुको।**

(विनाश के पहले एक-एक कान्टीनेंट में एक-एक बार बाबा आये) देखो, ड्रामा। बाप लण्डन में भी आये, लेकिन मधुबन की महिमा तो मधुबन की है। आगे चलकर क्या होता है, वह बताने से मजा खत्म हो जायेगा। इसीलिए देखो आगे क्या होता है! (06/03/1997)

बेहद के हाल में बापदादा भी आज खुली दिल से बेहद की बातें बता रहे हैं। कल का दिन कौन सा था?(बुद्धवार) तो बुद्धवार की बात है। आज तो सभी रात का खेल देखकर थोड़ा थके हुए थे। थोड़ा सा परेशानी तो हुई ना। (रात को तूफान के साथ बरसात हुई) लेकिन **लास्ट समय में तो बहुत कुछ होने वाला है।** अगर थोड़ी सी रिहर्सल कर ली तो अच्छा है। थोड़ी रिहर्सल होनी चाहिए। बैग बैगेज समेटना और भागना, दौड़ना - यह तो एक्सरसाइज कराई। वैसे तो बूढ़ी-बूढ़ी मातायें भागती नहीं हैं लेकिन रात को बिस्तर और अटैची लेकर तो भागी। इसलिए यह भी खेल है। एक्सरसाइज तो हो गई ना। टांगे तो चली। यह छोटी-मोटी रिहर्सल तो फाइनल के आगे कुछ भी नहीं है। यह भी अभ्यास होना चाहिए। बापदादा ने कहा है एवररेडी रहो। इसमें भी एवररेडी, बारिस पड़ी सेकण्ड में चल पड़े। कोई डिस्टर्ब हुए? सेकण्ड में सेट हो गये।

जब आप कहेंगे एवररेडी, तब उन्हों की सेवा आरम्भ होगी। इसीलिए विनाश का समय कभी भी फिक्स नहीं होना है। अचानक होना है। बापदादा ने पहले से ही इशारा दे दिया है, उस समय नहीं उल्हना देना कि बाबा थोड़ा इशारा तो देते। अचानक होना है, एवररेडी रहना है। इसके लिए एक निमित्त महारथी को एक्जैम्पल बनाया (दादी चन्द्रमणी को)। है तो सब ड्रामा अनुसार लेकिन कोई विशाल सेवा का एक्जैम्पल भी बनता है। इसलिए क्या करेंगे? जब बापदादा मिले तो सब मन से कहना, कागज का वायदा या मुख का वायदा नहीं, **मन से वायदा करके दिखाना कि 'हम सब पुराने संस्कार खत्म कर अपने निजी संस्कार धारण करने वाले एवररेडी आत्मायें हैं।'**

आप सभी की यज्ञ माता, सरस्वती माता उसने विशेष सभी बच्चों को याद-प्यार दिया है। दिया तो सभी ने है लेकिन विशेष यज्ञ माता ने आप सबके लिए बहुत-बहुत दिल से यादप्यार दिया है और **यही महामन्त्र याद कराया कि अब घर चलने की तैयारी करो। किनारे सारे छोड़ो, चलो, उड़ो।** यज्ञ माता से प्यार है ना! अच्छा। (03/04/1997)

अभी समय के टू लेट की घण्टी नहीं बजी है, लेकिन बजने वाली है। दिन और डेट नहीं बतायेंगे। अचानक ही आउट होगा - टू लेट। फिर क्या करेंगे? उस समय जमा करेंगे? कितना भी चाहो समय नहीं मिलेगा। इसलिए बापदादा कई बार इशारा दे रहा है - जमा करो-जमा करो-जमा करो। (31/01/1998)

कोई बच्चे ने बापदादा को यह उड़ीसा की रिजल्ट लिखकर दी, यह हुआ, यह हुआ...। तो वह प्रकृति का खेल तो देख लिया। लेकिन बापदादा पूछते हैं कि आप लोगों ने सिर्फ प्रकृति का खेल देखा या अपने उड़ती कला के खेल में बिजी रहे? या सिर्फ समाचार सुनते रहे? समाचार तो सब सुनना भी पड़ता है, परन्तु जितना समाचार सुनने में इन्ट्रेस्ट रहता है उतना अपनी उड़ती कला की बाजी में रहने का इन्ट्रेस्ट रहा? कई बच्चे गुप्त योगी भी हैं, ऐसे गुप्त योगी बच्चों को बापदादा की मदद भी बहुत मिली है और ऐसे बच्चे स्वयं भी अचल, साक्षी रहे और वायुमण्डल में भी समय पर सहयोग दिया। जैसे स्थूल सहयोग देने वाले, चाहे गवर्मेन्ट, चाहे आस-पास के लोग सहयोग देने के लिए तैयार हो जाते हैं, **ऐसे ब्राह्मण आत्माओं ने भी अपना सहयोग - शक्ति, शान्ति देने का, सुख देने का जो ईश्वरीय श्रेष्ठ कार्य है, वह किया? जैसे वह गवर्मेन्ट ने यह किया, फलाने देश ने यह किया... फौरन ही अनाउन्समेंट करने लग जाते हैं, तो बापदादा पूछते हैं - आप ब्राह्मणों ने भी अपना यह कार्य किया? आपको भी अलर्ट होना चाहिए।** स्थूल सहयोग देना यह भी आवश्यक होता है, इसमें बापदादा मना नहीं करते लेकिन जो ब्राह्मण आत्माओं का विशेष कार्य है, जो और कोई सहयोग नहीं दे सकता, ऐसा सहयोग अलर्ट होके आपने दिया? देना है ना! या सिर्फ उन्हों को वस्त्र चाहिए, अनाज चाहिए? लेकिन पहले तो मन में शान्ति चाहिए, सामना करने की शक्ति चाहिए। तो स्थूल के साथ सूक्ष्म सहयोग ब्राह्मण ही दे सकते हैं और कोई नहीं दे सकता है। **तो यह कुछ भी नहीं है, यह तो रिहर्सल है। रीयल तो आने वाला**

है। उसकी रिहर्सल आपको भी बाप या समय करा रहा है। तो जो शक्तियां, जो खजाने आपके पास हैं, उसको समय पर यूज़ करना आता है?

15/11/1999

आज वतन में बापदादा की रूहरिहान चली - किस बात पर? आप सब जानते हो कि ब्रह्मा बाप को उमंग क्या होता है? जानते हो ना अच्छी तरह से? **ब्रह्मा बाप का उमंग था - जल्दी-से-जल्दी हो। तो शिव बाप ने कहा ब्रह्मा बाप को - विनाश वा परिवर्तन करना तो एक ताली भी नहीं, चपटी (चुटकी) बजाने की बात है। लेकिन आप पहले 108 नहीं, आधी माला बनाकर दो।** तो ब्रह्मा बाप ने क्या उत्तर दिया होगा? बताओ। (तैयार हो रहे हैं) अच्छा - आधी माला भी तैयार नहीं हुई है? पूरी माला की बात छोड़ो, आधी माला तैयार हुई है?

तो ब्रह्मा बाप ने क्या जवाब दिया? आप सबने तो अच्छे-अच्छे जवाब दिये। ब्रह्मा बाप ने कहा तो बस सिर्फ इतनी देरी है जो आप चपटी बजायेंगे, वह तैयार हो जायेंगे। तो अच्छी बात हुई ना! तो शिव बाप ने कह-अच्छा सारी माला तैयार है? आधी माला का तो जवाब मिला, सारी माला के लिए पूछा। उसमें कहा थोड़ा टाइम चाहिए। यह रूहरिहान चली। क्यों थोड़ा टाइम चाहिए? रूहरिहान में तो प्रश्न-उत्तर ही चलता है ना। क्यों थोड़ा टाइम चाहिए? कौन-सी विशेष कमी है जिसके कारण आधी माला भी रूकी हुई है? तो चारों ओर के बच्चे हर एरिया, एरिया के इमर्ज करते गये, जैसे आपके जोन हैं ना, ऐसे ही एक-एक जोन नहीं, ज़ोन तो बहुत-बहुत बड़े हैं ना। तो एक-एक विशेष शहर को इमर्ज करते गये और **सबके चेहरे देखते गये, देखते-देखते ब्रह्मा बाप ने कहा कि एक विशेषता अभी जल्दी-से-जल्दी सभी बच्चे धारण कर लेंगे तो माला तैयार हो जायेगी। कौन सी विशेषता?** तो यही कहा कि जितनी सर्विस में उन्नति की है, सर्विस करते हुए आगे बढ़े हैं। अच्छे आगे बढ़े हैं लेकिन एक बात का बैलेन्स कम है। **वह यही बात कि निर्माण करने में तो अच्छे आगे बढ़ गये हैं लेकिन निर्माण के साथ निर्मान - वह है निर्माण और वह**

है निर्मान। मात्रा का अन्तर है। लेकिन निर्माण और निर्मान दोनों के बैलेन्स में अन्तर है। सेवा की उन्नति में निर्मानता के बजाए कहाँ-कहाँ, कब-कब स्व-अभिमान भी मिक्स हो जाता है। जितना सेवा में आगे बढ़ते हैं, उतना ही वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, चाल में निर्मानता दिखाई दे, इस बैलेन्स की अभी बहुत आवश्यकता है। अभी तक जो सभी सम्बन्ध-सम्पर्क वालों से ब्लैसिंग मिलनी चाहिए वह ब्लैसिंग नहीं मिलती है। और पुरुषार्थ कोई कितना भी करता है, अच्छा है लेकिन पुरुषार्थ के साथ अगर दुआओं का खाता जमा नहीं है तो दाता-पन की स्टेज, रहमदिल बनने की स्टेज की अनुभूति नहीं होगी। आवश्यक है - स्व पुरुषार्थ और साथ-साथ बापदादा और परिवार के छोटे-बड़ों की दुआयें। यह दुआयें जो हैं - यह पुण्य का खाता जमा करना है। यह मार्क्स में एडीशन होती है। कितनी भी सर्विस करो, अपनी सर्विस की धुन में आगे बढ़ते चलो, लेकिन बापदादा सभी बच्चों में यह विशेषता देखने चाहते हैं कि सेवा के साथ निर्मानता, मिलनसार - यह पुण्य का खाता जमा होना बहुत-बहुत आवश्यक है। फिर नहीं कहना कि मैंने तो बहुत सर्विस की, मैंने तो यह किया, मैने तो यह किया, मैने तो यह किया, लेकिन नम्बर पीछे क्यों? इसलिए बापदादा पहले से ही इशारा देते हैं कि वर्तमान समय यह पुण्य का खाता बहुत-बहुत जमा करो। ऐसे नहीं सोचो - यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना नहीं है। जब प्रकृति को बदल सकते हो, एडजेस्ट करेंगे ना प्रकृति को? तो क्या ब्राह्मण आत्मा को एडजेस्ट नहीं कर सकते हो? अगेन्स्ट को एडजेस्ट करो, यह है - निर्माण और निर्मान का बैलेन्स। सुना!

बापदादा आने वाली सीज़न में आयेगा लेकिन.... कन्डीशन डालेगा। देखो साकार का पार्ट भी चला, अव्यक्त पार्ट भी चला, इतना समय अव्यक्त पार्ट चलने का स्वप्न में भी नहीं था। तो दोनों पार्ट ड्रामानुसार चले। अब कोई तो कन्डीशन डालनी पड़ेगी या नहीं! क्या राय है? क्या ऐसे ही चलता रहेगा? क्यों? आज वतन में प्रोग्राम भी पूछा। तो

बापदादा की रूहरिहान में यह भी चला कि यह ड्रामा का पार्ट कब तक? क्या कोई डेट है? अभी यह क्वेश्चन उठा है, कब तक? तो बापदादा रिजल्ट देखने चाहते हैं। दिल साफ, कोई भी दिल में पुराने संस्कार का, अभिमान-अपमान की महसूसता का दाग नहीं हो। (19/03/2000)

गुजरात का क्या हाल हैं? हलचल शुरु हुई है गुजरात से। ज्यादा हलचल गुजरात और विदेश में भी थोड़ा-थोड़ा शरु़ है। डरते तो नही हो ना! धरनी तो हिलती है लेकिन दिल तो नहीं हिलती है ना! जहाँ धरनी हिली है, नुकसान हुआ है वहाँ से जो आयें हैं वह उठो। अहमदाबाद वाले भी उठो। अच्छा। दिल हिली कि धरनी हिली? क्या हुआ? दिल मे थोडा ऐसा-ऐसा हुआ? नही हुआ! बहादूर है। बापदादा ने देखा कि बच्चों ने अपने हिम्मत और बाप की छत्रछाया से अच्छा अपना रिकार्ड रखा। कोई फेल नही हुआ, सब पास हो गये, कोई थोडा, कोई ज्यादा। नम्बरवार तो सब होता ही है हर जगह। लेकिन पास है। मुबारक है। सबसे ज्यादा नाजुक स्थान से कौन आये हैं? (एक भुज की और एक भचाऊ की बहन आई हैं) अच्छा, भुज मे आप तो हजार भुजाओं वालों के साथ थे। अच्छा, पेपर मे पास। बहुत अच्छा किया। आगे भी हिलना नही। अभी तो होता रहेगा। घबराना नही। (रोज होता हैं) होने दो। **देखो परिवर्तन तो होना ही है ना! तो प्रकृति भी अपना काम तो करेगी ना! जब मनुष्य आत्माओं ने प्रकृति को तमो गुणी बना दिया, तो वह अपना काम तो करेगी ना।** लेकिन हर खेल, ड्रामा के खेल मे यह भी खेल हैं। खंल को देखते हुए अपनी अवस्था ऊपर नीचे नही करना। मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं की स्व-स्थिति पर पर-स्थिति प्रभाव नही डाले। **और ही आत्माओं को मानसिक परेशानियों से छुडा ने के निमित्त बनो क्यों की मन की परेशानी आप मेडिटेशन से ही मिटा सकते हो।** डाक्टर्स अपना काम करेंगे, साईन्स वाले अपना काम करेंगे, गवमेंन्ट अपना काम करेगी,आप का काम हैं मन के परेशानी, टेन्शन को मिटाना। टेन्सन फ्री जीवन का दान देना। सहयोग देना। जैसे वर्तमान समय देश विदेश वाले सहयोगी बन सहयोग दे रहे हैं ना! यह बहुत

अच्छा कर रहे है। इस से सिद्ध होता है कि चाहे विदेश हो, चाहे कोई भी हो लेकिन भारत देश से प्यार है। हर एक अपना-अपना कार्य तो कर रहे हैं, आप अपना कर रहे है। **जैसे आग लगती है तो आग बुजाने वाले डरते नही है, बुजाते है। तो आप सब भी मन के परेशानी की आग बुजाने वाले हो।** अच्छा। तो गुजरात मजबूत है ना! हजार भुजाओं की छत्रछाया में हो। कहाँ भी आये, अभी तो गुजरात को देख कर अनुभवी हो गये हो ना। **कहाँ भी आये। देखो प्रकृति को कोई मना नहीं कर सकता है,गुजरात में आओ, आबू में नहीं आओ, बाम्बे में नहीं आओ, नहीं। वह स्वतन्त्र है।** लेकिन सभी को अपने स्व-स्थिति को अचल-अडोल और अपने बुद्धि को, मन के लाइन को क्लियर रखना हैं। लाइन क्लियर होगी तो टचिंग होगी। बापदादा ने पहले भी कहा था उन्हों की वायरलेस है, आपकी वाइसलस बुद्धि है। क्या करना है? क्या होना है? यह निर्णय स्पष्ट और शीघ्र होगा। ऐंसे नही सोचते रहो बाहर निकलें, अन्दर बैठें, दरवाजे पर बैठें, छत पर बैठें। नहीं। आपके पांव वहाँ ही चलेंगे जहाँ सेफटी होगी। और अगर बहुत घबरा जाओ, घबराना तो नही चाहिए, लेकिन बहुत घबराजाओ, बहुत डर लगे तो मधुबन एशलम घर आपका है। **डरना नहीं, अभी तो कुछ नही है, अभी तो सब कुछ होना है, डरना नहीं, खेल है। परिवर्तन होना है ना। विनाश नही, परिवर्तन होना है। सबमें वैराग्य वृत्ति उत्पन्न होनी है। रहमदिल बन सर्व शक्तियों द्वारा सकाश दे रहम करो। समझा!**

अभी प्रत्यक्षता का झण्डा जल्दी से जल्दी लहराना ही है। यही व्रत लो, दृढ़ प्रतिज्ञा का व्रत लो की जल्दी से जल्दी यह झण्डा नाम बाला का लहराना ही है। **अभी दुखी दुनिया को मुक्तिधाम मे जीवनमुक्ति धाम मे भेजो। बहुत दुखी है ना तो रहम करो, अब दुख से छुड़ाओ। जो बाप का वर्सा है - 'मुक्ति' का, वह सबको दिलाओ क्यों की परेशान बहुत हैं। आप शान मे हो, वह परेशान हो। कभी भी मन्सा सेवा से अपने को अलग नही करना, सदा सेवा करते रहो। वायुमण्डल फैलाते रहो। सुखदाता के बच्चे सुख**

का वायुमण्डल फैलाते चलो। यही मनाना है। तो शिव-रात्रि मना ली!

(20/02/2001)

बापदादा विशेष सब बच्चों के साथी होने के सम्बन्ध से विशेष ऐसे समय पर एक्सट्रा मदद देते हैं, क्यों? बाप जिम्मेवार हैं बच्चों को सम्पन्न बनाए साथ ले जाने के लिए।

जैसा समय नाजुक होता जायेगा, अभी होना है और। डरते तो नहीं हो ना? बापदादा ने पहले भी कहा कि आप सबने वर्ष क्यों मनाया है? कौन-सा वर्ष मनाया है? संस्कार से संसार परिवर्तन का। पक्का है ना! मनाया है ना! या भूल गये हैं? (मना रहे हैं) तो जब बच्चों ने संसार परिवर्तन का पक्का संकल्प लिया है तो प्रकृति बाप से पूछती हैं कि मैं तैयारी करती हूँ, सफाई करने की लेकिन सफाई करने वाले जो निमित्त हैं वह करते-करते सोच में पड़ जाते हैं, दुविधा में पड़ जाते हैं करें या नहीं करें। जल्दी करें, धीरे सें करें, तो मैं क्या करूं! प्रकृति पूछती हैं, तो बापदादा प्रकृति को क्या जवाब दे?

अभी आगे तो प्रकृति को, सफाई करने वालों को सोच में नहीं डालो क्योंकि स्थापना वाले अभी भी कभी-कभी सोच में पड़ जाते हैं। क्या करें, ऐसे करें, नहीं करें! ठीक होगा या नहीं होगा? एकदम स्पष्ट हो हाँ या ना। यह राइट हैं, यह रांग है - क्लीयर हो। तो प्रकृति आपके वर्ष मनाने के कारण तैयारी तो करेगी।

इस समय प्रोग्रामस् तो चलने ही हैं, प्रोग्रामस् को नहीं रोकना है। समय के सरकमस्टांश प्रोग्राम को रोकते हैं तो रोकें। लेकिन आप नहीं प्रोग्रामस् रोक सकते हो। अच्छा, अगर मानो कोई प्रोग्रामस् रखते हो और समस्या बदल जाती है तो प्रोग्राम में आने वाले भी समझते हैं, जाने वाले भी समझते हैं। आप क्यों ना करो। दाता के बच्चे हैं ना, तो आप देने में, प्रोग्राम करने में ना न हीं कर सकते हो। आओ, भले आओ, खुशी से आओ। स्वागत करेंगे। जब सरकमस्टांश होंगे तो सरकमस्टांश ही उन्हों को रोकें, आप नहीं रोके। अभी भी देखो अमेरिका के पीस विलेज में, हंगामा होते हुए भी अमेरिका में भी प्रोग्राम चल रहे हैं ना और

बहुत अच्छे चल रहे हैं। रूके हैं? नहीं रूके है ना! अभी ४ तारीख तक जो भी प्रोग्राम आपने बनाये, वह कोई रूका है! बाम्ब्स भी चल रहे हैं, चलने दो। लड़ाई तो चल रही है ना! सुनते रहो। अच्छा है, सुनने से आप सब ब्राह्मणों के जो विशेष संस्कार वा स्वभाव है - रहमदिल, मर्सीफुल के वह इमर्ज होंगे और होना ही ज़रूरी हैं। इस समय आप हर एक को, आत्माओं प्रति रहमदिल और दाता बन कुछ न कुछ देना ही है, चाहे मनसा सेवा द्वारा दो, चाहे शुभ भावना से दो, श्रेष्ठ सकाश देने की वृत्ति से दो, चाहे आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न बोल से दो, चाहे अपने स्नेह सम्पन्न सम्बन्ध-सम्पर्क से दो लेकिन कोई भी आत्मा वंचित नहीं रहे। **दाता बनो, रहमदिल बनो। चिल्ला रहे हैं। बाप के आगे अपनी-अपनी भाषा में चिल्ला रहे हैं - शान्ति दो, स्नेह दो, दिल का प्यर दो, सुख की किरणें दिखाओ। तो बाप कैसे देंगे? आप बच्चों द्वारा ही देंगे ना! बाप के आप सभी राइट हैण्ड हो। कोई को कुछ भी देना होता है तो हैण्ड द्वारा देते हैं ना! तो आप सभी बाप के राइट हैण्ड हो ना।** (04/11/2001)

आप सब निवारण स्वरूप बनो क्योंकि आप सभी बच्चों को विश्व के निवारण कर सभी को, मैजारिटी आत्माओं को निर्वाणधाम में भेजना है। तो जब स्वयं को निवारण स्वरूप बनाओ तब विश्व की आत्माओं को निवारण स्वरूप द्वारा सब समस्याओं का निवारण कर निर्वाणधाम में भेज सकेंगे। **अभी विश्व की आत्मायें मुक्ति चाहती हैं तो बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले निमित्त आप हो। तो निमित्त आत्मायें पहले स्वयं को भिन्न-भिन्न समस्याओं के कारण को निवारण कर मुक्त बनायेंगे तब विश्व को मुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे।**

अभी तो आत्माओं की क्यू आपके सामने आयेगी 'हे मुक्तिदाता मुक्ति दो' क्योंकि मास्टर दाता के डायरेक्ट बच्चे हो, अधिकारी बच्चे हो। मास्टर मुक्ति दाता तो हो ना।

बापदादा अभी कौन-सा उदघाटन देखने चाहता है? वह डेट तो फिक्स करो, यह छोटे-मोटे उदघाटन तो हो ही जायेंगे। लेकिन **बापदादा उदघाटन चाहते हैं 'सब विश्व की स्टेज पर बाप समान साक्षात फरिश्ते समान आ जाएं और पर्दा खुल जाए।'** ऐसा उदघाटन आप सबको भी अच्छा लगता है ना! रूहरूहान में भी सभी कहते रहते हैं, बाप भी सुनते रहते हैं, **बस अभी यही इच्छा है - बाप को प्रत्यक्ष करें और बाप की इच्छा है कि पहले बच्चे प्रत्यक्ष हों। बाप बच्चों के साथ ही प्रत्यक्ष होगा। अकेला नहीं होगा। तो बापदादा वह उदघाटन देखने चाहते हैं।** (25/11/2001)

समय की पुकार, आत्माओं की पुकार - हे देव आत्मायें सुनने नहीं आती? प्रकृति भी आप प्रकृति पति को देख पुकार रही है - हे प्रकृतिपति आत्मायें, अब परिवर्तन करो। यह तो बीच-बीच में छोटे-छोटे झटके लग रहे हैं। बिचारी आत्माओं को बार-बार दु:ख के, भय के झटके नहीं खिलाओ। आप मुक्ति दिलाने वाली आत्मायें मास्टर मुक्तिदाता कब इन आत्माओं को मुक्ति दिलायेंगे? क्या मन में रहम नहीं आता? कि समाचार सुन करके चुप हो जाते हो, बस, हो गया, सुन लिया। **इसलिए बापदादा हर बच्चे का अभी मर्सीफुल स्वरूप देखने चाहते हैं। अपनी हद की बातें अभी छोड़ दो, मर्सीफुल बनो। मनसा सेवा में लग जाओ। सकाश दो, शान्ति दो, सहारा दो। अगर मर्सीफुल बन औरों को सहारा देने में बिजी रहेंगे तो हद की आकर्षणों से, हद की बातों से स्वत: ही दूर हो जायेंगे। मेहनत से बच जायेंगे। वाणी की सेवा में बहुत समय दिया, समय सफल किया, सन्देश दिया। आत्माओं को सम्बन्ध-सम्पर्क में लाया, ड्रामानुसार अब तक जो किया वह बहुत अच्छा किया। लेकिन अभी वाणी के साथ मनसा सेवा की ज्यादा आवश्यकता है। और यह मनसा सेवा हर एक नया, पुराना, महारथी, घोड़ेसवार, प्यादा सब कर सकते हैं। इसमें बड़े करेंगे, हम तो छोटे हैं, हम तो बीमार हैं, हम तो साधनों वाले नहीं है..... कोई भी आधार नहीं चाहिए। यह छोटे-छोटे**

बच्चे भी कर सकते हैं। बच्चे, मनसा सेवा कर सकते हैं ना? (हाँ जी) इसलिए अभी वाचा और मनसा सेवा का बैलेन्स रखो। मनसा सेवा से आप करने वालों को भी बहुत फायदा है। क्यों? जिस आत्मा को मनसा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा शक्ति देंगे, सकाश देंगे वह आत्मा आपको दुआ देगी। और आपके खाते में स्व का पुरुषार्थ तो है ही लेकिन दुआओं का खाता भी जमा हो जायेगा। तो आपका खाता डबल रीति से बढ़ता जायेगा।

बापदादा अचानक एक दिन पूछेगा - अपना-अपना चार्ट लिखकर भेजो, फिर देखेंगे क्योंकि वर्तमान समय बहुत आवश्यकता है। अपने परिवार का दु:ख परेशानी आप देख सकते हो! देख सकते हो? दु:खी आत्माओं को अंचली तो दो। जो आपका गीत है - एक बूंद की प्यासी हैं हम..... आज के समय में सुख शान्ति की एक बूंद की आत्मायें प्यासी हैं। एक सुख-शान्ति के अमृत की बूंद मिलने से भी खुश हो जायेंगी। **बापदादा बार-बार सुनाते रहते हैं - समय आपका इन्तजार कर रहा है। ब्रह्मा बाप अपने घर का गेट खोलने का इन्तजार कर रहा है। प्रकृति तीव्र गति से सफाया करने का इन्तजार कर रही है। तो हे फरिश्ते, अभी अपने डबल लाइट से इन्ताजर को समाप्त करो। एवररेडी शब्द तो सब बोलते हो लेकिन सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में एवररेडी बने हो? सिर्फ शरीर छोड़ने के लिए एवररेडी नहीं बनना है, लेकिन बाप समान बनकर जाने में एवररेडी बनना है।**

बापदादा के पास बहुत बड़ी टी.वी. है, बहुत बड़ी है। **एक एक को देख सकते हैं, किस समय कोई क्या कर रहा है, बापदादा देखता है लेकिन बोलता नहीं है, आपको सुनाता नहीं है। बाकी रंग बहुत देखते रहते हैं। छिप-छिप कर क्या करते रहते हो वह भी देखता है।** बच्चों में चालाकी भी बहुत है ना! चालाक बहुत हैं। अगर बापदादा बच्चों की चालाकियां सुनायें ना तो सुनकर ही आप थोड़ा सा सोचने लगेंगे, इसलिए सुनाते नहीं हैं। आपको सोच

में क्यों डाले। लेकिन करते बहुत होशियारी से हैं। अगर सबसे होशियारी देखना हो तो भी ब्राह्मणों में देखो। लेकिन **अभी किसमें होशियार बनेंगे? मनसा सेवा में। नम्बर आगे ले लो। पीछे नहीं रहना। इसमें कोई कारण नहीं। समय नहीं मिलता, चांस नहीं मिलता, तबियत नहीं चलती, पूछा नहीं गया, यह कुछ नहीं। सब कर सकते हो।** बच्चों ने दौड़ लगाने का खेल खेला था ना, अभी इसमें दौड़ लगाना। मनसा सेवा में दौड़ लगाना। अच्छा।

(15/12/2001)

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि बापदादा के पास प्रकृति भी आती है कहने के लिए कि मैं एवररेडी हूँ, समय भी ब्राह्मणों को बार-बार देखता रहता है कि ब्राह्मण तैयार हैं? बार-बार ब्राह्मणों का चक्कर लगाता है। तो बापदादा पूछते हैं, हाथ तो बहुत अच्छे उठाते हो, बापदादा भी खुश हो जाते हैं। **अब एवररेडी बनो जो हर संकल्प, हर सेकण्ड, हर श्वांस जो बीते वह वाह, वाह हो। व्हाई नहीं हो, वाह, वाह हो।**

बापदादा को डबल विदेशियों में अरब-खरब जितनी उम्मदें हैं। डबल फारेनर्स ऐसा जलवा दिखायेंगे जो इन्डिया की आत्मायें चकित हो जायेंगी। आना है, वह भी दिन आना है, जल्दी आना है। आना है ना? वह दिन आने वाला है ना? आयेगा वह दिन? (जल्दी-जल्दी आयेगा) हाँ जी तो बोलो। बापदादा इन एडवान्स मुबारक की थालियाँ भरकर दे रहे हैं। इतनी हिम्मत बापदादा डबल फारेनर्स में देख रहे हैं, ऐसे है ना? फारेन में बहुत उम्मीदें हैं। अच्छा है। यूथ भी अच्छे हैं, प्रवृत्ति वाले भी बहुत हैं, कुमारियां भी बहुत हैं, कमाल ही कमाल है। (31/12/2001)

अब बापदादा सभी बच्चों से यही चाहते हैं कि बाप के प्यार का सबूत समान बनने का दिखाओ। **सदा संकल्प में समर्थ हो, अब व्यर्थ के समाप्ति समारोह मनाओ** क्योंकि व्यर्थ समर्थ बनने नहीं देंगे और जब तक आप निमित्त बने हुए बच्चे सदा समर्थ नहीं बने हैं तो विश्व की आत्माओं को समर्थी कैसे दिलायेंगे! **सर्व आत्मायें शक्तियों से बिल्कुल खाली हो, शक्तियों की**

भिखारी बन चुकी हैं। ऐसे भिखारी आत्माओं को हे समर्थ आत्मायें, इस भिखारीपन से मुक्त करो। आत्मायें आप समर्थ आत्माओं को पुकार रही हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता, हमें मुक्ति दो। क्या यह आवाज आपके कानों में नहीं पड़ता? सुनने नहीं आता? अब तक अपने को ही मुक्त करने में बिजी हैं क्या? **विश्व की आत्माओं को बेहद स्वरूप से मास्टर मुक्तिदाता बनने से स्वयं की छोटी-छोटी बातों से स्वतः ही मुक्त हो जायेंगे। अब समय है कि आत्माओं की पुकार सुनो। पुकार सुनने आती है या नहीं आता है? परेशान आत्माओं को सुख-शान्ति की अंचली दो। यही है ब्रह्मा बाप को फालो करना।** (18/01/2002)

बापदादा सभी बच्चों को फिर से इशारा दे रहे हैं कि समय सब प्रकार से अति में जा रहा है। माया भी अपना अति का पार्ट बजा रही है, प्रकृति भी अपना अति का पार्ट बजा रही है। ऐसे समय पर ब्राह्मण बच्चों को अपने तरफ अटेन्शन भी अति अर्थात् मन-वचन-कर्म में अति में होना चाहिए। साधारण पुरुषार्थ नहीं।

बापदादा ने देखा कईयों ने पुरुषार्थ अच्छा किया है। अटेन्शन दिया है। **तो क्या याद रखेंगे? निर्माण। तब निर्माण का कर्तव्य फटाफट होगा। निर्माण बनो, निर्माण करो। फिर आपेही बोलेंगे, बाबा अभी तो छिम-छिम हो गई है। होनी ही है। सारे विश्व की आत्मायें अहो प्रभु कहके भी आपके आगे झुकनी हैं।** तो सुना वर्ष की सेवा का सुनाया ना! अभी देखेंगे कौन-सा सेन्टर, कौन-सा ज़ोन, ज़ोन में भी कौन-सा सेन्टर इस विधि से वारिस निकालते हैं। **अभी कोई वारिसों की छिम-छिम करो। वह होगी अनुभूति कराने से। सबसे बड़े ते बड़ी अथॉरिटी अनुभव है। अनुभवी को कोई बदल नहीं सकता।**

बापदादा को बच्चों की मेहनत अच्छी नहीं लगती। कारण यह है, जैसे देखो रावण को मारते भी हैं, लेकिन सिर्फ मारने से छोड़ नहीं देते हैं, जलाते हैं

और जलाके फिर हड्डियां जो हैं, वह आजकल तो नदी में डाल देते हैं। कोई भी मनुष्य मरता है तो हड्डियां भी नदी में डाल देते हैं तभी समाप्ति होती है। तो आप क्या करते हो? ज्ञान की प्वाइंटस से, धारणा की प्वाइंटस से उस बात रूपी रावण को मार तो देते हो लेकिन योग अग्नि में स्वाहा नहीं करते हो। और फिर जो कुछ बातों की हड्डियां बच जाती हैं ना - वह ज्ञान सागर बाप के अर्पण कर दो। तीन काम करो - एक काम नहीं करो। **आप समझते हो पुरुषार्थ तो किया ना, मुरली भी पढ़ी, 10 बार मुरली पढ़ी फिर भी आ गई क्योंकि आपने योग अग्नि में जलाया नहीं, स्वाहा नहीं किया। अग्नि के बाद नाम निशान गुम हो जाता है फिर उसको भी बाप सागर में डाल दो, समाप्त। इसलिए इस वर्ष में बापदादा हर बच्चे को व्यर्थ से मुक्त देखने चाहते हैं। मुक्त वर्ष मनाओ। जो भी कमी हो, उस कमी को मुक्ति दो, क्योंकि जब तक मुक्ति नहीं दी है ना, तो मुक्तिधाम में बाप के साथ नहीं चल सकेंगे।** तो मुक्ति देंगे? मुक्ति वर्ष मनायेंगे? (28/03/2002)

बापदादा कहते हैं अभी समय प्रमाण हर टीचर में बाप प्रत्यक्ष दिखाई दे तो सर्वव्यापी दिखाई देगा ना! जिसको देखें उसमें बाप ही दिखाई दे। **आत्मा, परमात्मा के आगे छिप जाये और परमात्मा ही दिखाई दे।** यह हो सकता है? अच्छा इसकी डेट क्या? डेट तो फिक्स होनी चाहिए ना? तो कौन-सी डेट है इसकी? कितना समय चाहिए? (आब से चालु करेंगे) चालू करेंगे, अच्छी हिम्मत हैं, कितना समय चाहिए? 2002 तो चल रहा है अभी दो हजार कब तक? तो **टीचर्स को यही अटेन्शन रखना है कि बस अभी बाप के अन्दर मैं समाई हुई दिखाई दूं। मेरे द्वारा बाप दिखाई दे।** प्लैन बनायेंगे ना। डबल विदेशी मीटिंग करने में तो होशियार हैं? अभी यह मीटिंग कना, इस मीटिंग के बिना जाना नहीं - कि **कैसे हम एक एक से बाप दिखाई दे। अभी ब्रह्माकुमारियां दिखाई देती हैं, ब्रह्माकुमारियां बहुत अच्छी हैं लेकिन इनका बाबा कितना अच्छा हैं, वह देखें। तभी तो विश्व परिवर्तन होगा ना!**

(25/12/2002)

ब्राह्मण परिवार में निश्चय, क्यों? ब्राह्मण परिवार का अर्थ ही है संगठन। छोटा परिवार नहीं है, ब्रह्मा बाप का ब्राह्मण परिवार सर्व परिवारों से श्रेष्ठ और बड़ा है। तो परिवार के बीच, परिवार के प्रीत की रीति निभाने में भी विजयी। ऐसा नहीं कि बाप मेरा, मैं बाबा का, सब कुछ हो गया, बाबा से काम है, परिवार से क्या काम! लेकिन यह भी निश्चय की विशेषता है। चारों ही बातों में निश्चय, विजय आवश्यक है। परिवार भी सब को कई बातों में मजबूत बनाता है। सिर्फ परिवार में यह स्मृति में रहे कि सब अपने-अपने नम्बरवार धारणा स्वरूप हैं। वैरयटी हैं। इसको यादगार 108 की माला है। सोचो - कहाँ एक नम्बर और कहाँ 108वां नम्बर, क्यों बना? सब एक नम्बर क्यों नहीं बने? 16 हजार क्यों बना? कारण? वैरयटी संस्कार को समझ नॉलेजफुल बन चलना, निभाना, यही सक्सेसफुल स्टेज है। चलना तो पड़ता ही है। परिवार को छोड़कर कहाँ जायेंगे। नशा भी है ना कि हमारा इतना बड़ा परिवार है। तो बड़े परिवार में बड़ी दिल से हर एक के संस्कार को जानते हुए चलना, निर्माण होके चलना, शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति से चलना...... यही परिवार के निश्चयबुद्धि विजयी की निशानी हैं। तो सभी विजयी हो ना?

देखो, कहाँ-कहाँ से, भिन्न-भिन्न देश की टालियां मधुबन में एक वृक्ष बन जाता है। मधुबन में याद रहता है क्या, मैं दिल्ली की हूँ, मैं कर्नाटक की हूँ, मैं गुजरात की हूँ......! सब मधुबन निवासी हैं। तो एक झाड़ हो गया ना। इस समय सब क्या समझते हैं, मधुबन निवासी हो या अपने-अपने देश के निवासी हो? मधुबन निवासी हो? सभी मधुबन निवासी हो, बहुत अच्छा। वैसे भी हर ब्राह्मणों की परमानेन्ट एड्रेस तो मधुबन ही है। आपकी परमानेन्ट एड्रेस कौन-सी हैं? बाम्बे हैं? दिल्ली हैं? पंजाब हैं? **मधुबन परमानेन्ट एड्रेस हैं। यह तो सेवा के लिए सेवाकेन्द्रों में भेजा गया है। वह सेवा के स्थान हैं, घर आपका मधुबन हैं। आखिर भी एशलम कहाँ मिलना है? मधुबन में ही मिलना है। इसीलिए बड़े बड़े स्थान बना रहे हैं ना।** (14/11/2002)

अभी सोई हुई आत्माओं को जल्दी-जल्दी जगाओ। कुछ तो अपना थोड़ा सा अंचली का वर्सा भी ले लें क्योंकि अभी तक टू लेट का बोर्ड नहीं लगा है। लेट हैं लेकिन टू लेट नहीं हैं। तो टू लेट के पहले सोये हुए हमजिन्स को जगाओ। जगायेंगे ना? अपने अपने स्थान पर जहाँ भी सेवा करते हो वहाँ जगाओ जो पूरे परवाने बन शमा तक पहुंच जायें। (30/11/2002)

बापदादा ने समाचार सुना कि आजकल विशेष दादियां यह रूहरूहान करती हैं - फरिश्ता अवस्था, कर्मातीत अवस्था, बाप समान अवस्था नेचुरल कैसे बनें? नेचर बन जाएं, यह रूहरूहान करते हो ना। **दादी को भी यही बार-बार आता है ना - फरिश्ता बन जाएं, कर्मातीत बन जाएं, बाप प्रत्यक्ष हो जाएं। तो फरिश्ता बनना वा निराकारी कर्मातीत अवस्था बनाने का विशेष साधन है - निरहंकारी बनना। निरहंकारी ही निराकारी बन सकता है।** इसलिए बाप ने ब्रह्मा द्वारा लास्ट मन्त्र निराकारी के साथ निरहंकारी कहा। सिर्फ अपनी देह या दूसरे की देह में फंसना, इसको ही देह अहंकार या देहभान नहीं कहा जाता है। देह अहंकार भी हैं, देहभान भी है। अपनी देह या दूसरे की देह के भान में रहना, लगाव में रहना - उसमें मैजॉरिटी पास हैं। जो पुरुषार्थ की लगन में रहते हैं, सच्चे पुरुषार्थी हैं, वह इस मोटे रूप से परे हैं। लेकिन देह-भान के सूक्ष्म अनेक रूप हैं, इसकी लिस्ट आपस में निकालना। बापदादा आज नहीं सुनाते हैं। आज इतना ही इशारा बहुत हैं क्योंकि सभी समझदार हैं। माइक ऐसे तैयार हों जो मीडिया समान प्रत्यक्षता का आवाज फैलाये। आप कहेंगे भगवान आ गया, भगवान आ गया...... वह तो कामन बात हैं लेकिन अपनी तरफ से दूसरे कहें, अथॉरिटी वाले कहें, पहले आप लोगों को शक्तियों के रूप में प्रत्यक्ष करें। जब शक्तियां प्रत्यक्ष होंगी तब बाप प्रत्यक्ष होगा।

अभी शिवरात्रि की डायमण्ड जुबली मनाओ। यह दो प्रकार की आत्मायें तेयार करो, फिर देखो नगाड़ा बजता है या नहीं। **नगाड़े आप थोड़े ही बजायेंगे। आप तो देवियां हो साक्षात्कार करायेंगी। नागड़े बजाने वाले तैयार करो।** जो प्रैक्टिकल गीत गायें शिव शक्तियां आ गई।

फिर लिखेंगी बाबा 500-1000, लाख आदमी आ गये, आ तो गये सन्देश दिया, लेकिन वारिस कितने निकले, माइक कितने निकले, अभी वह समाचार देना।

मधुबन से नगाड़ा बजेगा, कहाँ से नगाड़ा बजेगा? (दिल्ली से) मधुबन से नहीं? कहो चारों ओर से। एक तरफ से नहीं बजेगा। मधुबन से भी बजेगा, तो चारों ओर से बजेगा तभी तो कुम्भकरण जागेंगे। (15/12/2002)

ऐसे तैयार हो जाओ जो भारत की आत्माओं को जगाओ। है हिम्मत? भारत को जगायेंगे? बहुत टेढ़े-बांके क्वेश्चन करेंगे भारत वाले। उत्तर देंगे? आप सबका फोटो टी.वी. में आ रहा है। तो **आप सबको निमन्त्रण आयेगा भारत को जगाने के लिए। तो एवररेडी रहना। अगर टिकेट नहीं होगी तो भी मिल जायेगी।**

दादी यह तो नहीं सोचती कि क्या करेंगे? **कम से कम 9 लाख बैठ सकें, इतनी प्रजा तो तैयार करेंगे या नहीं?** कब करेंगे? कब करेंगे, वह डेट फिक्स करेंगे। 9 लाख लायेंगे पहले, पाण्डव लायेंगे। **बापदादा हाल तैयार कर लेंगे लेकिन 9 लाख लाओ।** (एक एक लाख हर वर्ष लायेंगे) ऐसा नहीं। वह तो आवें, उसकी तो मना है ही नहीं। लेकिन **आखिर स्टेज पर 9 लाख तो लायेंगे या नहीं? नहीं तो राज्य किस पर करेंगे? आपके पहले जन्म में 9 लाख भी प्रजा या रॉयल फैमिली नहीं होगी तो किस पर राज्य करेंगे?**

मधुबन वाले क्या सोचते हैं? 9 लाख चाहिए या नहीं? 9 लाख चाहिए, मुख्य पाण्डव क्या कहते हैं? चाहिए, नहीं चाहिए? हो जायेगा। **जब 9 लाख आयेंगे तो साधन स्वत: जुट जायेगा। घबराओ नहीं, हाल बनाना पड़ेगा। देखो, भविष्य बहुत-बहुत उज्जवल हैं। सब साधन मिल जायेंगे। बने बनाये हाल आपको मिलेंगे। बनाने नहीं पड़ेंगे। सिर्फ जो इस वर्ष का स्लोगन दिया है ना - सफल करो, सफलता है ही।** अच्छा। पाण्डव हाथ हिलाओ।

ब्रह्मा बाप आप फरिश्तों का आह्वान कर रहे हैं। फरिश्ता बनके ब्रह्मा बाप के साथ अपने घर निराकार रूप में चलना। फिर देवता बन जाना।

एक दिन आयेगा बहुत जल्दी आयेगा जो सब कहेंगे कि हम सभी स्व-परिवर्तन करने वाले शक्ति पाण्डव सेना हैं। स्व-परिवर्तन। पुराने साल को विदाई देने के साथ-साथ माया को भी विदाई दे दो। वह भी थक गई है। विदाई और बधाई दोनों साथ-साथ। (31/12/2002)

जिसको उमंग है बस शिवरात्रि में कमाल करेंगे, वह हाथ उठाओ। ऐसी कमाल जो धमाल खत्म हो जाए। जय-जयकार हो जाये वाह! वाह समर्थ आत्मायें वाह! सभी ज़ोन ने प्रोग्राम बनाया है ना! अच्छा है। भटकती हुई आत्मायें, प्यासी आत्मायें, अशान्त आत्मायें, ऐसी आत्माओं को अंचली तो दे दो। फिर भी आपके भाई-बहनें हैं। तो अपने भाईयों के ऊपर, अपनी बहनों के ऊपर रहम आता है ना! देखो, आजकल परमात्मा को आपदा के समय याद करते लेकिन शक्तियों को, देवताओं में भी गणेश है, हनुमान हैं और भी देवताओं को ज्यादा याद करते हैं, तो वह कौन हैं? आप ही हो ना! आपको रोज़ याद करते हैं। **पुकार रहे हैं - हे कृपालु, दयालु रहम करो, कृपा करो। जरा सी एक सुख शान्ति की बूंद दे दो। आप द्वारा एक बूंद के प्यासी हैं। तो दु:खियों का, प्यासी आत्माओं का आवाज हे शक्तियां, हे देव नहीं पहुंच रहा है! पहुंच रहा है ना? बापदादा जब पुकार सुनते हैं तो शक्तियों को और देवों को याद करते हैं।**

यही लक्ष्य रखो कि ज्यादा से ज्यादा आत्माओं को मन्सा द्वारा, वाणी द्वारा वा सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा किसी भी विधि से सन्देश रूपी अंचली ज़रूर देना है। अपना उल्हना उतार दो। बच्चे सोचते हैं अभी विनाश की डेट तो दिखाई नहीं देती है, तो कभी भी उल्हना पूरा कर लेंगे लेकिन नहीं अगर अभी से उल्हना पूरा नहीं करेंगे तो यह भी उल्हना मिलेगा कि आपने पहले क्यों नहीं बताया। हम भी कुछ तो बना देते, फिर तो सिर्फ अहो प्रभु कहेंगे। इसलिए उन्हें भी कुछ-कुछ तो वर्से की अंचली लेने दो। उन्हों को भी कुछ समय दो। एक बूंद से भी प्यास तो

बुझाओ, प्यास के लिए एक बूंद भी बहुत महत्त्व वाली होती है। तो यही प्रोग्राम है ना कि कल से लेके बापदादा भी हरी झण्डी नहीं, नगाड़ा बजा रहे हैं कि आत्माओं को, हे तृप्त आत्मायें सन्देश दो, सन्देश दो।

आपको मालूम पड़ा कि ब्रह्मा बाप अव्यक्त हो रहा है, नहीं मालूम पड़ा ना। तो इतना न्यारा, साक्षी, अशरीरी अर्थात् कर्मातीत स्टेज बहुत काल से अभ्यास की तब अन्त में भी वही स्वरूप अनुभव हुआ। यह बहुतकाल का अभ्यास काम में आता है। ऐसे नहीं सोचो कि अन्त में देहभान छोड़ देंगे, नहीं। बहुतकाल का अशरीरीपन का, देह से न्यारे करावनहार स्थिति का अनुभव चाहिए। अन्तकाल चाहे जवान है, चाहे बुढ़ा है, चाहे तन्दरूस्त है, चाहे बीमार है, किसका भी कभी भी आ सकता है। इसलिए बहुतकाल साक्षीपन के अभ्यास पर अटेन्शन दो। **चाहे कितनी भी प्रकृतिक आपदायें आयेंगी लेकिन यह अशरीरीपन की स्टेज आपको सहज न्यारा और बाप का प्यारा बना देगी। इसलिए बहुतकाल शब्द को बापदादा अण्डरलाइन करा रहे हैं। क्या भी हो, सारे दिन में साक्षीपन की स्टेज का, करावनहार की स्टेज का, अशरीरीपन की स्टेज का अनुभव बार-बार करो, तब अन्त मते फरिश्ता सो देवता निश्चित है। बाप समान बनना है तो बाप निराकार और फरिश्ता है, ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात् फरिश्ता स्टेज में रहना। जैसे फरिश्ता रूप साकार रूप में देखा, बात सुनते, बात करते, कारोबार करते अनुभव किया कि जैसे बाप शरीर में होते न्यारा हैं। कार्य को छोड़कर अशरीरी बनना, यह तो थोड़ा समय हो सकता है लेकिन कार्य करते, समय निकाल अशरीरी, पावरफुल स्टेज का अनुभव करते रहो। आप सब फरिश्ते हो, बाप द्वारा इस ब्राह्मण जीवन का आधार ले सन्देश देने के लिए साकार मं कार्य कर रहे हो। फरिश्ता अर्थात देह में रहते देह से न्यारा और यह एक एक्जैम्पुल ब्रह्मा बाप को देखा है, असम्भव नहीं है। देखा अनुभव किया। जो भी निमित्त हैं, चाहे अभी विस्तार ज्यादा है लेकिन जितनी ब्रह्मा बाप की नई नॉलेज, नई जीवन, नई दुनिया बनाने की जिम्मेवारी थी, उतनी अभी**

किसकी भी नहीं है। तो सबका लक्ष्य है ब्रह्मा बाप समान बनना अर्थात फरिश्ता बनना। शिव बाप समान बनना अर्थात् निराकार स्थिति में स्थित होना। मुश्किल है क्या? बाप और दादा से प्यार है ना! तो जिससे प्यार है उस जैसा बनना, जब संकल्प भी है - बाप समान बनना ही है, तो कोई मुश्किल नहीं। सिर्फ बार-बार अटेन्शन। साधारण जीवन नहीं। साधारण जीवन वाले बहुत हैं। बड़े-बड़े कार्य करने वाले बहुत हैं। लेकिन आप जैसा कार्य, आप ब्राह्मण आत्माओं के सिवाए और कोई नहीं कर सकता है। (18/01/2003)

आप बच्चों के पास सर्व खजानें हैं। हर एक आत्मा की कामना पूर्ण करने वाले हो। **दिन-प्रतिदिन समय समाप्ति का समीप आने के कारण अब आत्मायें कोई नया सहारा ढूंढ रही हैं। तो आप आत्मायें नया सहारा देने के निमित्त बनी हुई हो।**

नम्बरवार तो है ही ना! कभी भी यह संकल्प नहीं करो - यह करें तो मैं भी करूं। दातापन के संस्कार वाले को सर्व तरफ से सहयोग स्वत: प्राप्त होता है, न सिर्फ आत्माओं द्वारा लेकिन प्रकृति भी समय प्रमाण सहयोगी बन जाती है। **यह सूक्ष्म हिसाब है कि जो सदा दाता बनता है, उस पुण्य का फल समय पर सहयोग, समय पर सफलता उस आत्मा को सहज प्राप्त होता है। इसलिए सदा दातापन के संस्कार इमर्ज रूप में रखो। पुण्य का खाता एक का १० गुणा फल देता है। तो सारे दिन में नोट करो - संकल्प द्वारा, वाणी द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा पुण्य आत्मा बन पुण्य का खाता कितना जमा किया? मन्सा सेवा भी पुण्य का खाता जमा करती है। वाणी द्वारा किसी कमजोर आत्मा को खुशी में लाना, परेशान को शान की स्मृति में लाना, दिलशिकस्त आत्मा को अपनी वाणी द्वारा उमंग-उत्साह में लाना, सम्बन्ध-सम्पर्क से आत्मा को अपने श्रेष्ठ संग का रंग अनुभव कराना, इस विधि से पुण्य का खाता जमा कर सकते हो।**

ब्राह्मण आत्मायें वर्तमान वायुमण्डल को देख विदेश में डरते तो नहीं है? कल क्या होगा, कल क्या होगा...... यह तो नहीं सोचते हैं? कल अच्छा होगा। अच्छा है और अच्छा ही होना है। जितनी दुनिया में हलचल होगी उतनी ही आप ब्राह्मणों की स्टेज अचल होगी। ऐसे है? डबल विदेशी हलचल है या अचल है? अचल है? हलचल में तो नहीं हैं ना! जो अचल हैं वह हाथ उठाओ। अचल हैं? कल कुछ हो जाये तो? तो भी अचल हैं ना। क्या होगा, कुछ नहीं होगा। आप ब्राह्मणों के ऊपर परमात्म छत्रछाया है। जैसे वाटरप्रुफ कितना भी वाटर हो लेकिन वाटरप्रुफ द्वारा वाटर प्रुफ हो जाते हैं। ऐसे ही कितनी भी हलचल हो लेकिन ब्राह्मण आत्मायें परमात्म छत्रछाया के अन्दर सदा प्रुफ हैं। बेफिकर बादशाह हो ना! कि थोड़ा-थोड़ा फिकर है, क्या होगा? नहीं। बेफिकर। स्वराज्य अधिकारी बन, बेफिकर बादशाह बन, अचल-अडोल सीट पर सेट रहो।

ऐसा प्लैन बनाओ जो जल्दी से जल्दी जैसे आजकल साइंस बहुत फास्ट जा रही है तो आप भी ऐसा सेवा का प्लैन बनाओ जो जल्दी से जल्दी स्थापना की बिल्डिंग जल्दी से जल्दी तैयार हो जाए। अभी तीव्र गति का कोई प्लैन बनाओ। दृष्टि दी और दृष्टि से सृष्टि बदल जाए, ऐसा होना है। लास्ट में आपके एक सेकण्ड की दृष्टि कमाल करेगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। ऐसी कोई नई इन्वेन्शन निकालो।

इस योग ज्वाला से ही विनाश ज्वाला फोर्स में आयेगी। अभी देखो बनाते हैं प्रोग्राम, फिर सोच में पड़ जाते हैं। योग से विकर्म विनश होंगे, पाप कर्म का बोझ भस्म होगा, सेवा से पुण्य का खाता जमा होगा। तो पुण्य का खाता जमा कर रहे हैं लेकिन पिछले जो कुछ संस्कार का बोझ हैं, वह भस्म योग ज्वाला से होगा। साधारण योग से नहीं। अभी क्या है, योग तो लगाते हैं लेकिन पाप भस्म होने का ज्वाला रूप नहीं है इसलिए थोड़ा टाइम खत्म होता है फिर निकल आता है। इसलिए रावण को देखो, मारते हैं , जलाते भी हैं फिर भी हड्डियां भी पानी में डाल देते हैं। बिल्कुल भस्म

हो जाए, पिछले संस्कार, कमजोर संस्कार बिल्कुल भस्म हो जाए, भस्म नहीं हुए हैं। मरते हैं लेकिन भस्म नहीं होते हैं, मरने के बाद फिर जिंदा हो जाते हैं। संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन होगा। अभी संस्कारों की लीला चल रही है। संस्कार बीच-बीच में इमर्ज होते हैं ना! नामनिशान खत्म हो जाए, संस्कार परिवर्तन - यह है विशेष अण्डरलाइन की बात। संस्कार परिवर्तन नहीं हैं तो व्यर्थ संकल्प भी हैं। व्यर्थ समय भी हैं, व्यर्थ नुकसान भी है। होना तो है ही। (समय करेगा या स्वयं का पुरुषार्थ) दोनों मिलकर करेंगे, समय भी स्वयं का पुरुषार्थ करायेगा। संस्कार मिलन की महारास गाई हुई है। जो यादगार में हैं महारास, वह संस्कार मिलन की महारास है। अभी रास होती है, महारास नहीं हुई है। (महारास क्यों नहीं होती है?) अण्डरलाइन नहीं है, दृढ़ता नहीं है। अलबेलापन भिन्न-भिन्न प्रकार का है। अच्छा। आप सब तो ठीक ही हैं ना!

(13/02/2003)

साथ-साथ की निशानी है कि आप बच्चों का और बाप का आपस में बहुत-बहुत-बहुत स्नेह है। इसलिए जन्म भी साथ-साथ है और रहते भी सारा जन्म कम्बाइन्ड अर्थात् साथ हैं। इतना प्यार देखा है! अगर आक्युपेशन भी है तो बाप और बच्चों का एक ही विश्व परिवर्तन करने का आक्युपेशन है और वायदा क्या है? कि परमधाम, स्वीट होम में भी साथ-साथ चलेंगे या आगे पीछे चलेंगे? साथ-साथ चलना है ना!

आजकल तो सभी धूमधाम से सेवा का प्लैन बना रहे हैं ना। जब सेवा जोर-शोर से कर रहे हो तो सेवा जोर-शोर से करना अर्थात् सम्पूर्ण समाप्ति के समय को समीप लाना है। ऐसे नहीं समझो भाषण करके आये लेकिन समय को समीप ला रहे हो। सेवा अच्छी कर रहे हो। बापदादा खुश है। लेकिन बापदादा देखते हैं कि समय समीप आ रहा है, ला रहे हो आप, ऐसे ही लाख डेढ़ लाख इकट्ठा नहीं किया, यह समय को समीप लाया। अभी गुजरात ने किया, बॉम्बे करेगा और भी कर रहे हैं। चलो लाख नहीं तो 50 हजार ही सही लेकिन सन्देश दे रहे हो तो सन्देश के साथ-साथ सम्पन्नता की भी तैयारी है? तैयारी है?

विनाश को बुला रहे हो तो तैयारी है? दादी ने क्वेश्चन किया था कि अभी क्या ऐसा प्लैन बनायें जो जल्दी-जल्दी प्रत्यक्षता हो जाए? तो बापदादा कहते हैं - प्रत्यक्षता तो सेकण्ड की बात हैं लेकिन प्रत्यक्षता के पहले बापदादा पूछते हैं स्थापना वाले एवररेडी हैं? पर्दा खोलें? कि कोई कान का श्रृंगार कर रहा होगा, कोई माथे का? तैयार हैं? हो जायेंगे, कब? डेट बताओ। जैसे अभी डेट फिक्स की है ना। इस मास के अन्दर सन्देश देना है, **ऐसे सभी एवररेडी, कम से कम 16 हजार तो एवररेडी हों, 9 लाख छोड़ो, उसको भी छोड़ दो। 16 हजार तो तैयार हों?** हैं तैयार? बजायें ताली? ऐसे ही हाँ नहीं करना। **एवररेडी हो जाओ तो बापदादा टच करेगा, ताली बजायेगा, प्रकृति अपना काम शुरू करेगी। साइंस वाले अपना काम शुरू कर देंगे। क्या देरी है, सब रेडी हैं। १६ हजार तैयार हैं?** हैं तैयार? हो जायेंगे। (आपको ज्यादा पता है) यह जवाब तो छुडाने का है। १६ हजार की रिपोर्ट आनी चाहिए एवररेडी, सम्पूर्ण पवित्रता से सम्पन्न हो गये। बापदादा को ताली बजाने में कोई देरी नहीं है। डेट बताओ। (आप डेट दो) सभी से पूछो। **देखो होना तो है ही लेकिन जो सुनाया एक "मैं"" शब्द का सम्पूर्ण परिवर्तन, तब बाप के साथ चलेंगे। नहीं तो पीछे-पीछे चलना पड़ेगा। बापदादा इसीलिए अभी गेट नहीं खोलते हैं क्योंकि साथ चलना है।**

ब्रह्मा बाप सभी बच्चों से पूछते हैं कि गेट खोलने की डेट बताओ। गेट खोलना है ना! चलना है ना! आज मनाना अर्थात् बनना। सिर्फ केक नहीं काटेंगे लेकिन मैं को समाप्त करेंगे। सोच रहे हैं या सोच लिया है? क्योंकि बापदादा के पास अमृतवेले सबके बहुत वैरायटी संकल्प पहुंचते हैं। तो **आपस में राय करना और डेट बाप को बताना। जब तक डेट नहीं फिक्स की है ना, तब तक कोई कार्य नहीं होता। पहले आपस में महारथी डेट फिक्स करो फिर सब फालो करेंगे। फालो करने वाले तैयार हैं और आपकी हिम्मत से और बल मिल जायेगा। जैसे देखो अभी उमंग उल्हास दिलाया तो तैयार हो गये ना! ऐसे सम्पन्न बनने का प्लैन बनाओ। धून लगाओ,**

कर्मातीत बनना ही है। कुछ भी हो जाए बनना ही है, करना ही है, होना ही है। साइंस वालों को भी आवाज, विनाश करने वालों को भी आवाज बाप के कानों में आता है, वह भी कहते हैं क्यों रोकते हैं, क्यों रोकते हैं......। एडवांस पार्टी भी कहती है डेट फिक्स करो, डेट फिक्स करो। ब्रह्मा बाप भी कहते है डेट फिक्स करो। तो यह मीटिंग करो। बाकी सेवा जो कर रहे हैं, बापदादा सन्तुष्ट हैं। हर एक कर रहा है, फारेन भी कर रहा है, भारत में सब ज़ोन वाले भी कर रहे हैं, प्रवृत्ति वाले भी कर रहे हैं, सब कर रहे हैं। इसकी मुबारक हो, सेवा की मुबारक हो, मुबारक हो। **अब यह कमाल करके दिखाओ। दादियों को खास कह रहे हैं, बड़े भाईयों को खास कह रहे हैं। अब दूसरी शिवरात्रि में धमाल और कमाल दोनों साथ-साथ हों। ठीक है। आगे लाइन वाली टीचर्स ठीक हैं? मीटिंग करेंगे ना! बापदादा को अभी डेट चाहिए, ऐसे नहीं हो जायेगा, कर रहे हैं, यह नहीं। यह बहुत हो गया। पहले बच्चे डेट देवें फिर बाप फाइनल करेंगे।** बापदादा तो कहते हैं दूसरी शिवरात्रि पर कमाल और धमाल दोनों साथ हों। अभी करो तैयारी। टीचर्स मंजूर हैं? डबल विदेशी मंजूर हैं? पहली लाइन मंजूर हैं? पाण्डव मंजूर हैं? (हाँ जी) मुबारक हो। **बहुत दु:खी हैं। बापदादा को अभी इतना दु:ख देखा नहीं जाता है। पहले तो पुकार रहे हैं। अभी आवाज पुकार का आपके कानों में गूंजना चाहिए। समय की पुकार का प्रोग्राम करते हो ना! अभी भक्तों की पुकार सुनो, दु:खियों की पुकार भी सुनो।** सेवा में नम्बर अच्छा है, यह तो बापदादा सर्टीफिकेट देते हैं, उमंग-उत्साह अच्छा है, गुजरात ने नम्बरवन लिया, तो नम्बरवन की मुबारक है। **अभी थोड़ी-थोड़ी पुकार सुनो तो सही, बिचारे बहुत पुकार रहे हैं, जिगर से पुकार रहे हैं, तड़फ रहे हैं। साइंस वाले भी बहुत चिल्ला रहे हैं, कब करें, कब करें, कब करें, पुकार रहे हैं। आज भले केक काट लो, लेकिन कल से पुकार सुनना।** मनाना तो संगमयुग के स्वहेज़ हैं। एक तरफ मनाना दूसरे तरफ आत्माओं को बनाना। अच्छा। तो क्या सुना?

आपका गीत है - दु:खियों पर कुछ रहम करो। सिवाए आपके कोई रहम नहीं कर सकता। इसलिए अभी समय प्रमाण रहम के मास्टर सागर बनो। स्वयं पर भी रहम, अन्य आत्माओं पर भी रहम। अभी अपना सही स्वरूप लाइट हाउस बन भिन्न-भिन्न लाइटस की किरणें दो। सारे विश्व की अप्राप्त आत्माओं को प्राप्ति की अंचली की किरणें दो। अच्छा।

एक है स्थापना के आदि रत्न और दूसरे हैं सेवा के आरम्भ के आदि रत्न। दोनों आदि रत्नों का महत्व है। है ना! सेवा के आदि रत्न हैं ना - यह सामने बैठे हैं सब। अच्छा है। समय को समीप लावें।

अभी वह दिन जल्दी लाना है जो विश्व के ग्लोब के ऊपर सर्व आत्मायें खड़ी होकर आप सबके फेस में बाप का झण्डा देखें। कपड़े का झण्डा तो निमित्त मात्र हैं लेकिन एक-एक बच्चे का फेस बाप का चित्र दिखावे। ऐसा झण्डा लहराना है। वह दिन भी बहुत-बहुत-बहुत जल्दी लाना है, आना है, आना है। ओम शान्ति। (28/02/2003)

जब भाग्य विधाता आप बच्चों का बाप है तो आपके सिवाए श्रेष्ठ भाग्य और किसका हो सकता है! बापदादा देख रहे हैं विश्व की अनेक करोड़ आत्मायें हैं लेकिन उन करोड़ों में से ६ लाख परिवार..... कितने थोड़े हैं! कोटों में कोई हो गये ना!

लास्ट अन्तिम पेपर सभी ब्राह्मणों का यही छोटा-सा है - 'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप।'

जीवनमुक्त होने के पहले मेहनत मुक्त बनो। यह स्थिति समय को समीप लायेगी ओर आपके सर्व विश्व के भाई और बहनों को दु:ख, अशान्ति से मुक्त करेगी। **आपकी यह स्थिति आत्माओं के लिए मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेगी। तो अपने भाई-बहनों के ऊपर रहम नहीं आता! कितना चारों ओर आत्मायें चिल्ला रही हैं तो आपकी मुक्ति सर्व को मुक्ति दिलायेगी।** यह चेक करो - नेचरल स्मृति सो समर्थी स्वरूप कहाँ तक बने हैं?

ऐसे ही सब मिलकर एक दो को हिम्मत बढ़ाके यह संकल्प करो - अब समय को समीप लाना ही है। आत्माओं को मुक्ति दिलानी है। लेकिन तब होगा जब आप सोचना स्मृति स्वरूप में लायेंगे।

स्वमान में रहो और सम्मान देकर सहयोगी बनो क्योंकि किसी भी आत्मा को अगर आप दिल से सम्मान देते हो, यह बहुत-बहुत बड़ा पुण्य है क्योंकि कमजोर आत्मा को उमंग उत्साह में लाया तो कितना बड़ा पुण्य है! गिरे हुए को गिराना नहीं, गले लगाना है अर्थात् बाहर से गले नही ंलगाना, गले लगाना अर्थात् बाप समान बनना। सहयोग देना।

बस सम्मान देना और स्वमान में रहना। समर्थ बन समर्थ बनाना। व्यर्थ की बातों में नहीं जाना। जो कमजोर आत्मा हैं ही कमजोर, उसकी कमजोरी को देखते रहेंगे तो सहयोगी कैसे बनेंगे! सहयोग दो तो दुआयें मिलेंगी। सबसे सहज पुरुषार्थ है, और कुछ भी नहीं कर सकते हो तो सबसे सहज पुरुषार्थ है - दुआयें दो, दुआयें लो। सम्मान दो और महिमा योग्य बनो। सम्मान देने वाला ही सर्व द्वारा माननीय बनते हैं। और जितना माननीय बनेंगे, उतना ही राज्य अधिकारी और पूज्य आत्मा बनेंगे। देते जाओ लेने का नहीं, लो और दो यह तो बिजनेस वालों का काम है। आप तो दाता के बच्चे हो।

अनेक आत्माओं का उल्हना भी समाप्त किया। साथ-साथ समय के तीव्र गति की रफ्तार देख बापदादा यही चाहते हैं कि सिर्फ थोड़ी आत्माओं की सेवा नहीं करनी है लेकिन विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तिदाता निमित्त आप हो क्योंकि बाप के साथी हो, तो समय की रफ्तार प्रमाण अभी एक ही समय इकट्ठा तीन सेवायें करनी हैं। एक वाणी, दूसरा स्व-शक्तिशाली स्थिति और तीसरा रूहानी वायब्रेशन।

जो भी सम्बन्ध सम्पर्क में आते हैं उन्हों का कम से कम सन्देश देते रहो, हर एक बिजनेस या इन्डस्ट्री वाले ने अपना-अपना कार्ड छपवाया हुआ है? जिसमें अच्छे से अच्छे शार्ट में ज्ञान का स्लोगन हो, एड्रेस हो और दो शब्दों में

निमन्त्रण हो। ऐसे सबने अपना-अपना कार्ड छपाया है, जिसने छपाया है वह हाथ उठाओ। इतनों ने छपाया ही नहीं है। बिजनेस वाले तो घर बैठे सेवा कर सकते हैं। उल्हना तो नहीं देंगे कि ग्राहक बनकर आपके पास आयें, हमको सन्देश भी नहीं दिया। तो कार्ड जरूर छपाना। ऐसा सुन्दर कार्ड छपाना जो वेस्ट पेपर बॉक्स में कोई डाले नहीं, सम्भाल के रखें। (17/03/2003)

प्युरीटी की रॉयल्टी की मन्सा है - सर्व प्रति शुभ भावना, शुभकामना, कल्याण की भावना, रहम की भावना, दातापन की भावना। और दृष्टि में या तो सदा हर एक के प्रति आत्मिक स्वरूप देखने में आये वा फरिश्ता रूप दिखाई दे। चाहे वह फरिश्ता नहीं बना है, लेकिन मेरी दृष्टि में फरिश्ता रूप और आत्मिक रूप ही हो और कृति अर्थात् सम्पर्क सम्बन्ध में, कर्म में आना, उसमें सदा ही सर्व प्रति स्नेह देना, सुख देना। चाहे दूसरा स्नेह दे, नहीं दे लेकिन मेरा कर्तव्य है स्नेह देकर स्नेही बनाना। सुख देना। स्लोगन है ना - ना दु:ख दो, ना दु:ख लो। देना भी नहीं है, लेना भी नहीं है। देने वाले आपको कभी दु:ख भी दे दें लेकिन आप उसको सुख की स्मृति से देखो। **गिरे हुए को गिराया नहीं जाता है, गिरे हुए को सदा ऊँचा उठाया जाता है। वह आपको परवश होके दु:ख दे रहा है। गिर गया ना। तो उसको गिराना नहीं है और भी उस बिचारे को एक लात लगा लो, ऐसे नहीं। उसको स्नेह से ऊंचा उठाओ। उसमें भी फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम। पहले तो चैरिटी बिगन्स होम है ना, अपने सर्व साथी, सेवा के साथी, ब्राह्मण परिवार के साथी हर एक को ऊंचा उठाओ। वह अपनी बुराई दिखावे भी लेकिन आप उनकी विशेषता देखो। नम्बरवार तो हैं ना! देखो, माला आपका यादगार है। तो सब एक नम्बर तो नहीं है ना! 108 नम्बर हैं ना! तो नम्बरवार हैं और रहेंगे लेकिन मेरा फर्ज क्या है?** यह नहीं सोचना अच्छा मैं 8 में तो हूं ही नहीं, 108 में शायद आ जाऊंगी, आ जाऊंगा। तो 108में लास्ट भी हो सकता है तो मेरे भी तो कुछ संस्कार होंगे ना, लेकिन नहीं। **दूसरे को सुख देते-देते, स्नेह देते-देते**

आपके संस्कार भी स्नेही, सुखी बन ही जाने हैं। यह सेवा है और यह सेवा फर्स्ट चैरिटी बिगन्स एट होम।

यह 10 साल वाले नहीं लेकिन **सभी को अपना निश्चय चाहिए कुछ भी हो जाए, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, साथ राज्य में आयेंगे। पक्का है ना! साथ रहेंगे ना! बाप को अकेला छोड़के नहीं चले जाना। अकेला थोड़ेही अच्छा लगेगा। आपको भी अच्छा नहीं लगेगा, बाप को भी अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए छोड़ना नहीं। कोई भी बात आवे आप दिल से बोलो बाबा, मेरा बाबा, बाब हाजिर है। आपकी समस्या को हल कर देंगे। दिल से बोलना, बाबा यह बात है, बाबा यह करो, बाबा यह..... बाप फिर बंधा हुआ है। लेकिन दिल से,** ऐसे नहीं मतलब के टाइम याद करो और फिर भूल जाओ।

सोचने वाले नहीं बनना, निभाने वाले। जब मेरा कह दिया, मेरा बाबा और बाबा ने भी कहा मेरा बच्चा, पक्का सौदा हो गया ना! दादियां ठीक हैं? फारेनर्स को देखके खुश हो रही है ना! बहुत खुशी। दादी को तो बहुत उमंग आता है। अगर कुछ हो सके ना, तो दादी सबको यहाँ ही बिठा देवे। यह सब हाजिर हैं कि सोचेंगे, लण्डन के डायमण्ड हॉल का क्या होगा? नहीं, यह सब एवररेडी हैं। **अगर बापदादा ऑर्डर करे आ जाओ, कुछ भी सोचो नहीं, सेवा को, सेन्टर को, साथियों को कुछ नहीं सोचो, आ जाओ, तो आ जायेंगे? (हाँ जी) अच्छा है। वह दिन भी आयेगा, ऑर्डर आयेगा आ जाओ क्योंकि बाप का प्यार है ना, तो अलग-अलग नहीं करके, साथ चलेंगे। जो पक्के होंगे वह रहेंगे।** (17/10/2003)

नम्बरवन ब्रह्मा की आत्मा ने प्रत्यक्ष साकार रूप में भी फरिश्ता जीवन का अनुभव कराया और फरिश्ता स्वरूप बन गया। **उसी फरिश्ते रूप के साथ आप सभी को भी फरिश्ता बन परमधाम में चलना है। तो इसके लिए मन की एकाग्रता पर अटेन्शन दो। ऑर्डर से मन को चलाओ।**

इतनी आपको प्राप्ति हुई, बाप मिला, खजाना मिला, पालना मिली, कम से कम अपने भाई-बहनों को सन्देश तो पहुंचाना चाहिए। उल्हना तो नहीं देंगे ना कि हमको पता ही नहीं। तो सन्देश जरूर देना, आवश्यक है।

यह वहाँ का आवाज इन्डिया में आवे। इन्डिया के कुम्भकरण तो विदेश से जागने हैं ना! तो विदेश की खबर का महत्त्व होता है। प्रोग्राम भारत में हो और समाचार विदेश की अखबारों से पहुंचे तब फैलेगा। भारत का आवाज विदेश में पहुंचो और विदेश का आवाज भारत में पहुंचे, उसका प्रभाव होता है। अच्छा।

ब्राह्मण माना ही है पवित्र आत्मा। अपवित्रता का अगर कोई कार्य होता भी है तो यह बड़ा पाप है। इस पाप की सजा बहत कड़ी है। ऐसे नहीं समझना यह तो चलता ही है। थोड़ा बहुत तो चलेगा ही, नहीं। यह फर्स्ट सबजेक्ट है। नवीनता ही पवित्रता की है। ब्रह्मा बाप ने अगर गालियां खाई तो पवित्रता के कारण। हो गया, ऐसे छूटेंगे नहीं। अलबेले नहीं बनो इसमें। कोई भी ब्राह्मण चाहे सरेन्डर है, चाहे सेवाधारी है, चाहे प्रवृत्ति वाला है, इस बात में धर्मराज भी नहीं छोड़ेगा, ब्रह्मा बाप भी धर्मराज को साथ देगा। इसलिए कुमार कुमारियां कहाँ भी हो, मधुबन में हो, सेन्टर पर हो लेकिन इसकी चोट, संकल्प मात्र की चोट बहुत बड़ी चोट है। गीत गाते हो ना - पवित्र मन रखो..... गीत है ना आपका। तो मन पवित्र है तो जीवन पवित्र है इसमें हल्के नहीं होना, थोड़ा कर लिया क्या है! थोड़ा नहीं है, बहुत है। बापदादा ऑफिशियल इशारा दे रहा है, इसमें नहीं बच सकेंगे। इसका हिसाब-किताब अच्छी तरह से लेंगे, कोई भी हो। इसलिए सावधान अटेन्शन। सुना - सभी ने ध्यान से। दोनों कान खोल के सुनना। वृत्ति में भी टचिंग नहीं हो। दृष्टि में भी टचिंग नहीं। संकल्प में नहीं तो वृत्ति दृष्टि क्या है! क्योंकि समय सम्पन्नता का समीप आ रहा है, बिल्कुल प्युअर बनने का। उसमें यह चीज़ तो पूरा ही सफेद कागज पर काला दाग है।

बापदादा जब देखते हैं ना एक-एक को, तो सोचते हैं इनको बुलाके बात करें लेकिन साकार शरीर माना बंधन। साकार शरीर के बंधन में आ गये ना, साकार शरीर के बंधन में इतना कर नहीं सकते लेकिन वतन में कर सकते

हैं इसीलिए तो बंधनमुक्त हो गये ना। वहाँ जगह का सवाल नहीं, समय का सवाल नहीं लेकिन **आपको पता है, एक गुप्त बात बताते हैं, बापदादा वतन में ग्रुप-ग्रुप को बुलाते हैं और उनसे रूहरिहान भी करते हैं। जैसे साकर में याद है - ब्रह्मा बाप ने एक एक ग्रुप को अपने पास भोजन पर बुलाया था, याद है? (क्लिफ्टन पर) ऐसे बापदादा वतन में बुलाते जरूर हैं लेकिन साकार में बैठ नहीं सकते।** (15/11/2003)

अभी समय की समीपता, बाप समान बनने की समीपता समाधान स्वरूप का अनुभव कराये। बहुत समय समस्या का आना, समाधान करना यह मेहनत की, अब बापदादा हर एक बच्चे को स्वमानधारी, स्वराज्य अधिकारी, समाधान स्वरूप में देखने चाहते हैं। अनुभवी मूर्त सेकण्ड में परिवर्तन कर सकता है।

साथ में अभी समय अनुसार कभी भी कुछ भी हो सकता है, प्रश्न नहीं पूछो कब होगा, एक साल में होगा, ६ मास में होगा। **अचानक कुछ भी किसी समय भी हो सकता है** इसलिए अपने स्मृति स्वरूप का स्विच बहुत पावरफुल बनाओ। सेकण्ड में स्विच ऑन और अनुभव स्वरूप बन जाओ। स्विच ढीला होता है ना तो घड़ी-घड़ी ऑन-ऑफ करना पड़ता है और समय लगता है, ठीक होने में। लेकिन सेकण्ड में स्विच ऑन स्वमान का, स्वराज्य अधिकारी का, **अन्तर्मुखी होकर अनुभव करते जाओ।** अनुभवों के सागर में समा जाओ। अनुभव की अथॉरिटी को कोई भी आत्मा जीत नहीं सकती। समझा, क्या करना है? बापदादा इशारा तो दे देता है लेकिन इन्तजार नहीं करो, कब-कब-कब नहीं अब। एवररेडी। सेकण्ड में स्मृति का स्वीच ऑन कर सकते हो? कर सकते हो? कैसे भी सरकमस्टांश हों, कैसी भी समस्या हो, स्मृति का स्विच ऑन करो। **यह अभ्यास करो क्योंकि फाइनल पेपर सेकण्ड का ही होना है, मिनट भी नहीं। सोचने वाला नहीं पास हो सकेगा, अनुभव वाला पास हो जायेगा।** तो अभी सेकण्ड में सभी 'मैं परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मा

हूँ’ इस स्मृति के स्विच को ऑन करो और कोई भी स्मृति नहीं हो। कोई बुद्धि में हलचल नहीं हो, अचल। (30/11/2003)

आपको तरस नहीं आता, इतना दु:ख देख करके? अभी परिवर्तन हो तो अच्छा है ना? तो अभी प्रत्यक्षता का प्लैन है - प्रैक्टिकल जीवन। बाकी प्रोग्राम करते हो, यह तो बिजी रहने के लिए बहुत अच्छा है लेकिन प्रत्यक्षता होगी आपके चलन और चेहरे से।

अभी कर्म तक लाते जाओ, वाणी तक लाओ, चेहरे तक लाओ, चलन में लाओ। तभी कहेंगे, जो आपका गीत है ना, शक्तियां आ गई......। सब शिव शक्तियां हैं। पाण्डव भी शक्तियां हो। फिर शक्तियां शिव बाप को प्रत्यक्ष करेंगी। **अभी छोटे-छोटे खेलपाल बन्द करो। अब वानप्रस्थ स्थिति को इमर्ज करो।** तो बापदादा सभी बच्चों को, इस समय बापदादा की आशाओं को पूर्ण करने वाले आशाओं के सितारे को देख रहे हैं। कोई भी बात आवे तो यह स्लोगन याद रखना - ‘परिवर्तन, परिवर्तन, परिवर्तन’। (15/12/2003)

ब्रह्मा बाप के समान बनना है तो ब्रह्मा बाप का विशेष चरित्र क्या देखा? आदि से लेकर अन्त तक हर बात में, मैं कहा या बाबा कहा? मैं कर रहा हूँ, नहीं, बाबा करा रहा है। किससे मिलने आये हो? बाबा से मिलने आये हो। मैं-पन का अभाव, अविद्या, यह देखा ना! देखा? हर मुरली में बाबा, बाबा कितना बार याद दिलाते हैं? तो समान बनना, इसका अर्थ ही हैं पहले मैं-पन का अभाव हो। पहले सुनाया है - कि ब्राह्मणों का मैं-पन भी बहुत रॉयल है। याद है ना? सुनाया था ना! सब चाहते हैं कि बापदादा की प्रत्यक्षता हो। बापदादा की प्रत्यक्षता करें। प्लैन बहुत बनाते हो। अच्छे प्लैन बनाते हो, बापदादा खुश है। लेकिन **यह रॉयल रूप का मैं-पन प्लैन में, सफलता में कुछ परसेन्टेज कम कर देता है। नेचुरल संकल्प में, बोल में, कर्म में, हर संकल्प में बाबा, बाबा स्मृति में हो। मैं-पन नहीं। बापदादा करावनहार करा रहा है। जगतअम्बा की यही विशेष धारणा**

रही। जगत अम्बा का स्लोगन याद है, पुरानों को याद होगा। है याद? बोलो, (हुक्मी हुक्म चला रहा) यह थी विशेष धारणा जगत अम्बा की। तो नम्बर लेना है, समान बनना है तो मैं-पन खत्म हो जाए। मुख से ऑटोमेटिक बाबा-बाबा शब्द निकले। कर्म में, आपकी सूरत में बाप की मूरत दिखाई दे तब प्रत्यक्षता होगी।

माइक माना जिसके आवाज मे ताकत हो, माइक उसको कहा जाता है। चाहे प्रेजीडेन्ट हो, प्राइममिनिस्टर हो लेकिन आवाज में ताकत नहीं तो माइक नहीं। माइक वह जिसकी आवाज में ताकत हो, ऐसा माइक तैयार करो। किसी भी रीति से बेधड़क होके माइक बनके आवाज करे, ऐसा माइक चाहिए। ऐसा माइक नहीं जो अपने ही समाज में करे। माइक तो बड़े आवाज वाला चाहिए।

अमृतवेले योग के बाद, योग के टाइम नहीं करना लेकिन योग के बाद दिमाग में ताकत होती है उस समय सोचो, तो टचिंग हो जायेगी।

बापदादा एक-एक बच्चे का चेहरा, बापदादा का मुखड़ा देखने का दर्पण बनाने चाहते हैं। आपके दर्पण में बापदादा दिखाई दे। तो ऐसा विचित्र दर्पण बापदादा को गिफ्ट में दो। दुनिया में तो ऐसा कोई दर्पण है ही नहीं जिसमें परमात्मा दिखाई दे। (31/12/2003)

वेस्ट को बेस्ट में चेन्ज करो। बचत की स्कीम बनाओ। परसेन्टेज निकालो - सारे दिन में वेस्ट कितना हुआ, बेस्ट कितना हुआ? अगर मानो 40 परसेन्ट बेस्ट है, 20 परसेन्ट वेस्ट है तो उसको बचाओ। ऐसे नहीं समझो थोड़ा सा ही तो वेस्ट जाता है, बाकी तो सारा दिन ठीक रहता है। लेकिन यह वेस्ट की आदत बहुत समय की आदत होने के कारण लास्ट घड़ी में धोखा दे सकती है। नम्बर वार बना देगी, नम्बरवन नहीं बनने देगी। जैसे ब्रह्मा बाप ने आदि में अपनी चेकिंग के कारण रोज़ रात को दरबार लगाई। किसकी दरबार? बच्चों की नहीं, अपनी ही कर्मेन्द्रियों की दरबार लगाई। ऑर्डर चलाया - हे मन मुख्य मंत्री यह तुम्हारी चलन अच्छी नहीं, ऑर्डर में चलो। हे संस्कार ऑर्डर में चलो। क्या नीचे

ऊपर हुआ, कारण बताओ, निवारण करो। हर रोज़ ऑफीशल दरबार लगाई। ऐसे रोज़ अपनी स्वराज्य दरबार लगाओ।

बहुतकाल के पुरुषार्थ से, बहुतकाल के राज्य भाग्य की प्राप्ति है। अगर आप सोचो कि अन्त के समय बेहद का वैराग्य तो आ ही जायेगा, लेकिन अन्त समय आयेगा तो बहुतकाल हुआ या थोड़ा काल हुआ? बहुतकाल तो नहीं कहेंगे ना! तो 21 जन्म पूरा ही स्वराज्य अधिकारी बनें, तख्त पर भले नहीं बैठें, लेकिन राज्य अधिकारी हों। यह बहुतकाल (पुरुषार्थ का), बहुतकाल की प्रालब्ध का कनेक्शन है। इसीलिए अलबेले नहीं बनना, अभी तो विनाश की डेट फिक्स ही नहीं है, पता ही नहीं। 8 वर्ष होगा, 10 वर्ष होगा, पता तो है ही नहीं। तो आने वाले समय में हो जायेंगे, नहीं। विश्व के अन्तकाल सोचने के पहले अपने जन्म का अन्तकाल सोचो, आपके पास डेट फिक्स है, किसके पास पता है कि इस डेट पर मेरा मृत्यु होना है? है किसके पास? नहीं है ना! **विश्व का अन्त तो होना ही है, समय पर होगा ही लेकिन पहले अपनी अन्तकाल सोचो ओर जगदम्बा का स्लोगन याद करो - क्या स्लोगन था? हर घड़ी अपनी अन्तिम घड़ी समझो। अचानक होना है। डेट नहीं बताई जायेगी। ना विश्व की, ना आपके अन्तिम घड़ी की। सब अचानक का खेल है।** इसलिए दरबार लगाओ, हे राजे, स्वराज्य अधिकारी रोज अपनी दरबार लगाओ। ऑर्डर में चलाओ क्योंकि भविष्य का गायन है, लॉ एण्ड ऑर्डर होगा। स्वतः ही होगा। लव और लॉ दोनों का बैलेन्स होगा।

वेस्ट खत्म क्योंकि आपके सफलतामूर्त बनने से आत्माओं को तृप्ति की सफलता प्राप्त होगी। निराशा से चारों ओर शुभ आशाओं के दीप जगेंगे। कोई भी सफलता होती है तो दीपक तो जगते हैं ना! अब विश्व में आशाओं के दीप जगाओ। हर आत्मा के अन्दर कोई न कोई निराशा है ही, निराशाओं के कारण परेशान हैं, टेन्शन में हैं। तो हे अविनाशी दीपकों अब आशाओं के दीपकों की दीवाली मनाओ। पहले स्व फिर सर्व। सुना!

ब्रह्मा बाप ने भी मालिक बन अन्दर ही अन्दर ऐसा सूक्ष्म पुरुषार्थ किया जो आपको पता पड़ा, सम्पन्न कैसे बन गया? पंछी उड़ गया। पिंजड़ा खुल गया। साकार दुनिया के हिसाब-किताब का, साकार के तन का पिंजड़ा खुल गया, पंछी उड़ गया। अभी ब्रह्मा बाप भी बहुत सिक व प्रेम से बच्चों को जल्दी आओ, जल्दी आओ, अभी आओ, अभी आओ, यह आह्वान कर रहे हैं। तो पंख मिल गये हैं ना। बस सभी एक सेकण्ड में अपने दिल में यह ड्रिल करो, अभी-अभी करो। सब संकल्प समाप्त करो, यही ड्रिल करो 'ओ बाबा, मीठे बाबा, प्यारे बाबा हम आपके समान अव्यक्त रूपधारी बनें कि बने।'

सिर्फ सेवा करते डबल लाइट रहना। कोई भी बोझ अपने ऊपर नहीं रखना। जैसे ब्रह्मा बाप के पास कितनी जिम्मेवारियां थी, फिर भी डबल लाइट रहा, ऐसे फालो फादर। कोई भी बोझ हो, बाप को देकर हल्के हो जाना, बाप आये ही हैं बोझ लेने के लिए, तो बोझ देना आता है ना। तो बोझ देकर डबल लाइट बन उड़ते रहना। (18/01/2004)

आज चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ बच्चों को देख रहे हैं। हर एक बच्चा पूर्वज भी हैं और पूज्य भी है। इसलिए इस कल्प वृक्ष के आप सभी जड़ हैं, तना भी हैं। तना का कनेक्शन सारे वृक्ष के टाल टालियों से, पत्तों से स्वत: ही होता है। तो सभी अपने को ऐसी श्रेष्ठ आत्मा सारे वृक्ष के पूर्वज समझते हो? जैसे ब्रह्मा को ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर कहा जाता है, उनके साथी आप भी मास्टर ग्रेट ग्रैण्ड फादर हो। पूर्वज आत्माओं को कितना स्वमान हैं! उस नशे में रहते हो? **सारे विश्व की आत्माओं से चाहे किसी भी धर्म की आत्मायें हैं लेकिन सर्व आत्माओं के आप तना के रूप में आधारमूर्त पूर्वज हो।** इसीलिए पूर्वज होने के कारण पूज्य भी हो। पूर्वज द्वारा हर आत्मा को सकाश स्वत: ही मिलती रहती है। झाड़ को देखो, तना द्वारा, जड़ द्वारा लास्ट पत्ते को भी सकाश मिलती रहती है। पूर्वज का कार्य क्या होता है? **पूर्वजों का कार्य है सर्व की पालना**

करना। लौकिक में भी देखो पूर्वजों द्वारा ही चाहे शारिरीक शक्ति की पालना, स्थूल भोजन द्वारा व पढ़ाई द्वारा शक्ति भरने की पालना होती है। तो आप पूर्वज आत्माओं की पालना, बाप द्वारा मिली हुई शक्तियों से सर्व आत्माओं की पालना करना है।

आज के समय अनुसार सर्व आत्माओं को शक्तियों द्वारा पालना की आवश्यकता है। जानते हो आजकल आत्माओं में अशान्ति और दु:ख की लहर छाई हुई है। तो आप पूर्वज और पूज्य आत्माओं को अपने वंशावली के ऊपर रहम आता है? जैसे जब कोई विशेष अशान्ति का वायुमण्डल होता है तो विशेष रूप से मिलेट्री या पुलिस अलर्ट हो जाती है। ऐसे ही आजकल के वातावरण में आप पूर्वज भी विशेष सेवा के अर्थ स्वयं को निमित्त समझते हो! सारे विश्व की आत्माओं के निमित्त हैं, यह स्मृति रहती है? सारे विश्व की आत्माओं को आज आपके सकाश की आवश्यकता है। ऐसे बेहद के विश्व की पूर्वज आत्मा अपने को अनुभव करते हो? विश्व की सेवा याद आती है वा अपने सेन्टर्स की सेवा याद आती है? **आज आत्मायें आप पूर्वज देव आत्माओं को पुकार रही हैं। हर एक अपने-अपने भिन्न-भिन्न देवियां वा देवताओं को पुकार रहे हैं - आओ, क्षमा करो, कृपा करो। तो भक्तों का आवाज सुनने आता है?** आता है सुनने या नहीं? कोई भी धर्म की आत्मायें हैं, जब उनसे मिलते हो तो अपने को सर्व आत्माओं के पूर्वज समझकर मिलते हो? ऐसा अनुभव होता है कि यह भी हम पूर्वज की ही टाल-टालियां हैं! इन्हों को भी सकाश देने वाले आप पूर्वज हो। अपने कल्पवृक्ष का चित्र सामने लाओ, अपने को देखो आपका स्थान कहाँ हैं! जड़ में भी आप हो, तना भी आप हो। साथ में परमधाम में भी देखो आप पूर्वज आत्माओं का स्थान बाप के समीप का है। जानते हो ना! इसी नशे से कोई भी आत्मा से मिलते हो तो हर धर्म की आत्मा आपको यह हमारे हैं, अपने हैं, उस दृष्टि से देखते हैं। अगर उस पूर्वज के नशे से, स्मृति से, वृत्ति से, दृष्टि से मिलते हो, तो उन्हों को भी अपनेपन का आभास होता है क्योंकि आप सर्व के पूर्वज हो, सबके हो। ऐसी स्मृति से सेवा

करने से हर आत्मा अनुभव करेगी कि यह हमारे ही पूर्वज वा ईष्ट फिर से हमें मिले गये।

हर समय चेक करो - मुझ देव आत्मा, ब्राह्मण आत्मा का श्रेष्ठ कर्तव्य, श्रेष्ठ सेवा क्या है? 'दुआयें देना और दुआयें लेना।' आपके जड़ चित्र क्या सेवा करते हैं? कैसी भी आत्मा हो लेकिन दुआयें लेने जाते, दुआयें लेकर आते। और कोई भी अगर पुरुषार्थ में मेहनत समझते हैं तो सबसे सहज पुरुषार्थ है, सारा दिन दृष्टि, वृत्ति, बोल, भावना सबसे दुआयें दो, दुआयें लो। आपका टाइटल है, वरदान ही है महादानी, सेवा करते, कार्य में सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सिर्फ यही कार्य करो - दुआयें दो और दुआयें लो। यह मुश्किल है क्या? कि सहज है? जो समझते हैं सहज है, वह हाथ उठाओ। कोई आपका ऑपोजिशन करे तो? तो भी दुआ देंगे? देंगे? इतनी दुआओं का स्टॉक है आपके पास? ऑपोजीशन तो होगी क्योंकि ऑपोजीशन ही पोजीशन तक पहुंचाती है। देखो, सबसे ज्यादा ऑपोजीशन ब्रह्मा बाप की हुई। हुई ना? और पोजीशन किसने नम्बरवन पाई? ब्रह्मा ने पाई ना! कुछ भी हो लेकिन मुझे ब्रह्मा बाप समान दुआयें देनी हैं। क्या ब्रह्मा बाप के आगे व्यर्थ बोलने, व्यर्थ करने वाले नहीं थे? लेकिन ब्रह्मा बाप ने दुआयें दी, दुआयें ली, समाने की शक्ति रखी। बच्चा है, बदल जायेगा। ऐसे ही आप भी यही वृत्ति, दृष्टि रखो - यह कल्प पहले वाले हमारे ही परिवार के, ब्राह्मण परिवार के हैं। मुझे बदल इसको भी बदलना है। यह बदले तो मैं बदलूं, नहीं। मुझे बदलके बदलना है, मेरी जिम्मेवारी हैं। तब दुआ निकलेगी और दुआ मिलेगी।

अभी समय जल्दी से परिवर्तन की ओर जा रहा है, अति में जा रहा है लेकिन समय परिवर्तन के पहले आप विश्व परिवर्तक श्रेष्ठ आत्मायें स्व परिवर्तन द्वारा सर्व के परिवर्तन के आधारमूर्त बनो। आप भी विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हो। हर एक आत्मा लक्ष्य रखो - मुझे निमित्त बनना है।

बापदादा के पास एडवांस पार्टी बार-बार आती हैं। वह कहती है हमें तो एडवांस पार्टी का पार्ट दिया, वह बजा रहे हैं लेकिन हमारे साथी

एडवांस स्टेज क्यों नहीं बनाते? अभी उत्तर क्या दें? क्या उत्तर दें? एडवांस स्टेज और एडवांस पार्टी का पार्ट, जब दोनों मिले तब तो समाप्ति होगी। तो वह पूछते हैं तो क्या जवाब दें? कितने साल में बनेंगी? **सब मना लिया, सिल्वर जुबली, गोल्डन जुबली, डायमण्ड जुबली सब मना लिया। अभी एडवांस स्टेज सेरीमनी मनाओ।** उसकी डेट फिक्स करो। पाण्डव बताओ, डेट होगी उसकी? पहली लाइन वाले बोलो। डेट फिक्स होगी कि अचानक होगा? क्या होगा? अचानक होगा कि हो जायेगा? बोलो, कुछ बोलो। सोच रहे हैं क्या? निर्वैर से पूछ रहे हैं? सेरीमनी होगी या अचानक होगा? आप दादी सेपूछ रहे हो? यह दादी को देख रहा है कि दादी कुछ बोले। आप बताओ, रमेश को कहते हैं बताओ? (आखिर तो यह होना ही है) आखिर भी कब? (आप डेट बताओ, उस डेट तक कर लेंगे) अच्छा - बापदादा ने एक साल की एक्स्ट्रा डेट दी है। हिम्मत से एक्सट्रा मदद मिलेगी।

अभी से लक्ष्य रखेंगे - करना ही है, तो बहुतकाल एड हो जायेगा क्योंकि बहुतकाल का भी हिसाब है ना! अगर अन्त में करेंगे तो बहुतकाल का हिसाब ठीक नहीं होगा। इसलिए अभी से अटेन्शन प्लीज़।

अभी बापदादा की यही सभी बच्चों को शुभ राय है वा श्रीमत है कि ऐसा ग्रुप तैयार करो जो यह आवाज फैलाये कि यही परमात्म कार्य है। ऐसा ग्रुप तैयार करो जो निर्भय होकर, निरसंकोच बाप को प्रत्यक्ष करे, दृढ़ता से बोले, अथॉरिटी से बोले। आजकल के जमाने में स्थूल अथॉरिटी भी काम में आती है। लौकिक अथॉरिटी और परमात्म अर्थारिटी दोनों अथॉरिटी वाले आवाज फैला सकते हैं। तो एसा ग्रुप तैयार करो। चाहे हर वर्ग अपने-अपने वर्ग से तैयार करें, चाहे कोई भी करे लेकिन अभी अथॉरिटी से बोलने वाले निकालो। जिनके आवाज का, अनुभव का, अथॉरिटी का प्रभाव पड़े। समझा क्या करना है?

निमित्त भाव, यह गुणों की खान है। सिर्फ हर समय निमित्त भाव आ जाए तो और सभी गुण सहज आ सकते हैं क्योंकि निमित्त भाव में मैं-

पन नहीं है और मैं-पन ही हलचल में लाता है। निमित्त बनने से मेरा-पन भी खत्म, तेरा, तेरा हो जाता है। सहजयोगी बन जाते हैं। (02/02/2004)

कोई न कोई तो सम्बन्ध में आता ही है, उसकी और कोई खातिरी भल नहीं करो लेकिन हर एक को दिलखुश मिठाई जरूर खिलाओ। यह जो यहाँ भण्डारे में बनती है वह नहीं। दिल खुश कर दो। तो दिल खुश करना अर्थात् दिल खुश मिठाई खिलाना। खिलायेंगे! उसमें तो कोई मेहनत नहीं है। न टाइम एक्सट्रा देना है, न मेहनत है। शुभ भावना से दिल खुश मिठाई खिलाओ। आप भी खुश, वह भी खुश और क्या चाहिए। तो खुश रहेंगे और खुशी देंगे, कभी भी आप सभी का चेहरा ज्यादा गम्भीर नहीं होना चाहिए। टू मच गम्भीर भी अच्छा नहीं लगता है। मुस्कुराहट तो होनी चाहिए ना। गम्भीर बनना अच्छा है, लेकिन टू मच गम्भीर होते हैं ना, तो वह ऐसे होते हैं जैसे पता नहीं कहाँ गायब है। देख भी रहे हैं लेकिन गायब। बोल भी रहे हैं लेकिन गायब रूप में बोल रहे हैं। तो वह चेहरा अच्छा नहीं। चेहरा सदा मुस्कुराता रहे। चेहरा सीरियस नहीं करना। क्या करें, कैसे करें तो सीरियस हो जाते हो। बहुत मेहनत है, बहुत काम है..... सीरियस हो जाते हो लेकिन जितना बहुत काम उतना ज्यादा मुस्कुराना। मुस्कुराना आता है ना? आता है? आपके जड़ चित्र देखो कभी ऐसे सीरियस हैं क्या! अगर सीरियस दिखावे तो कहते हैं आर्टिस्ट ठीक नहीं है। तो अगर आप भी सीरियस रहते हो तो कहेंगे इसको जीने का आर्ट नहीं आता है। इसलिए क्या करेंगे?

सभी दादियों से, दादी जानकी से:- चक्रवर्ती के संस्कार ज्यादा हैं। चक्रवर्ती बनके चक्कर लगाना अच्छा लगता है। (बाबा को सब देखें ना) देखना ही है। **सिर्फ बच्चे थोड़े से एवररेडी हो जायें ना। एवरी टाइम एवररेडी, तो ठका हो जायेगा। देखेंगे, बोलेंगे भी। अहो प्रभू भी तो बोलेंगे। लेकिन खुशी से नहीं, पश्चाताप के रूप में। लेकिन बोलेंगे जरूर।**

अभी वह दिन समीप लाना है जो हर एक आत्मा के दिल में बाप के प्रत्यक्षता का झण्डा लहराये। **हर दिल कहे मेरा बाबा। जो पाना था वह पा लिया, इस गीत पर डांस करें।** वह दिन भी दूर नहीं है। वाह! बाबा वाह! वाह! बाप के सिकीलधे बच्चे वाह! यह खूब नारा लगेगा। तो आज बापदादा सिर्फ यह झण्डा नहीं देख रहे हैं लेकिन हर एक बच्चे के दिल में जो बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरा रहा है वह देख रहे हैं। (17/02/2004)

क्या है कि एक तरफ एडवांस पार्टी बापदादा को बार-बार कहती है - कब तक, कब तक, कब तक? दूसरा - प्रकृति भी बाप को अर्जी करती है, अभी परिवर्तन करो। ब्रह्मा बाप भी कहते हैं कि अब कब परमधाम का दरवाजा खोलेंगे? साथ में चलना है ना, रह तो नहीं जाना है ना! साथ चलेंगे ना! साथ में गेट खोलेंगे! चाहे चाबी ब्रह्मा बाबा लगायेगा, लेकिन साथ तो होंगे ना! तो अभी यह परिवर्तन करो।

आपका गायन है - मर्सीफुल। आप मर्सीफुल देवियां और देवतायें हो ना! तो रहम नहीं आता है? अपने भाई बहनें इतने दु:खी हैं, उन्हों का दु:ख देख करके रहम नहीं आता? आता है रहम? तो संस्कार बदलो, तो संसार बदल जायेगा। जब तक संस्कार नहीं बदले हैं, तब तक संसार नहीं बदल सकता। तो क्या करेंगे?

बापदादा की बात याद रखना - भूल नहीं जाना। अभी पुराने संस्कारों की समाप्ति की सेरीमनी मनायेंगे, पसन्द है ना! उस सेरीमनी में आपको बुलायेंगे। जो करेगा, उसको बुलायेंगे। (05/03/2004)

समय की रफ्तार तेज़ है, स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसे तीव्र होनी है और जब परिवर्तन कहते हैं तो परिवर्तन के आगे पहले स्व शब्द सदा याद रखो। परिवर्तन नहीं, स्व-परिवर्तन।

संसार की गति तो अति में जा रही है। लेकिन संस्कार परिवर्तन उसकी गति इतनी फास्ट है? अभी एक बात जो रही है कि यही एक है, यही एक है,

यही एक है.... यह आवाज फैले। ब्रह्माकुमारियां काम अच्छा कर रही हैं, कर सकती हैं, यहाँ तक तो आये हैं लेकिन यही एक हैं और परमात्म ज्ञान है। बाप को प्रत्यक्ष करने वाला बेधड़क बोले। **आप बोलते हो परमात्मा कार्य करा रहा है, परमात्मा का कार्य है लेकिन वह कहे कि जिस परमात्मा बाप को सभी पुकार रहे हैं वह ज्ञान है। अभी यह अनुभव कराओ। जैसे आपके दिल में हर समय क्या है? बाबा, बाबा, बाबा... ऐसे कोई ग्रुप निकले। अच्छा है, कर सकते हैं, यहाँ तक तो ठीक है। परिवर्तन हुआ है। लेकिन लास्ट परिवर्तन है - एक है, एक है, एक है। वह होगा जब ब्राह्मण परिवार एकरस स्थिति वाले हो जाये। अभी स्थिति बदलती रहती है। एकरस स्थिति एक को प्रत्यक्ष करेगी।** (15/10/2004)

अलग-अलग बातों में धारणा करने केलिए जो मेहनत करते हो, उससे छूट जायेंगे क्योंकि बापदादा देख रहे हैं, कि समय की गति तीव्र हो रही है। समय इन्तज़ार कर रहा है, तो आप सभी को इन्तजाम करना है। समय का इन्तज़ार समाप्त करना है। क्या इन्तज़ाम करना है? अपने सम्पूर्णता और समानता की गति तीव्र करनी है। (02/11/2004)

बापदादा के पास दो ग्रुप बार-बार आते हैं, किसलिए आते हैं? दोनों ग्रुप बापदादा को कहते हैं - हम तैयार हैं। एक यह समय, प्रकृति और माया। माया समझ गई है अब हमारा राज्य जाने वाला है। और दूसरा ग्रुप है - एड़वांस पार्टी। दोनों ग्रुप ड़ेट पूछ रहे हैं।

समाप्ति, सम्पन्नता, बाप के समान बनने की ड़ेट कौन सी है? वह बापदादा से पूछते हैं। **यह ड़ेट अभी आप ब्राह्मणों को फिक्स करनी है।** हो सकती है? ड़ेट फिक्स हो सकती है? पाण्ड़व बोलो, तीनों ही बोलो। (बापदादा निर्वैर भाई, रमेश भाई, बृजमोहन भाई से पूछ रहे हैं) ड़ेट फिक्स हो सकती है? बोलो - हो सकती है? कि अचानक होनी है? ड्रामा में फिक्स है लेकिन उसको प्रैक्किल में लाना है या नहीं? वह क्या? बताओ। होनी है? अचानक होगा?

ड़ेट फिक्स नहीं होगी? होगी? पहली लाइन वाले बताओ होगी? **जो कहते हैं ड्रामा को प्रैक्टिकल में लाने के लिए मन में ड़ेट का संकल्प करना पड़ेगा,** वह हाथ उठाओ। करना पड़ेगा? यह नहीं उठा रहे हैं? अचानक होगी? ड़ेट फिक्स कर सकते हैं? पीछें वालों ने समझ लिया? **अचानक होना है यह राइट है लेकिन अपने को तैयार करने के लिए लक्ष्य जरूर रखना पड़ेगा। बिना लक्ष्य के सम्पन्न बनने में अलबेलापन आ जाता है। आप देखो जब ड़ेट फिक्स करते हो तभी सफलता मिलती है। कोई भी प्रोग्राम की ड़ेट फिक्स करते हो ना? बनना ही है, यह संकल्प तो करना पड़ेगा ना!** या नहीं आपेही हो जायेगा, ड्रामा में? क्या समझते हो? यह पहली लाइन बताओ। प्रेम (देहरादून) सुनाओ। करना पड़ेगा, करना पड़ेगा। जयन्ती बोलो, करना पड़ेगा। वह कब होगी? अन्त में होगी जब समय आ जायेगा! **समय सम्पन्न बनायेगा या आप समय को समीप लायेंगे?**

अभी बापदादा विशेष निमित्त बच्चों को यह होम वर्क दे रहा है कि अभी ब्रह्मा बाप समान अव्यक्त रूप दिखाई दे। चलन और चेहरे से कम से कम 108 माला के दाने तो दिखाई देवें। बापदादा नाम नहीं चाहते हैं, नाम नहीं बताते हैं - 108 कौन हैं लेकिन उनकी चलन और चेहरा स्वत: ही प्रत्यक्ष हो।

बापदादा नाम नहीं एनाउन्स करेगा लेकिन उनका चेहरा बतायेगा - यह हैं। हिम्मत है?

देखा जाता है कि अभी समय की रफ्तार तेज जा रही है, रचना को तेज नहीं जाना चाहिए, रचता को तेज होना चाहिए। अभी थोड़ा फास्ट करो, उड़ो अभी। चल रहे हैं नहीं, उड़ रहे हैं।

पुरुषार्थ में तीव्र पुरुषार्थी बन अब आत्माओं को दु:ख अशान्ति से छुड़ाने का और तीव्र पुरुषार्थ करो। दु:ख, अशान्ति, भ्रष्टाचार अति में जा रहा है, अभी अति का अन्त कर सभी को मुक्तिधाम का वर्सा बाप से दिलाओ। (30/11/2004)

बापदादा बारबार सुना रहे हैं - समय और स्वयं दोनों को देखो। समय की रफ्तार भी देखो और स्वयं की रफ्तार भी देखो। **फिर यह नहीं कहना कि हमको तो पता ही नहीं था, समय इतना तेज चला गया।** कई बच्चे समझते हैं कि अभी थोड़ा ढीला पुरुषार्थ अगर है भी तो अन्त में तेज कर लेंगे। लेकिन बहुतकाल का अभ्यास अन्त में सहयोगी बनेगा। बादशाह बनके तो देखो। बने हैं लेकिन कोई बने हैं, कोई नहीं बने हैं। **चल रहे हैं, कर रहे हैं, सम्पन्न हो जायेंगे....। अब चलना नहीं है, करना नहीं है, उड़ना है। अभी उड़ने की रफ्तार चाहिए।**

वर्तमान समय भी बहुत बड़ा खज़ाना है क्योंकि वर्तमान समय में जो कुछ प्राप्त करने चाहे, जो वरदान लेने चाहे, जितना अपने को श्रेष्ठ बनाने चाहे, उतना अभी बना सकते हैं। अब नहीं तो कब नहीं। जैसे संकल्प के खज़ाने को व्यर्थ गंवाना अर्थात् अपने प्राप्तियों को गंवाना। ऐसे ही समय के एक सेकण्ड़ को भी व्यर्थ गंवाया, सफल नहीं किया तो बहुत गंवाया। (15/12/2004)

बापदादा ने पहले भी कहा है कि समय की रफ्तार तीव्रगति से जा रही है, तो सारे वर्ष की रिजल्ट में चेक किया कि क्या मेरे पुरुषार्थ की रफ्तार तीव्र रही? या कब कैसे, कब कैसे रही? **दुनिया की हालतों को देखते हुए अब अपने विशेष दो स्वरूप को इमर्ज करो, वह दो स्वरूप हैं - एक सर्व प्रति रहमदिल और कल्याणकारी और दूसरा हर आत्मा के प्रति सदा दाता के बच्चे मास्टर दाता। विश्व की आत्मायें बिल्कुल शक्तिहीन, दु:खी, अशान्त चिल्ला रही हैं।** बाप के आगे, आप पूज्य आत्माओं के आगे पुकार रही हैं - कुछ घड़ियों के लिए भी सुख दे दो। शान्ति दे दो। खुशी दे दो, हिम्मत दे दो। बाप तो बच्चों के दु:ख, परेशानी को देख नहीं सकते, सुन नहीं सकते। क्या आप सभी पूज्य आत्माओं को रहम नहीं आता! **मांग रहे हैं - दो, दो, दो...। तो दाता के बच्चे कुछ अंचली तो दे दो।** बाप भी आप बच्चों को साथी बना

के, मास्टर दाता बनाके, अपने राइट हैण्ड़ बनाके यही इशारा देते हैं - **इतनी विश्व की आत्मायें सभी को मुक्ति दिलानी है। मुक्तिधाम में जाना है।** तो हे दाता के बच्चे अपने श्रेष्ठ संकल्प द्वारा, मन्सा शक्ति द्वारा, चाहे वाणी द्वारा, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा, चाहे शुभ भावना शुभ कामना द्वारा, चाहे वायब्रेशन वायुमण्ड़ल द्वारा किसी भी युक्ति से मुक्ति दिलाओ। चिल्ला रहे हैं मुक्ति दो, बापदादा अपने राइट हैण्ड़्स को कहते हैं रहम करो।

सिर्फ भारत कल्याणकारी हो या विदेश में जो भी ५ खण्ड़ हैं, तो जहाँ-जहाँ सेवाकेन्द्र खोले हैं वहाँ के कल्याणकारी हो वा विश्व कल्याणकारी हो? **विश्व का कल्याण करने के लिए हर एक बच्चे को बाप के हैण्ड़, राइड़ हैण्ड़ हो ना।**

स्व की स्थिति में भी चार बातें विशेष चेक करो - इसको कहेंगे तीव्र पुरुषार्थ। एक बात - पहले यह चेक करो कि निमित्त भाव है? कोई भी रॉयल रूप का मैं पन तो नहीं है? मेरापन तो नहीं है? साधारण लोगों का मैं और मेरा भी साधारण हैं, लेकिन ब्राह्मण जीवन का मेरा और मैं पन सूक्ष्म और रॉयल है। उसकी भाषा मालूम है क्या है? यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। यह तो होना ही है। चल रहे हैं, देख रहे हैं...। तो एक निमित्त भाव, हर बात में निमित्त हैं। चाहे सेवा में, चाहे स्थिति में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में चेहरा और चलन निमित्त भाव का हो। और उसकी विशेषता दूसरी होगी - निमित्त भाव, निर्मान। निर्मान भावना। निमित्त और निर्मान भाव से निर्माण करना। तो **तीन बातें सुनी - निमित्त, निर्मान और निर्माण और चौथी बात है - निर्वाण। जब चाहे निर्वाणधाम में पहुंच जायें। निर्वाण स्थिति में स्थित हो जाएं क्योंकि स्वयं निर्वाण स्थिति में होंगे तब दूसरों को निर्वाणधाम में पहुंचा सकेंगे। अभी सभी मुक्ति चाहते हैं, छुड़ाओ, छुड़ाओ चिल्ला रहे हैं। तो यह चार बातें अच्छी परसेन्ट में प्रैक्टिकल जीवन में होना अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी। तब बापदादा कहेंगे वाह! वाह बच्चे वाह! आप भी कहेंगे वाह! बाबा वाह! वाह! ड्रामा वाह! वाह! पुरुषार्थ वाह!** लेकिन पता है अभी क्या करते हो?

पता है? कभी वाह! कहते हो कभी व्हाई कहते हो। वाह! के बजाए व्हाई, और व्हाई हो जाता है हाय। तो व्हाई नहीं, वाह! आपको भी क्या अच्छा लगता है, वाह! अच्छा लगता है या व्हाई? क्या अच्छा लगता है? वाह!। कभी व्हाई नहीं करते हो? गलती से आ जाता है।

किसने छुट्टी दी है आपको? संस्कारों ने? पुराने संस्कारों ने आपको व्हाई की छुट्टी दे दी है और बाप कहते हैं वाह! वाह! कहो। व्हाई-व्हाई नहीं।

व्हाई अच्छा नहीं है। जैसे वाई हो जाती है ना, तो खराब हो जाता है ना। तो व्हाई वाई है, यह नहीं करो। वाह! वाह! कितना अच्छा लगता है। हाँ बोलो, वाह! वाह! वाह!

सभी संकल्प करो - व्हाई नहीं कहेंगे। सोचेंगे भी नहीं। क्वेश्चन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा नहीं, बिन्दी। क्वेश्चन मार्क लिखो, कितना टेढ़ा है और बिन्दी कितनी सहज है। बस नयनों में बाप बिन्दू को समा दो। जैसे नयनों में देखने की बिन्दी समाई हुई है ना! ऐसे ही सदा नयनों में बिन्दू बाप को समा लो। समाने आता है? आता है? या फिट नहीं होती है, नीचे ऊपर हो जाती है? तो क्या करेंगे? विदाई किसको देंगे? व्हाई को? कभी भी आश्चर्य की निशानी भी नहीं आवे, यह कैसे! यह भी होता है क्या? होना तो नहीं चाहिए, क्यों होता है! क्वेश्चन मार्क नहीं, आश्चर्य की मात्रा भी नहीं। बस बाप और मैं। **कई बच्चे कहते हैं यह तो चलता ही है ना! बापदादा को बहुत रमणीक बातें रूहरिहान में कहते हैं, सामने तो कह नहीं सकते हैं ना। तो रूहरिहान में सब कुछ कह देते हैं। अच्छा कुछ भी चलता है लेकिन आपको चलना नहीं है, आपको उड़ना है तो चलने की बातें क्यों देखते हो, उड़ो और उड़ाओ। शुभ भावना, शुभ कामना ऐसी शक्तिशाली है जो बीच में सिर्फ व्हाई नहीं आवे, सिवाए शुभ भावना शुभ कामना के, तो इतनी पावरफुल है जो किसी अशुभ भावना वाले को भी शुभ भावना में बदल सकते हो।** अच्छा बदल नहीं सकते हो, सेकण्ड नम्बर अगर आपकी शुभ भावना, शुभ कामना अविनाशी है कभी-कभी वाली नहीं, अविनाशी है तो आपके ऊपर अशुभ भावना का प्रभाव

नहीं पड़ सकता है। **क्वेश्चन में चले जाते हो, यह क्यों हो रहा है, यह कब तक चलेगा, कैसे चलेगा? इससे शुभ भावना की शक्ति कम हो जाती है। नहीं तो शुभ भावना, शुभ कामना इस संकल्प शक्ति में बहुत शक्ति है। देखो, आप सभी आये बापदादा के पास। पहला दिन याद करो, बापदादा ने क्या किया? चाहे पतित आये, चाहे पापी आये, चाहे साधारण आये, भिन्नभिन्न वृत्ति वाले, भिन्न-भिन्न भावना वाले आये, बापदादा ने क्या किया? शुभ भावना रखी ना! मेरे हो, मास्टर सर्वशक्तिवान हो, दिलतख्त नशीन हो, यह शुभ भावना रखी ना, शुभ कामना रखी ना, उससे ही तो बाप के बन गये ना। बाप ने कहा हे पापी क्यों आये हो? शुभ भावना रखी, मेरे बच्चे, मास्टर सर्व शक्तिवान बच्चे, जब बाप ने आप सबके ऊपर शुभ भावना रखी, शुभ कामना रखी तो आपके दिल ने क्या कहा? मेरा बाबा। बाप ने क्या कहा? मेरे बच्चे। ऐसे ही अगर शुभ भावना, शुभ कामना रखेंगे तो क्या दिखाई देगा? मेरा कल्प पहले वाला मीठा भाई, मेरी सिकीलधी बहन। परिवर्तन हो जायेगा।**

बहुत काम रहा हुआ है। बापदादा तो नज़र करते हैं, विश्व की आत्माओं के ऊपर तो बहुत तरस पड़ता है। अब प्रकृति भी तंग हो गई है। प्रकृति खुद तंग हो गई है, तो क्या करे? आत्माओं को तंग कर रही है। और बाप बच्चों को देखके तरस में आ जाते हैं। आप सबको तरस नहीं आता? सिर्फ खबर सुनकर चुप हो जाते हो, बस, इतनी आत्मायें चली गई। वो आत्मायें सन्देश से तो वंचित रह गई। **अभी तो दाता बनो, रहमदिल बनो। यह तब होगा, रहम तब आयेगा जब इस वर्ष के आरम्भ से अपने में बेहद की वैराग्य वृत्ति इमर्ज करो। बेहद की वैराग्य वृत्ति। यह देह की, देहभान की स्मृति, यह भी बेहद के वैराग्य की कमी है। छोटी-छोटी हद की बातें स्थिति को ड़गमग करती हैं, कारण? बेहद की वैराग्य वृत्ति कम है, लगाव है। वैराग्य नहीं है लगाव है। जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध सम्पर्क में, सेवा में सबमें बेहद के वैरागी…**

तभी मुक्तिधाम का दरवाजा खुलेगा। अभी तो जो आत्मायें आ रही हैं फिर जन्म लेंगी, फिर दु:खी होंगी। अब मुक्तिधाम का गेट खोलने के निमित्त तो आप हो ना? ब्रह्मा बाप के साथी हो ना! तो बेहद की वैराग्य वृत्ति है गेट खोलने की चाबी। अभी चाबी नहीं लगी है, चाबी तैयार ही नहीं की है। ब्रह्मा बाप भी इन्तजार कर रहा है, एड़वांस पार्टी भी इन्तजार कर रही है, प्रकृति भी इन्तजार कर रही है, तंग हो गई है बहुत। माया भी अपने दिन गिनती कर रही है। अभी बोलो, हे मास्टर सर्वशक्तिवान, बोलो क्या करना है?

अभी बेहद के वैराग्य की, मुक्तिधाम जाने की चाबी तैयार करो। आप सभी को भी तो पहले मुक्तिधाम में जाना है ना। ब्रह्मा बाप से वायदा किया है - साथ चलेंगे, साथ आयेंगे, साथ में राज्य करेंगे, साथ में भक्ति करेंगे...। तो अभी तैयारी करो, इस वर्ष में करेंगे कि दूसरा वर्ष चाहिए? जो समझते हैं इस वर्ष में अटेन्शन प्लीज, बार-बार करेंगे वह हाथ उठाओ। करेंगे? फिर तो एड़वांस पार्टी आपको बहुत मुबारक देगी। वह भी थक गये हैं।

12 बजे के बाद इस नये वर्ष में बापदादा की तरफ से पहला वरदान अपने को देना - सफलता भव। **संकल्प भी असफल नहीं हो क्योंकि आपका एक शुभ संकल्प विश्व का कल्याण करने वाला है। इतना अमूल्य है। एक सेकण्ड़ विश्व कल्याण का आधार है। इसीलिए सफल करो सफलता मूर्त बनो।**

(दादी जानकी ने बापदादा से पूछा - विश्व की करोड़ों आत्माओं को इस साल में मैसेज कैसे मिले, मेरा बाबा है, यह अनुभव कैसे हो, उसके लिए क्या प्लैन बनें?)

उसके लिए कोई ग्रुप बनाओ, ऐसा कोई छोटा ग्रुप बनाओ जो मनन करे इस बात पर, क्योंकि विधियां तो सुनाई, हर एक को चाहे मन्सा संकल्प द्वारा, चाहे वृत्ति वायब्रेशन द्वारा, चाहे वाणी द्वारा, चाहे सम्बन्ध सम्पर्क द्वारा हर एक को लक्ष्य रखना है कि सारे दिन में कितनी आत्माओं की सेवा की? चाहे मन्सा

की, चाहे वृत्ति वायब्रेशन से की, वाणी द्वारा की, प्रोग्राम द्वारा की या सम्बन्ध सम्पर्क से की या चलन चेहरे से की, हर एक को नोट करना चाहिए कि मेरे सेवा की रिजल्ट सारे दिन की क्या रही? और एक ग्रुप बनाओ जो सोचे, सेवा के बिना रह नहीं सके। उसको देख कर सब फालो करेंगे। लेकिन स्व स्थिति और सेवा की स्थिति बैलेन्स हो। फिर सेवा बहुत बढ़ेगी। और दूसरों को भी उमंग आयेगा कि बैलेन्स है सिर्फ सेवा करते हैं तो कहते हैं, यह तो बोलने वाले हैं ही। लेकिन ऐसा छोटा ग्रुप बनाओ जो यह पान का बीड़ा उठावे कि हम स्व स्थिति और सेवा के विधियों से सेवा करेंगे। एक एक्जैम्पल हो ग्रुप फिर वह जैसे कहते हैं ना एक दीपक से दीवाली हो जाती है, वैसे एक ग्रुप से वृद्धि होती जायेगी।

(31/12/2004)

अब बापदादा यही कहते स्नेह के रिटर्न में अब अपने आपको टर्न करो, परिवर्तन करो। अब स्टेज पर अपना सम्पन्न स्वरूप प्रत्यक्ष करो। **आपकी सम्पन्नता से दु:ख और अशान्ति की समाप्ति होनी है। अभी अपने भाई-बहिनों को ज्यादा दु:ख देखने नहीं दो। इस दु:ख, अशान्ति से मुक्ति दिलाओ। बहुत भयभीत हैं। क्या करें, क्या होगा..., इस अंधकार में भटक रहे हैं।** अब आत्माओं को रोशनी का रास्ता दिखाओ। उमंग आता है? रहम आता है? अभी बेहद को देखो। बेहद में दृष्टि ड़ालो। अच्छा।

अभी थोड़ी रफ्तार तीव्र करो। आराम वाली नहीं। तीव्र गति से ही आत्माओं का दु:ख दर्द समाप्त होगा। रहम की छत्रछाया आत्माओं के ऊपर ड़ालो। (18/01/2005)

बापदादा आजकल बार-बार भिन्न-भिन्न प्रकार से बच्चों को अटेन्शन दिला रहे हैं - समय की समीपता को देख अपने आपको सूक्ष्म विशाल बुद्धि से चेक करो क्या मिला, क्या लिया और निरंतर उन खजानों में पलते रहते हैं? **चेकिंग बहुत आवश्यक है क्योंकि माया वर्तमान समय भिन्न-भिन्न रॉयल प्रकार के अलबेलेपन और रॉयल आलस्य के रूप में**

ट्रायल करती रहती है। इसलिए अपनी चेकिंग सदा करते चलो। इतने अटेन्शन से, अलबेले रूप से चेकिंग नहीं - बुरा नहीं किया, दु:ख नहीं दिया, बुरी दृष्टि नहीं हुई, यह चेकिंग तो हुई लेकिन अच्छे ते अच्छा क्या किया? सदा अत्मिक दृष्टि नेचरल रही? या विस्मृति स्मृति का खेल किया? कितनों को शुभभावना, शुभकामना, दुआएं दी? **ऐसा जमा का खाता कितना और कैसे रहा? क्योंकि अच्छी तरह से जानते हो कि जमा का खाता सिर्फ अभी कर सकते हैं। इस समय, फुल सीजन खाता जमा करने की है।** फिर सारा समय जमा प्रमाण राज्य भाग्य और पूज्य देवी-देवता बनने का है। जमा कम तो राजय भाग्य भी कम और पूज्य बनने में भी नम्बरवार होता है। जमा कम तो पूजा भी कम, विधिपूर्वक जमा नहीं तो पूजा भी विधिपूर्वक नहीं, कभी-कभी विधिपूर्वक है तो पूजा भी और पद भी कभी-कभी है।

बापदादा ने देखा है मैजॉरिटी बच्चों की योग अर्थात् याद की सब्जेक्ट में रूचि वा अटेन्शन कम होता है, सेवा में ज्यादा है। लेकिन बिना याद के सेवा में ज्यादा है तो उसमें हद आ जाती है। उपराम वृत्ति नहीं होती। नाम और मान का, पोजीशन का मिक्स हो जाता है। बेदह की वृत्ति कम हो जाती है। इसलिए बापदादा चाहते हैं कि कोटों में कोई, कोई में कोई मेरे बच्चे अभी से एवररेडी हो जायें, क्यों? कई सोचते हैं समय आने पर हो जायेंगे। लेकिन समय आपकी क्रियेशन हैं, क्या क्रियेशन को अपना शिक्षक बनायेंगे? दूसरी बात जानते हो कि बहुत काल का हिसाब है, बहुतकाल की सम्पन्नता बहत काल की प्राप्ति कराती है। तो **अभी समय की समीपता प्रमाण बहुतकाल का जमा होना आवश्यक है फिर उल्हना नहीं देना कि हमने तो समझा बहुतकाल में समय पड़ा है। अभी तो बहुतकाल का अटेन्शन रखो। समझा! अटेन्शन प्लीज़।**

दुनिया वाले आप पूर्वजों द्वारा मुक्ति चाहते हैं, चिल्ला रहे हैं, मुक्ति दो, मुक्ति दो। जब तक मैजारिटी बच्चे अपने पुराने संस्कार, जिसको आप नेचर कहते हो, नेचरल नहीं नेचर, उसमें कुछ भी थोड़ा रहा हुआ है, मुक्त

नहीं हुए हैं तो सर्व आत्माओं को मुक्ति नहीं मिल सकती। तो **बापदादा कहते हैं - हे मुक्तिदाता के बच्चे मास्टर मुक्तिदाता अभी अपने को मुक्त करो तो सर्व आत्माओं के लिए मुक्ति का द्वार खुल जाए। सुनाया था ना - गेट की चाबी क्या है? बेहद का वैराग्य। कार्य सब करो लेकिन जैसे भाषणों में कहते हो प्रवृत्ति वालों को कमल पुष्प समान बनो, ऐसे सब कुछ करते, कर्तापन से मुक्त, न्यारे, न साधनों के वश, न पोजीशन के। कुछ न कुछ मिल जाए यह पोजीशन नहीं आपोजीशन है माया की। न्यारे और बाप के प्यारे।**

जरा भी समानता में अन्तर नहीं हो। **प्यार के पीछे कुर्बान करना, क्या बड़ी बात है।** दुनिया वाले तो अशुद्ध प्यार के पीछे जीवन देने के लिए तैयार हो जाते हैं। **बापदादा तो सिर्फ कहते हैं, किचड़ा दे दो बस। अच्छी चीज़ नहीं दो, किचड़ा दे दो। कमजोरी, कमी क्या है? किचड़ा है ना! किचड़ा कुर्बान करना क्या बड़ी बात है! परिस्थिति समाप्त हो जाए, स्व-स्थिति श्रेष्ठ हो जाए।**

समाप्ति का पर्दा खुले तब तो सब क्या दिखाई देवें? फरिश्ते चमक रहे हैं। सभी बच्चे चमकते हुए दिखाई दें। इसीलिए **अभी पर्दा खुलना रूका हुआ है। दुनिया वाले चिल्ला रहे हैं, पर्दा खोलो, पर्दा खोलो। तो अपना प्लैन आप ही बनाओ। बना हुआ प्लैन देते हैं ना तो फिर कई बातें होती हैं। अपना प्लैन अपनी हिम्मत से बनाओ।** दृढ़ता की चाबी लगाओ तो सफलता मिलनी ही है। दृढ़ संकल्प करते हो और बापदादा खुश होते हैं वाह बच्चे वाह! दृढ़ संकल्प किया लेकिन दृढ़ता में फिर थोड़ा-थोड़ा अलबेलापन मिक्स हो जाता है। इसीलिए सफलता भी कभी आधी, कभी पौनी परसेन्टेज में हो जाती है।

(03/02/2005)

समय के लिए तो नहीं इन्तजार कर रहे हो ना! कभी-कभी करते हैं। रूहरिहान करते हैं ना तो कई बच्चे कहते हैं, समय आने पर ठीक हो जायेंगे। समय तो आपकी रचना है। आप मास्टर रचता हो ना! तो मास्टर रचता, रचना

के आधार पर नहीं चलते। **समय को समाप्ति के नज़दीक आप मास्टर रचता को लाना है।**

एक सेकण्ड में प्वाइंट लगा सकते हो? जब यह अभ्यास बार-बार का होगा तब ही आने वाले अन्तिम समय में फुल प्वाइंट ले सकेंगे। पास विद ऑनर बन जायेंगे। यही परमात्म पढ़ाई है, यही परमात्म पालना है।

आत्माओं को दु:ख, अशान्ति से छुड़ाना। फिर भी आपके ही भाई-बहनें हैं ना! तो अपने भाई वा बहनों को गॉडली मैसेज देना अर्थात् मुक्त करना। इसकी दुआयें बहुत मिलती हैं। किसी भी आत्मा को दु:ख, अशान्ति से छुड़ाने की दुआयें बहुत मिलती हैं और दुआयें मिलने से अतीन्द्रिय सुख आन्तरिक खुशी की फीलिंग बहुत आती है। क्यों? क्योंकि खुशी बांटी ना तो खुशी बांटने से खुशी बढ़ती है। (20/02/2005)

अभी सबके दिल में जो कोने-कोने में सेवा कर रहे हो, उसकी सफलता निकलनी है जो चारों ओर से यही आवाज आयेगा 'मेरा बाबा' आ गया। यही है, यही है, यही है। वह दिन भी दूर नहीं है, आना ही है, होना ही है, हुआ ही पड़ा है। **ऐसे-ऐसे माइक तैयार हो रहे हैं। आप माइट देंगे और वह माइक बापदादा को प्रत्यक्ष करेंगे।** करना है ना। (बापदादा कोई वी.आई.पी. माइक को सभा में देखकर बोले) यह माइक बैठी है ना। बढ़िया माइक है। **ऐसे माइक निकलेंगे जो आपको सिर्फ दृष्टि देनी पड़ेगी। वह दिन आ रहा है, आ रहा है, आ रहा है।** (07/03/2005)

समय फास्ट जा रहा है। समय का कोई भरोसा नहीं, कब भी क्या भी हो सकता है और अचानक होना है। बापदादा को पता भी है कब होना है लेकिन बतायेंगे नहीं क्योंकि अचानक पेपर होना है। इसलिए जमा का खाता बहुत बढ़ाओ। वर्तमान समय बापदादा दो बातों पर बार-बार अटेन्शन दिला रहे हैं - एक स्टॉप, बिन्दी लगाओ, प्वाइंट लगाओ। दूसरा - स्टॉक जमा करो। दोनों जरूरी हैं। तीन खजाने विशेष जमा करो - एक अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध

अर्थात् प्रत्यक्ष फल, वह जमा करो। दूसरा - सदा सन्तुस्ट रहना, सन्तुस्ट करना। सिर्फ रहना नहीं, करना भी। उसके फल स्वरूप दुआयें जमा करो।

अभी दु:ख बहुत-बहुत बढ़ रहा है, बढ़ता रहेगा। इसलिए मास्टर सूर्य बन अनुभूति की किरणें फैलाओ। जैसे सूर्य एक ही समय में कितनी प्राप्तियां कराता है, एक प्राप्ति नहीं कराता। सिर्फ रोशनी नहीं देता, पावर भी देता है। अनेक प्राप्तियां कराता है। ऐसे आप सभी इन ६ मास में ज्ञान सूर्य बन सुख की, खुशी की, शान्ति की, सहयोग की किरणें फैलाओ। अनुभूति कराओ। आपकी सूरत को देखते ही दु:ख की लहर में कम से कम मुस्कान आ जाये। आपकी दृष्टि से हिम्मत आ जाये। तो यह अटेन्शन देना है। विधाता बनना है, तपस्वी बनना है। ऐसी तपस्या करो जो तपस्या की ज्वाला कोई न कोई अनुभूति कराये। सिर्फ वाणी नहीं सुनें, अनुभूति कराओ। अनुभूति अमर होती है। सिर्फ वाणी थोड़ा समय अच्छी लगती है सदा याद नहीं रहती। इसलिए अनुभव की अथॉरिटी बन अनुभव कराओ। **जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आ रहे हैं उन्हों को हिम्मत, उमंग-उत्साह अपने सहयोग से बापदादा के कनेक्शन से दिलाओ। ज्यादा मेहनत नहीं कराओ। न खुद मेहनत करो न औरों को कराओ। निमित्त हैं ना! तो वायब्रेशन ऐसे उमंग-उत्साह का बनाओ जो गम्भीर भी उमंग-उत्साह में आ जाये। मन नाचने लगे खुशी में।**

(25/03/2005)

दादी जी द्वारा उच्चारे हुए मधुर महावाक्य:- अभी बापदादा और हम सभी आप सभी के सम्पन्न बनने का इन्तजार कर रहे हैं। बापदादा के साथ चलेंगे। यहाँ का कार्य समाप्त कर तीव्र गति से उड़ो।

(27/12/2007)

दादी जी के वतन में वापस जाने के पश्चात गुल्जार दादीजी ने जो सन्देश सुनाया वह इस प्रकार है:- मैंने कहा दादी अभी आप क्या पार्ट बजायेंगी? तो दादी ने कहा तुमको पता है कि आजकल मैं इन साइंस वालों को

विशेष प्रेर रही हूँ कि जल्दी-जल्दी वह भी कोई ऐसी नई इन्वेन्शन करें जिसमें दु:ख कम हो और परिवर्तन हो जाए क्योंकि आजकल जो यह हिंसा करते हैं उसमें दु:ख बहुत होता है ना! तो अभी बाबा के डायरेक्शन से मैं यह विशेष सेवा कर रही हूँ। जैसे एक ही चीज़ बार-बार व रोज खाते रहो तो दिल भर जाती है। वैसे अब इन्हों की लड़ाई-झगड़े से, हिंसा से दिल भर जाएं, उन्हें इससे वैराग्य आ जाए। तो ऐसा वायुमण्डल फैलाने के लिए बाबा ने कहा है। तो हम सब मिलकर साइंस वालों में यह वायुमण्डल बना रहे हैं। हमारे साथ विशेष ५ जनों को बाबा वतन में बलाता है, दीदी, दादी, चन्द्रमणी दादी, विश्वकिशोर भाई और पुष्पशान्ता बहन... मैंने कहा दादी बाबा कौनसा उल्हना दे रहे थे? तो दादी ने कहा कि बाबा कहते हैं - मेरे बच्चे बीच-बीच में अलबेले हो जाते हैं, लेकिन हर संकल्प में, हर समय दृढ़ता हो।

दादीने कहा कि अभी तीव्र पुरुषार्थ की झलक दिखाओ।

अभी लास्ट टाइम है, लास्ट टाइम में अगर कर्मों की गति पर ध्यान नहीं देंगे तो बाबा का जो संकल्प है कि स्व-राज्य अधिकारी और विश्व राज्य अधिकाी बनें, वह कैसे बन सकेंगे?

अभी अलबेलापन छोड़कर, जैसे वायुमण्डल बनाने का काम एडवांस पार्टी को दिया है। तो एक तरफ एडवांस पार्टी है, दूसरी तरफ एडवांस में जाने वाली पार्टी है। तो दोनों का एक ही संकल्प अभी होना चाहिए कि स्व-परिवर्तन से विश्व परिवर्तन करना ही है।

दादी की एक विशेषता है, बाबा ने कहा और दादी ने किया। जैसे मम्मा कहती थी बाबा का कहना, मेरा करना। तो दादी का भी ऐसे है।

माया का काम है आना मेरा काम है विजय प्राप्त करना - यह स्लोगन दादी की तरफ से सबको देना क्योंकि माया भी बिचारी अभी तंग हो गई है। जाने चाहती है, विदाई लेने चाहती है।

सभी को कहना कि दादी की जब भी याद आवे तो दादी का यह स्लोगन याद रखना - 'माया का काम है आना, मेरा काम है मायाजीत बनना।'

फिर दादी ने कहा कि अभी सब इन्तजार बहुत कर रहे हैं, अभी इन्तजाम की घड़ियां खत्म करो, इन्तजाम पूरा करो।

(27/12/2007)

आप सभी ब्राह्मण सारे विश्व की आत्माओं के लिए परिवर्तन के निमित्त आत्मायें हो। विश्व के फाउण्डेशन हो, पूर्वज हो। तो इस वर्ष अपनी श्रेष्ठ वृत्ति द्वारा वायब्रेशन फैलायेंगे?

समय को सफल करो, हर श्वांस को सफल करो, हर संकल्प को सफल करो, हर शक्ति को सफल करो, हर गुण को सफल करो। सफलतामूर्त बनने का यह वशिेष वर्ष मनाओ क्योंकि सफलता आपका जन्म सिद्ध अधिकार है।

ऐसे नहीं समझना एक सेकण्ड, एक मिनट ही तो गया, व्यर्थ जाना इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। आप सबका लक्ष्य है कि बाप ब्रह्मा समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनना है। तो ब्रह्मा बाप ने सर्व खजाने आदि से अन्तिम दिन तक सफल किया, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण देखा। सम्पूर्ण फरिश्ता बन गया। अपनी प्यारी दादी को भी देखा सफल किया और औरों को भी सफल कराने का सदा उमंग-उत्साह बढ़ाया।

ब्रह्मा बाप की और विशेषता क्या रही? सदा एलर्ट, अलबेलापन नहीं। लास्ट दिन भी कितना अलर्ट रूप में अपने सेवा का पार्ट बजाया। शरीर कमजोर होते भी कैसे अलर्ट होके, आधार लेके नहीं बैठे और अलर्ट करके गये। तीन बातों का मन्त्र देके गये। याद है ना सबको। तो जितना अलर्ट रहेंगे, फालो करेंगे अलबेलापन खत्म होगा।

अगर स्वयं सहज सिम्पुल रूप में सैम्पुल बनके रहे तो आटोमेटिक दूसरे को आपके गुणमूर्त का सहयोग स्वत: ही मिलेगा। आजकल ब्राह्मण आत्मायें भी सैम्पुल देखना चाहती है, सुनने नहीं चाहती हैं।

शुभ भावना, शुभ कामना द्वारा किसी भी आत्मा को मन्सा सो द्वारा वायबेशन वा सकाश दे सकते हो। तो अभी इस वर्ष एक मन्सा शक्तियों का वायब्रेशन, शक्तियों द्वारा सकाश और कर्म द्वारा गुणों का सहयोग दो।

गुणों की पिकनिक करना क्योंकि बाप समान समय की समीपता प्रमाण और दादी के इशारे प्रमाण समय की सम्पन्नता आचानक कभी भी होनी सम्भव है। इसलिए बाप समान बनना है वा दादी को प्यार का रिटर्न देना है तो जो आवश्यकता है - मन्सा और कर्म द्वारा सहयोगी बनने का, कोई कैसा भी है यह नहीं सोचो, यह बनें तो मैं बनूं। नम्बरवन बनना है तो बने तो बनूं, तो पहला नम्बर तो बनने वाला बन जायेगा। आपका नम्बर दूसरा हो जायेगा। क्या आप दूसरा नम्बर बनने चाहते हैं कि पहला नम्बर बनने चाहते हैं?

मुझे निमित्त बनना है। मुझे करना है। मुझे देखके और करेंगे।

सबका एक आवाज निकले दिल से, यह बापदादा चाहता है, वह क्या? नो प्रोब्लम, कम्पलीट। प्राब्लम नहीं लेकिन कम्पलीट बनना ही है। दृढ़ निश्चयबुद्धि, विजय माला के नजदीक मणका बनना ही है।

तो होमवर्क मिल गया। मिला ना? अब देखेंगे नम्बरवार में आते हो या नम्बरवन में आते हो।

(31/12/2007)

नम्बरवन हर सबजेक्ट में बनना ही है, यह दृढ़ संकल्प करो। बापदादा ने देखा है जो हिम्मत रखते हैं, उनको बाप की मदद का अनुभव होता जरूर है। लेकिन अलबेलापन बीच में आता है, यह तो होता ही है। तीव्र पुरुषार्थ के बजाए कभी पुरुषार्थी, कभी तीव्र पुरुषार्थी बन जाते हैं। सदा तीव्र पुरुषार्थ की लहर स्वयं में भी और सर्व को भी दिलावे, यह नहीं समझो हम तो ठीक चल रहे हैं। एक दो को सहयोग देके संगठित रूप में नम्बरवन बनें। कैसा भी गिरा हुआ हो, उसको भी साथी बनाके चलना सिखाओ। सहयोगी बनो।

(05.03.2008)

वर्तमान समय बापदादा यही चाहते हैं - अभी समय समीप होने के नाते से बापदादा एक शब्द सभी बच्चों के अन्दर से, संकल्प से, बोल से और प्रैक्टिकल कर्म से चेन्ज करना देखने चाहते हैं। हिम्मत है? एक शब्द यही बापदादा हर बच्चे का परिवर्तन कराना चाहते हैं, जो एक ही शब्द बार-बार तीव्र पुरुषार्थ से अलबेला पुरुषार्थी बना देता है और अभी समय अनुसार कौन सा पुरुषार्थ चाहिए? तीव्र पुरुषार्थ और सब चाहते भी हैं कि तीव्र पुरुषार्थियों के लाइन में आयें लेकिन एक शब्द अलबेला कर देता है। पता है वह? परिवर्तन करने के लिए तैयार हैं? है तैयार? हाथ उठाओ, तैयार हैं? देखो, आपका फोटो टी.वी. में आ रहा है। तैयार हैं, अच्छा मुबारक हो। अच्छा - तीव्र पुरुषार्थ से परिवर्तन करना है या कर लेंगे, देख लेंगे... ऐसे तो नहीं? एक शब्द जान तो गये होंगे, क्योंकि सब होशियार हैं, एक शब्द वह है कि **'कारण' शब्द को परिवर्तन कर 'निवारण' शब्द को सामने लाओ।** कारण सामने आने से वा कारण सोचने से निवारण नहीं होता है। तो बापदादा संकल्प तक, सिर्फ बोलने तक नहीं लेकिन संकल्प तक यह कारण शब्द को निवारण में परिवर्तन करने चाहते हैं क्योंकि कारण भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं और वह कारण शब्द सोचने में, बोलने में, कर्म में आने में तीव्र पुरुषार्थ के आगे बन्धन बन जाता है क्योंकि आप सभी का बापदादा से वायदा है, स्नेह से वायदा है कि हम सभी भी बाप के, विश्व परिवर्तन के कार्य में साथी हैं। बाप के साथी हैं, बाप अकेला नहीं करता है, बच्चों को साथ लाते हैं। तो विश्व परिवर्तन के कार्य में आपका क्या कार्य है? सर्व आत्माओं के कारणों को भी निवारण करना क्योंकि आजकल मैजारिटी दु:खी और अशान्त होने के कारण अभी मुक्ति चाहते हैं। दु:ख अशान्ति से, सर्व बन्धनों से मुक्ति चाहते हैं और मुक्तिदाता कौन? बाप के साथ आप बच्चे भी मुक्तिदाता हैं। आपके जड़ चित्रों से आज तक क्या मांगते हैं? अभी दु:ख अशान्ति बढ़ते देख सभी मैजारिटी आत्मायें आप मुक्तिदाता आत्माओं को याद करती हैं। मन में दु:खी होके चिल्लाते हैं - हे मुक्तिदाता मुक्ति दो। क्या आपको आत्माओं के दु:ख अशान्ति की पुकार सुनने नहीं

आती? लेकिन मुक्तिदाता बन पहले इस 'कारण' शब्द को मुक्त करो। तो स्वत: ही मुक्ति का आवाज आपके कानों में गूंजेगा। पहले अपने अन्दर से इस शब्द से मुक्त होंगे तो दूसरों को भी मुक्त कर सकेंगे। अभी तो दिन-प्रतिदिन आपके आगे मुक्तिदाता मुक्ति दो की क्यू लगने वाली है। लेकिन अभी तक अपने पुरुषार्थ में भिन्न-भिन्न कारण शब्द के कारण मुक्ति का दरवाजा बन्द है। इसीलिए आज बापदादा इस शब्द के, इसके साथ और भी कमजोर शब्द आते हैं। विशेष है कारण फिर उसमें और भी कमजोरियाँ होती हैं, ऐसे वैसे, कैसे, यह भी इनके साथी शब्द हैं, जो दरवाजे बन्द के कारण हैं।

अभी सिर्फ चाहे यूथ कुमार, चाहे अधरकुमार, जो यहाँ तीव्र पुरुषार्थ की अनुभूति की, अनुभूति की तीव्र पुरुषार्थ की? वह अमर रखना। अमर भव का वरदान सदा याद रखना। ऐसे नहीं वहाँ जाओ तो कहो तीव्र पुरुषार्थ नहीं, पुरुषार्थ है नहीं। और ही कहना हम तो और ही उड़ती कला में उड़ रहे हैं। ठीक है। ऐसी रिजल्ट निकालना। बहुत अच्छा किया। बापदादा खुश है। अच्छा।

(18.03.2008)

अभी जो हर एक ने संकल्प किया है, बाप को प्रत्यक्ष करना ही है। उसकी डेट अपने परिवर्तन की कलम से सेट करो। पैन्सिल से सेट नहीं होगा, यह आपके परिवर्तन के तीव्र पुरुषार्थ की कलम से प्रत्यक्षता की डेट सहज ही फिक्स हो जायेगी। तो अभी बापदादा देखेंगे कि किस ज़ोन की पहला नम्बर रिपोर्ट आती है कि सारा ज़ोन मन्सा-वाचा-कर्मणा, सम्बन्ध-सम्पर्क में निर्विघ्न है और दृढ़ ही रहेगा। इसमें नम्बरवन कौन रहता है? सिर्फ सेन्टर नहीं, पहले सेन्टर को मजबूत करो फिर अपने कनेक्शन के सेन्टर को मजबूत करो, फिर ज़ोन को मजबूत करो।

डबल विदेशी:- अभी डबल विदेशियों को सिर्फ डबल विदेही नहीं कहो, डबल तीव्र पुरुषार्थी। हैं ना डबल पुरुषार्थी? अच्छा है। बापदादा ने देखा कि स्व पुरुषार्थ के ऊपर जो भी ग्रुप टर्न बाई टर्न आये उन्हों का अटेन्शन अच्छा रहा है। टीचर्स ने भी मेहनत की है और स्वयं भी पुरुषार्थ अच्छा किया है। कईयों

के पत्र भी बाप के पास पहुंचे हैं। तीव्र पुरुषार्थ की अनुभूति की है। इसलिए डबल पुरुषार्थी नहीं लेकिन डबल तीव्र पुरुषार्थी। बापदादा देख रहे हैं कि सेवा का लक्ष्य डबल तीव्र पुरुषार्थी बच्चों ने अपनी अपनी एरिया में कोई गांव भी रह नहीं जाए, यह अटेन्शन अच्छा दिया है। और प्लैन बनाया भी है। उल्हना तो नहीं रहेगा ना। कोई भी गांव वाला या शहर वाला आपको यह तो उल्हना नहीं देगा कि आपने बताया नहीं, हमारा बाप आया और आपने हमें बताया नहीं। उस समय तो चिल्लायेंगे ना! इसलिए सेवा का उमंग है और अटेन्शन भी है स्व उन्नति के प्रति। तीव्र पुरुषार्थ का अर्थ ही है जो गलती एक बार करेक्ट किया, वह दुबारा नहीं हो। ऐसे नहीं कि एक ही गलती बार-बार होती रहे और कहो हम तीव्र पुरुषार्थी हैं। इसको तीव्र पुरुषार्थ नहीं कहेंगे। बापदादा ने सुना है कि मधुबन में भी तीव्र पुरुषार्थियों का ग्रुप है, वह हाथ उठाओ। तीव्र पुरुषार्थी। तो तीव्र पुरुषार्थ का अर्थ समझा, एक बार जो गलती हो जाए, जगदम्बा माँ ने शुरू-शुरू में सभी को यह अटेन्शन खिंचवाया। कहते तीव्र पुरुषार्थी हैं और एक गलती बार-बार होती रहे, तो करेक्शन क्या किया? इसीलिए तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप मधुबन निवासी वा मधुबन के पास रहने वाले जो भी हैं डबल फारेनर्स भी बापदादा ने टाइटल दिया है, डबल तीव्र पुरुषार्थी। तो बार-बार वही भूल होती रहे तो तीव्र पुरुषार्थी का नाम खराब हो जाता है। इसलिए आप तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप ध्यान देना। अच्छा है। आपस में ग्रुप बनाया है, अच्छा करते।
(02.04.2008)

ड्रिल तो याद है ना। भूल तो नहीं गये हैं क्योंकि बापदादा जानते हैं आगे का समय अति हाहाकार का होगा। आप सबको सकाश देनी पड़ेगी और सकाश देने में ही आपका अपना तीव्र पुरुषार्थ हो जायेगा। थोड़े समय में सकाश द्वारा सर्व शक्तियाँ देनी पड़ेगी और जो ऐसे नाजुक समय में सकाश देंगे, जितनों को देंगे, चाहे बहुतों को, चाहे थोड़ों को उतने ही द्वापर और कलियुग के भक्त उनके बनेंगे। तो संगम पर हर एक भक्त भी बना रहे हैं क्योंकि दिया हुआ सुख और

शान्ति उनके दिल में समा जायेगा और भक्ति के रूप में आपको रिटर्न करेंगे। अच्छा। (20.10.2008)

डबल विदेशी :- अच्छा, फॉरेन वाले उठो। फॉरेन वाले भी चतुर है बहुत। हर ग्रुप में फॉरेन वालों की अब सेन्टर नहीं है। हर ग्रुप में अपना पार्ट बजाते रहते हैं और बापदादा और ब्राह्मण परिवार आप सबकी हिम्मत को देख खुश होते हैं। अभी तो बापदादा ने डबल फॉरेनर्स नाम बदलके कौन सा नाम रखा है? डबल पुरुषार्थी। तो सभी का डबल अर्थात् तीव्र पुरुषार्थी है ना! जो समझते हैं हमारा तीव्र पुरुषार्थ है वह हाथ उठाओ। हाथ हिलाओ। अच्छा, मैजारिटी हैं, मुबारक हो। तीव्र पुरुषार्थ की मुबारक हो। अभी तीव्र पुरुषार्थी तो हो लेकिन अभी तीव्र सेवाधारी यह भी पार्ट बजाओ क्योंकि स्व पुरुषार्थ के साथ सेवा का पुरुषार्थ भी अभी तीव्र करना है क्योंकि सेवा का चांस अभी है, आगे चलके सेवा करने चाहो तो चांस नहीं मिलेगा। सिवाए मन्सा सेवा के। इसलिए सम्बन्ध-सम्पर्क की सेवा और वाणी की सेवा करने का चांस अभी है। जितनी कर सको उतनी ट्रिबल करो। फॉरेन के साथ बापदादा भारत को भी कह रहा है। हर एक को अपना स्वयं का और सेवा का रिकार्ड देना ही है। अपने आप ही चेक करो जितना हो सकता है उतना स्वयं प्रति वा सेवा प्रति अटेन्शन है? बाकी अच्छा है अभी फॉरेन काफी संस्कारों में अपने अनादि संस्कार कहो, उसमें आ गये हैं। अभी ब्राह्मण कल्चर के आदती हो गये हैं। संस्कारों के भी और स्थूल कल्चर के भी। तो मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है। अच्छा।
(15.11.2008)

बापदादा ने सुनाया है कि एक लास्ट टाइम की लास्ट एक घड़ी होगी जिसमें फुलस्टाप लगाना पड़ेगा। लेकिन देखा क्या? लगाना फुलस्टाप है लेकिन लग जाता है क्वामा, दूसरों की बातें याद करते, यह क्यों होता, यह क्या होता, इसमें आश्चर्य की मात्रा लग जाती। तो फुलस्टाप नहीं लगता लेकिन क्वामा, आश्चर्य की निशानी और क्यूं, क्वेश्चन की क्यू लग जाती। तो इसको चेक

करना। अगर फुलस्टाप लगाने की आदत नहीं होगी तो अन्त मते सो गति श्रेष्ठ नहीं होगी। ऊंची नहीं होगी। इसलिए बापदादा होमवर्क दे रहे हैं कि खास कल अमृतवेले चेक करना और चेंज करना पड़ेगा। एक सप्ताह फुलस्टाप सेकण्ड में लगाने का बार-बार अभ्यास करो और 18 जनवरी में, जनवरी का मास सभी को बाप समान बनने का उमंग आता है, तो 18 जनवरी में सभी को अपनी चिटकी लिख करके बाक्स में डालना है कि 18 तारीख तक क्या रिजल्ट रही? फुलस्टाप लगा वा और मात्रायें लग गई? पसन्द है? पसन्द है? कांध हिलाओ क्योंकि बापदादा का बच्चों से बहुत प्यार है, अकेला नहीं जाने चाहता, तो क्या करेंगे? अभी फास्ट तीव्र पुरुषार्थ करो। अभी ढीला-ढाला पुरुषार्थ सफलता नहीं दिला सकेगा।

पहली बारी आने वालों को विशेष मुबारक दे रहे हैं। लेट आये हो, टूलेट में नहीं आये हो। लेकिन तीव्र पुरुषार्थ का वरदान सदा याद रखना, तीव्र पुरुषार्थ करना ही है। करेंगे, गे गे नहीं करना, करना ही है। लास्ट सो फास्ट और फर्स्ट आना है। अच्छा। अभी क्या करना है?

(30.11.2008)

आपकी विशेष धारणा कौन सी है? पवित्रता की धारणा। तो चेक करो - सदा मन, वचन, कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में सम्पूर्ण और सदा पवित्रता की नेचर नैचुरल बनी है? जैसे वहाँ अपने राज्य में पवित्रता का स्वधर्म स्वत: ही होगा, ऐसे ही इस समय पवित्रता की धारणा नैचुरल और नेचर बन गई है? क्योंकि जानते हो कि आपका अनादि स्वरूप और आदि स्वरूप पवित्रता है। तो चेक करो - कि एक धर्म अर्थात् पवित्रता नैचुरल है? जो नेचर होती है वह न चाहते भी काम कर लेती है क्योंकि कई बच्चे जब रूहरिहान करते हैं तो क्या कहते हैं? बहुत मीठी-मीठी बातें करते हैं, कहते हैं चाहता नहीं हूँ, चाहती नहीं हूँ, लेकिन कभी मन्सा में, कभी वाचा में कोई न कोई अपवित्रता का अंश इमर्ज हो जाता है? संस्कार बहुत जन्मों का है ना इसीलिए हो जाता है। तो एक धर्म का अर्थ है पवित्रता की धारणा नेचर और नैचुरल हो। चाहे वाणी में भी आवेश आ

जाता है, कहते हैं क्रोध नहीं था थोड़ा सा आवेश आ गया। तो आवेश क्या है? क्रोध का ही तो बच्चा है। तो एक धर्म के संस्कार कब नैचुरल बनेंग? तो चेक करो लेकिन चेक के साथ बाप द्वारा मिली हुई शक्तियों द्वारा चेन्ज करो। अभी फिर भी बापदादा पहले से ही अटेन्शन खिंचवा रहे हैं कि अभी फिर भी चेक करके चेन्ज करने का तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो मार्जिन है लेकिन कुछ समय के बाद अचानक टूलेट का बोर्ड लगना ही है। फिर नहीं कहना कि बाबा ने तो बताया ही नहीं। इसलिए अभी पुरुषार्थ का समय तो गया लेकिन तीव्र पुरुषार्थ का समय अभी भी है तो चेक करो लेकिन सिर्फ चेक नहीं करना, चेन्ज करो साथ में। कई चेक करते हैं लेकिन चेन्ज करने की शक्ति नहीं है। चेक और चेन्ज दोनों साथ-साथ होना चाहिए क्योंकि आप सबका स्वमान वा आप सबकी महिमा क्या है? टाइटिल क्या है? मास्टर सर्वशक्तिवान। है, मास्टर सर्वशक्तिवान है या शक्तिवान है? जो कहते हैं मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, वह हाथ उठाओ। अच्छा। तो मास्टर सर्वशक्तिवान मुबारक हो लेकिन मास्टर सर्वशक्तिवान और चेन्ज नहीं कर सकें तो क्या कहा जायेगा? अपने ही संस्कार को, नेचर को परिवर्तन करने चाहे भी और नहीं कर सके तो क्या कहेंगे? अपने से पूछो मास्टर शक्तिवान, या मास्टर सर्वशक्तिवान? मास्टर सर्वशक्तिवान ने संकल्प किया - करना ही है और हुआ पड़ा है। होगा, देखेंगे.... यह होता नहीं है। तो अभी समय के प्रमाण रिजल्ट यह होनी है कि जो सोचा, तो संकल्प और स्वरूप बनना साथसाथ हो।

(15.12.2008)

जो पहली बारी आये हैं वह उठकर खड़े हो जाओ। तो पहली बारी आने वालों को अपना जन्म दिन मनाने की मुबारक हो। अभी जैसे पहले बारी आये हो ऐसे ही नम्बर भी पहला लेना है। बापदादा का वायदा है कि भले अभी लास्ट में आये हैं लेकिन अभी लेट का बोर्ड लगा है, टूलेट का नहीं लगा है। तो कोई भी लास्ट इज फास्ट और फास्ट इज फर्स्ट ले सकते हो। यह नहीं समझो तो हम तो बहुत देरी से आये हैं लेकिन अगर अभी भी डबल तीव्र पुरुषार्थ लक्ष्य और

लक्षण प्रमाण दोनों समान बनायेंगे, लक्ष्य ऊँचाा और लक्षण कम तो फर्स्ट नहीं हो सकते। लेकिन अगर लक्ष्य और लक्षण समान बनाते चलेंगे तो आप एक्जैम्पुल बन सकते हो, लास्ट और फर्स्ट का। इसीलिए पुरुषार्थ का लक्ष्य रखो। फिर अगर टूलेट का बोर्ड लग गया तो फर्स्ट नम्बर नहीं आ सकेंगे। बापदादा खुश है, फिर भी हिम्मत रखकर उमंग उत्साह से सम्मुख पहुंच तो गये। और अभी भी सदा कहाँ भी रहो लेकिन मर्यादापूर्वक चलते चलो और बाप के दिल के समीप रहो तो बहुत थोड़े समय में भी अनुभव कर सकते हो। अभी गोल्डन चांस है कोई भी कर सकता है। चाहे भारत में हैं, चाहे विदेश में हैं। तो समझा डबल ट्रिबल पुरुषर्थ करना पड़ेगा। सदा बाप के साथ कम्बाइन्ड रहना पड़ेगा। कोई भी मुश्किल आये बोझ आवे तो बाप को देने आता है, तो बेफिकर बन उड़ते रहेंगे। दिल में बोझ नहीं रखो। कई बच्चे कहते हैं एक मास हो गया है, १५ दिन हो गये हैं, चलता ही रहता है, और उस १५ दिन में अगर आपका काल आ जाए तो? उसी समय बोझ बाप को दे दो, देना आता है? देना जरूर सीखो। लेना तो आता है देना भी सीखो। तो क्या करेंगे? देना सीखा है? बापदादा आया ही किसलिए है? बच्चों का बोझ लेने के लिए। कौन है जो इतनी हिम्मत रखता है, वह हाथ उठाओ। शरीर का हाथ उठा रहे हो या मन का हाथ उठा रहे हो? मन का हाथ उठाना। अच्छा। बापदादा ऐसे बच्चों को पदम पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। (31.12.2008)

बापदादा ने पहले भी सुनाया कि सारे सृष्टि चक्र के अन्दर एक ही बापदादा है जो फलक से कहते हैं मेरा एक एक बच्चा राजा बच्चा है। स्वराज्य अधिकारी है। तो फरिश्ता अर्थात् स्वराज्य अधिकारी। ऐसा स्वराज्य अधिकारी आत्मा, लाइट के स्वरूपधारी। कोई भी ऐसे लाइट के डबल हल्केपन की स्थिति में स्थित होके अगर कोई को भी मिलते हैं तो उनके मस्तक में आत्मा ज्योति का भान चलते फिरते भी दिखाई देगा। अभी यह तीव्र पुरुषार्थ का लक्ष्य और लक्षण सदा इमर्ज रखो। जैसे ब्रह्मा बाप में देखा अगर कोई भी मिलता, दृष्टि लेता तो बात करते-करते क्या दिखाई देता? और लास्ट में अनुभव किया कि ब्रह्मा बाप

ज्यादा बात करते-करते भी मीठी अशरीरी स्थिति में स्थित हो जाता। दूसरे को भी चाहे कितना भी सर्विस समाचार हो, लेकिन सेकण्ड में अशरीरीपन का अनुभव कराते रहे और बार-बार कोई भी मुरल में चेक करो, बार-बार मैं अशरीरी आत्मा हूँ, आत्मा का पाठ एक ही मुरली में कितने बार याद दिलाता रहा। तो अभी समय अनुसार छोटी-छोटी विस्तार की बातें, स्वभाव-संस्कार की बातें अशरीरी अवस्था से दूर कर देती हैं। अभी परिवर्तन चाहिए।

तो संगमयुग का लक्ष्य क्या है? हम सब आत्माओं का बाप आ गया, वर्सा तो बाप द्वारा मिलेगा ना! वह प्रभाव फरिश्ता अवस्था से वायुमण्डल फैलेगा। इन्हों की दृष्टि से लाइट मिलती है, इन्हों की दृष्टि में रूहानियत की लाइट नज़र आती है, तो अभी तीव्र पुरुषार्थ का यही लक्ष्य रखो मैं डबल लाइट फरिश्ता हूँ, चलते फिरते फरिश्ता स्वरूप की अनुभूति को बढ़ाओ। अशरीरीपन के अनुभव को बढ़ाओ। सेकण्ड में कोई भी संकल्पों को समाप्त करने में, संस्कार स्वभाव में डबल लाइट। कई बच्चे कहते हैं हम तो हल्के रहते हैं लेकिन हमको दूसरे जानते नहीं है। लेकिन ऐसे डबल लाइट फरिश्ता, डबल लाइट उसकी लाइट छिप सकती है? छोटी सी स्थूल लाइट टार्च हो या माचिस की तीली हो लाइट कहाँ भी जलेगी, छिपेगी नहीं और यह तो रूहानी लाइट है तो अपने वायुमण्डल से उन्हों को अनुभव कराओ कि यह कौन हैं! चाहे जगदम्बा चाहे दादी ने कहा कि मुझे जानते नहीं है। अपने वायुमण्डल से सर्व की प्यारी। इसीलिए दादी का मिसाल देते हैं क्योंकि ब्रह्मा बाप के लिए भी सोचते हैं ब्रह्मा बाबा में तो शिवबाबा था, शिव बाप के लिए भी साचेते हैं कि वह तो निराकार, न्यारा और निराकार, हम तो स्थूल शरीरधारी हैं। इतने बड़े संगठन में रहने वाले हैं, हर एक के संस्कार के बीच में रहने वाले हैं, संस्कार को मिलाना अर्थात् फरिश्ता बनना। संस्कार को देख कई बच्चे दिलशिकस्त भी हो जाते हैं, बाबा बहुत अच्छा, ब्रह्मा बाप बहुत अच्छा, ज्ञान बहुत अच्छा, प्राप्तियाँ बहुत अच्छी, लेकिन संस्कार स्वभाव मिलाना अर्थात् सर्व के प्यारे बनना। कोई कोई के प्यारे नहीं, क्योंकि कई बच्चे कहते हैं कि कोई कोई से प्यार विशेषता को देख करके

भी हो जाता है। इनका भाषण बहुत अच्छा है, इसमें फलानी विशेषता बहुत अच्छी है, वाणी बहुत अच्छी है, फरिश्ता बनने में यह विघ्न आता है। प्यारे भले बनाओ, लेकिन मैं आत्मा न्यारी हूँ, न्यारी स्टेज से प्यारा बनाओ। विशेषता से प्यारा नहीं। यह इसका गुण मुझे बहुत अच्छा लगता है ना वह धारण भले करो लेकिन इसके कारण सिर्फ प्यारा बनना वह रांग है। फरिश्ता सभी का प्यारा। हर एक कहे मेरा, अपनापन, ऐसी फरिश्ते अवस्था में विघ्न दो चीज़ें डालती हैं। एक तो देह भान और देह अभिमान, ज्ञान में जितना आगे जाते है, तो स्वयं के प्रति भी कभी कभी देह अभिमान आ जाता है, वह अभिमान नीचे गिराता है, देह अभिमान क्या आता है? जो भी कोई विशेषता है ना, उस विशेषता के कारण अभिमान रहता है, मैं कोई कम हूँ, मेरा भाषण सबको पसन्द आता है। मेरी सेवा का प्रभाव पड़ता है, कोई भी कला मेरी हैण्डलिंग बहुत अच्छी है, मेरा कोर्स कराना बहुत अच्छा। कोई न कोई ज्ञान में आगे बढ़ने में, सेवा में आगे बढ़ने में यह अभिमान अपने प्रति भी आता और दूसरे के गुण या कला, या विशेषता प्रति भी प्यार हो जाता। लेकिन याद कौन आयेगा? देहभान ही याद आयेगा ना, फलाना बुद्धि का बहुत अच्छा है, मेरी हैण्डलिंग बहुत अच्छी है, यह अभिमान सेवा वा पुरुषार्थ में आगे बढ़ने वालों को अभिमान के रूप में आता है। तो यह भी चेक करना है, और अभिमान वाले को, अभिमान है इसको चेक करने का साधन है, अभिमान वाले को जरा भी कोई ने अपमान किया, उसके विचार का, उसकी राय का, उसकी कला का, उसकी हैण्डलिंग का अपमान बहुत जल्दी महसूस होगा। और अपमान महसूस हुआ, उसकी और सूक्ष्म निशानी क्रोध का अंश पैदा होता है, रोब। वह फरिश्ता बनने नहीं देता। तो वर्तमान समय के हिसाब से बापदादा फिर से इशारा दे रहा है, अपना संगमयुग का लास्ट स्वरूप फरिश्ता अब जीवन में प्रत्यक्ष करो, साकार में लाओ। फरिश्ता बनने से अशरीरी बनना बहुत सहज हो जायेगा। अपनी चेकिंग करो, सूक्ष्म रूप में भी लगाव कोई विशेषता या अपनी या और किसक, अभिमान तो नहीं है? कई बच्चों की छोटी सी बात भी होगी ना, तो अवस्था नीचे ऊपर हो जाती है।

दिलखुश, चेहरा खुश के बजाए या चिंतन वाला चेहरा या चिंता वाला चेहरा, और चलते चलते दिलशिकस्त भी हो जाते। दिलखुश के बजाए दिलशिकस्त। तो समझा, अब अपने संगमयुग की लास्ट स्टेज फरिश्तेपन के संस्कार इमर्ज करो। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा, फालो फादर करना है ना। बात करते करते लास्ट में कई बच्चों का अनुभव है, सुनाने आये समाचार लेकिन समाचार से परे, आवाज से परे स्थिति का अनुभव किया हुआ देखा है। बातों का समाचार सुनाने, बहुत प्लैन बनाकर आते यह बताऊंगा, यह बताऊंगा, यह पूछूंगा लेकिन सामने आते क्या बोलना था वही भूल जाता। तो यह है फरिश्ता अवस्था। तो क्या आज पाठ पक्का किया? मैं कौन? फरिश्ता। किसी बातों से, किसी विशेषताओं से, अपनी विशेषता से, देह अभिमान से परे डबल लाइट फरिश्ता क्योंकि फरिश्ता बनने के बिना देवता का ऊँचा पद नहीं मिलेगा। सतयुग में तो आ जायेंगे, क्योंकि बच्चे बने हैं, वर्सा तो मिलेगा लेकिन श्रेष्ठ पद नहीं। जो वायदा है साथ रहेंगे, साथ साथ राज्य करेंगे, तख्त पर भले नहीं बैठे लेकिन राज्य अधिकारी बनें, वहाँ की राज्य सभा देखी है ना। जो भी राज्य सभा के अधिकारी हैं, वह तिलक और ताजधारी, राज्य का तिलक, राज्य की निशानी है ताज। तो बहुत समय से स्वराज्य अधिकारी, बीच-बीच में नहीं। बहुत समय के स्वराज्य अधिकारी तख्त पर भले नहीं बैठे लेकिन रॉयल फैमिली के अधिकारी बन जाते हैं। अच्छा।

(05.02.2009)

बापदादा ने पहले ही कह दिया है कि खजाने जमा करने की बैंक सिर्फ इस समय संगमयुग में हैं फिर सारा कल्प जमा करने की बैंक नहीं मिलेगी। जो अब जमा किया, वह काम में लगता रहेगा। लेकिन जमा करने की बैंक अब संगमयुग पर खुलती है। इसलिए क्या कहते हो आप, सभी को सन्देश में सुनतो हो ना, अब नहीं तो कब नहीं। तो आप सबको याद है ना! अब नहीं तो कब नहीं। सदा याद रहता है यह? क्योंकि संगमयुग का जन्म सबसे छोटा सा लेकिन अमूल्य जन्म है। इस जन्म का मूल्य सारा कल्प चलता है। तो चेक करते हो,

हमारा जमा का खाता कितना है? जितना चाहते हो उतना जमा होता है? क्योंकि बापदादा ने पहले ही कह दिया है कि अभी चलने का समय समाप्त हुआ। उड़ने का समय है। पुरुषार्थ का समय पूरा हुआ लेकिन अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। वह भी थोड़ा है। इसलिए बापदादा डबल विदेशियों को टाइटिल दिया है डबल तीव्र पुरुषार्थी। बोलो, डबल तीव्र पुरुषार्थी हो, हाथ उठाओ। डबल तीव्र पुरुषार्थी, पास। अच्छा। बापदादा तो जन्म की मुबारक के साथ आपको बधाई भी देते हैं। पदम पदमगुणा बधाईयाँ हो, बधाईयाँ हो, बधाईयाँ हो।

बापदादा ने देखा जो बापदादा ने होमवर्क दिया था, ओ.के. का। वह कई बच्चों ने अटेन्शन दिया है। लेकिन 100 मार्क्स बहुत थोड़ों के हैं। 50 परसेन्ट वाले ज्यादा है। लेकिन बापदादा यही चाहते हैं, सुनाये क्या चाहते हैं? बापदादा की यही हर एक आशाओं के दीपक, आशायें सम्पन्न करने वाले महावीर बच्चों की यही बाप की आशा है कि समय अनुसार अगर अब से बहुतकाल का चार्ट तीव्र पुरुषार्थ का जमा का नहीं किया तो तीन शब्द बापदादा समय प्रति समय याद दिलाता है एक अचानक, दूसरा एवररेडी और तीसरा बहुत समय का खाता जमा क्योंकि बापदादा चाहते हैं कि अपने राज्य में, अभी तो खुशी है ना अपना राज्य आय कि आया। जैसे अभी सन्देश देते हो बाप आया है, ऐसे यह भी खुशखबरी सुनाते हो कि अपना दैवी राज्य सुख शान्तिमय राज्य आया कि आया। जब सबको यह सन्देश देते हो तो अपना पुरुषार्थ भी तीव्र बहुत समय का जमा करने वाला अपने राज्य में अन्त तक फर्स्ट जन्म से 21 जन्म फुल राज्य भाग्य के अधिकारी बनें। यह हिसाब बहुतकाल से स्मृति में रखो क्योंकि मजा नये घर में हैं। अगर दो तीन जन्म के बाद आये, दो तीन मास मकान पुराना हो जाएं तो क्या कहेंगे, नया है या ३ मास हो गया है। तो बापदादा चाहते हैं कि एक एक बापदादा का लाडला बच्चा वाह वाह बच्चा, बाप के दिलतख्तनशीन बच्चा, पहले जन्म में ब्रह्मा बाप के साथी होके आये। पसन्द है! पसन्द है? पसन्द है? अच्छा। तो क्या करना पड़ेगा? करना भी तो पड़ेगा ना। पसन्द तो है, बाप को भी पसन्द है लेकिन करना क्या पड़ेगा? अब से, चलो

बीती सो बीती, बापदादा माफ कर देंगे, बीती। अब से बर्थ डे की सौगात बाप को क्या देंगे? कुछ तो सौगात देंगे ना बाप को। बाप का जन्म दिन मनाने आये हो, तो बाप को सौगात क्या देंगे? जो बाप की आशा है हर एक बच्चे में, लास्ट जन्म में फास्ट हो सकते हैं। जो पहली बारी आये हैं वह हाथ उठाओ। अच्छा।

तो बापदादा सभी लास्ट आने वाले बच्चों को, पहली बारी आने की पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। लेकिन एक भाग्य भी बता रहे हैं, भाग्य बनाने की मार्जिन हैं क्योंकि टूलेट का बोर्ड नहीं लगा है। अगर कोई लास्ट भी फास्ट पुरुषार्थ करे लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं, फर्स्ट नम्बर नहीं, वह तो प्रसिद्ध हो गये हैं, लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आ सकते हैं। पसन्द है? आने वाले नये बच्चों को पसन्द है? चांस है। बापदादा सीट दे देंगे लेकिन कुछ करना भी तो पड़ेगा। एक-एक श्वांस, एक-एक संकल्प अटेन्शन, हर श्वांस, हर संकल्प समर्थ हो। व्यर्थ न हो क्योंकि आप सबका चाहे पहले वालों का, चाहे पीछे वालों का लेकिन टाइटिल क्या है? समर्थ बच्चे हैं, कमजोर बच्चे नहीं। बापदादा यादप्यार क्या देते हैं? रोज़ का यादप्यार लाडले, सिकीलधे, दिलतख्तनशीन बच्चे, इसलिए बाप यह गोल्डन चांस दे रहा है लेकिन लो। बाप देगा, बंधा हुआ है। है कोई तीव्र पुरुषार्थी। चांस है। टूलेट का बोर्ड लग गया फिर फिनिश। लेकिन बापदादा को जन्म की सौगात क्या देंगे? जन्म उत्सव मनाने आये हो ना! बापदादा ने तो आप बच्चों के जन्म दिन पर आप सब बच्चों को विशेष सौगात दी है कि 90 परसेन्ट आपका तीव्र पुरुषार्थ आज से अन्त तक अगर है तो 10 परसेन्ट बापदादा बढ़ा के देगा। मंजूर है। अभी व्यर्थ खत्म। जैसे देखो, सतयुग के देवतायें आते हैं ना, तो उन्हों को पता नहीं यहाँ की भाषा क्या बोलते हैं। पुरुषार्थ शब्द कहेंगे ना, तो वो कहेंगे पुरुषार्थ क्या, क्योंकि प्रालब्ध वाले हैं ना। ऐसे आप तीव्र पुरुषार्थियों को स्वप्न में वा संकल्प में वा प्रैक्टिकल कर्म में व्यर्थ क्या होता है, उसकी समाप्ति हो। है हिम्मत? 10 परसेन्ट, क्योंकि बाप ग्रेस में देंगे। है मंजूर। हाथ उठाओ। कितना परसेन्ट पक्का? 100 परसेन्ट, नहीं 101 परसेन्ट, क्योंकि बापदादा को बच्चों के बिना, बच्चों के साथ बिना

अच्छा नहीं लगता। बाप समझते हैं जब मेरा बाबा कह दिया, बाबा ने कह दिया मेरा बच्चा, तो बाप समान तो बनना पड़े। अभी दृढ़ संकल्प की आवश्यकता है। आप लोगों ने किताब छपाया है ना। सफलता की चाबी है दृढ़ संकल्प। तो संकल्प को कॉमन नहीं करो। आप हो कौन? अगर यहाँ का प्रेजीडेन्ट रिवाजी चलन चले तो अच्छा लगेगा, और आप कौन हो? आप तो तीन तख्त के निवासी हो। सबसे बड़ा तख्त बापदादा का दिलतख्त। तो दिलतख्त वाले पहले जन्म के साथी तो बनेंगे। भल तख्त पर एक बैठेगा लेकिन रॉयल फैमिली राज्य अधिकारी तो बन सकते हो। तो साथ निभाने वाले, घर तक तो साथ चलेंगे। बापदादा कैसे भी ले जायेंगे, ब्रह्मा बाप चला जायेगा और आप बैठे रह जायेंगे, अच्छा लगेगा? राजयोगी हो ना! क्या टाइटिल देते हो अपने को और दूसरे को भी क्या सिखाते हो? राजयोग या प्रजायोग? चाहे रॉयल प्रजा भी हो लेकिन प्रजायोगी तो नहीं हो। राजयोगी हो। तो सभी को बाप की आप सब बच्चों के प्रति दी हुई सौगात याद रहेगी? कब तक? अन्त तक। बापदादा ने देखा पुरुषार्थ बहुत करते हैं, बापदादा जब देखते हैं बच्चे मेहनत बहुत कर रहे हैं तो बच्चों की मेहनत देखकर बाप को अच्छा नहीं लगता है। इसलिए मुहब्बत में रहो तो मेहनत खत्म हो जायेगी। मेरा बाबा, तो और मेरा खत्म, जब मेरा बाबा कहा तो अनेक मेरा उसमें खत्म हो गया ना। एक खिलौना लाते हो ना एक में एक, एक में एक होता है। एक में 10-12 समा जाते हैं, खिलौना बताते हो तो एक मेरा बाबा, मेरा बाबा कहने वाले हो ना। मेरा बाबा है ना! महारथियों का बाबा तो नहीं। मेरा बाबा। जब मेरा बाबा है तो हद का मेरा तेरे में समा लो। मेरे के बजाए तेरा कहो, कितना फर्क है। मेरा और तेरा कितना फर्क है? मे और ते। एक शब्द का फर्क है। तो पक्का है ना मेरा बाबा। पक्का है, कितना परसेन्ट? 100 परसेन्ट, 100 एक? ऐसे एक अंगुली उठाओ। जो 101 कहते हैं, वह उठाओ। बापदादा देख रहे हैं। टी.वी. में भी देख रहे हैं।

(22.02.2009)

जो पहली बारी आये हैं, पहले बारी बापदादा से मिलने आये हैं वह उठो। देखा आधा क्लास पहले बारी वाला है। पीछे वाले हाथ उठाओ। खड़े होकर देखो। जो भी पहले बारी आये हैं उन्हों को बापदादा नये बर्थ का, बर्थ डे की मुबारक दे रहे हैं। लोग कहते हैं लाख-लाख बधाई हो बाप कहते हैं पदम पदमगुणा बधाई हो। और बापदादा अभी आने वालों को सदा एक चांस देते हैं वह चांस है कि अभी आने वाले भी अगर तीव्र पुरुषार्थ करें तो बापदादा वा ड्रामा उन्हों को लास्ट सो फास्ट, फास्ट सो फर्स्ट, यह भी आगे नम्बर दे सकता है। चांस है। चांसलर बनो। सिर्फ अटेन्शन देना पड़े।

(07.04.2009)

४० देशों के ३०० डबल विदेशी भाई बहिनें आये हैं:- बापदादा खुश होते हैं यह हर साल का संगठन यहाँ भारत के भाई बहिनों को भी अच्छा लगता है, बापदादा को तो अच्छा लगता ही है, आपस में मिलके लेन देन करके हर वर्ष का आगे के लिए सेवा और स्व का चार्ट दोनों बातें करते एक दो को उमंग उत्साह बढ़ाते हो, यह देख बापदादा खुश होते हैं। आप सबको भी इतने भाई बहिन मिलते हैं, देखते हैं, खुश होते हैं तो आप भी खुश होते हैं ना। अच्छा है बापदादा ने देखा तो बापदादा के डायरेक्शन को प्रैक्टिकल में लाने में उमंग उत्साह से एक दो को अटेन्शन दिलाते हैं। प्राब्लम जो पुरुषार्थ को ढीला करती हैं वह एक दो को सुनाने से स्पष्ट करने से पुरुषार्थ में भी तीव्रगति आती है। और भाई बहिनों से मिलके एक एक के पुरुषार्थ को देख आगे बढ़ते भी हो। तो यह प्रोग्राम बापदादा को पसन्द है। आपको भी पसन्द है ना! पसन्द है? पाण्डवों को पसन्द है? अच्छा है अब तो बापदादा ने सब डबल पुरुषार्थी बच्चों को सौगात नम्बरवन बनके लेने का इशारा भी किया है। हर एक सेन्टर और उसके कनेक्शन में आने वाले सेन्टर निर्विघ्न और तीव्र पुरुषार्थ की गति में नम्बरवन बनें। तो जो नम्बरवन बनेगा उसको सौगात देंगे बापदादा। खुद तो बनें लेकिन सभी को भी साथ लेके चलना है ना। संगठन को भी मजबूत करना है। तो देखेंगे

नम्बरवन कौन लेता है! जो भी लेवे, जितने भी लेवें बापदादा को खुशी है। ठीक है ना! अभी से लेके यह लक्ष्य रखो कि हमें उड़कर उड़ाना है। चलने वाले नहीं, उड़ने वाले, उड़ती कला का सर्टीफिकेट लेना है। कभी कभी नहीं, सदा उड़ती कला। लेना है ना! सर्टीफिकेट लेना है? अभी हर दिन कोई न कोई बात में प्रोग्रेस करते चलो। चार सबजेक्ट हैं, चार सबजेक्ट में से कोई न कोई सबजेक्ट का लक्ष्य रख करके प्रैक्टिकल में लाके अपना चार्ट आगे बढ़ाते चलो। अच्छा है। बापदादा ने देखा तो विदेश में भी ऐसे बच्चे हैं जो बाबा जो चाहते हैं वह प्रैक्टिकल में लाते अपना पोतामेल रोज़ बापदादा को देते हैं। पुरुषार्थ अच्छा है इसलिए बापदादा जो ऐसे गुप्त पुरुषार्थी हैं उनको अमृतवेले रोज़ मुबारक खास देते हैं। तो बढ़ते चलो, तीव्र पुरुषार्थी बन उड़ते चलो। अच्छा।

(15.11.2009)

बापदादा अभी क्या चाहते हैं? हर बच्चा, क्योंकि बापदादा कुछ समय से लेके वार्निंग दे ही रहे हैं समय की। हर बच्चे की पढ़ाई की रिजल्ट का समय अचानक आना है। इसके लिए सदा एवररेडी। साथ-साथ बापदादा यह भी इशारा दे रहे हैं कि अभी समय है उड़ती कला के तीव्र पुरुषार्थ का। चल रहे हैं नहीं, उड़ रहे हैं। साधारण रीति से अपनी दिनचर्या व्यतीत करना, अब वह समय कामन पुरुषार्थ का गया इसलिए बापदादा इशारा दे रहे हैं, हर सेकण्ड, हर संकल्प चेक करो। मानो अपना तीव्र पुरुषार्थ न कर एक घण्टा साधारण पुरुषार्थ में रहे तो एक घण्टे में अचानक अगर फाइनल पेपर का टाइम आ गया तो अन्त मते सो गति, वह एक घण्टे का साधारण पुरुषार्थ कितना नुकसान कर देगा! इसलिए बापदादा हर बच्चे को, हर संकल्प, हर सेकण्ड समय के महत्व को, समय प्रति समय इशारा दे रहे हैं। हलचल के समय अचल रहने का पुरुषार्थ तीव्र पुरुषार्थी ही कर सकता। साधारण पुरुषार्थी एवररेडी बनने में समय लगा देगा और बापदादा ने कहा है कि सेकण्ड में बिन्दी अर्थात् फुलस्टॉप, अगर तीव्र पुरुषार्थ नहीं होगा तो क्या होता है? अनुभवी तो हैं। फुलस्टॉप के बजाए क्वेश्चन

मार्क तो नहीं बन जायेगा! बिन्दी कितना सहज है और क्वेश्चन कितना टेढ़ा बांका है। फुलस्टॉप तो फुलस्टॉप हो जाए। क्वामा की मात्रा भी नहीं हो, आश्चर्य की मात्रा भी नहीं हो। क्या करूं, यह सोचने का भी समय नहीं मिलेगा। तो कोई भी बच्चा यह सोच नहीं सकता कि इतना फास्ट पुरुषार्थ करना ही पेपर में पास होना है।

15 दिन तो कुछ भी नहीं हैं लेकिन बापदादा ट्रायल के लिए संकल्प भी वेस्ट नहीं, युद्ध नहीं विजयी। १५ दिन के फुल विजयी। मुश्किल है या इज़ी है? इज़ी है, हाथ उठाओ। इज़ी है? तो बापदादा यह १५ दिन की रिजल्ट देखेंगे। फिर आगे बढ़ायेंगे। 15 दिन तो कोई भी कर सकता है ना! कर सकते हैं ना! मधुबन वाले, मधुबन वाले हाथ उठाओ। यह आगे आगे मधुबन बैठा है। बहुत अच्छे हैं। फॉरेनर्स या इण्डिया वाले सभी को करना है। गांव वाले या बड़े शहर वाले सबको 15 दिन का रिकार्ड रखना है। क्या क्यों का, क्या करें बात ही ऐसी हुई, नहीं बताना। 80 परसेन्ट लेना ही है। फिर भी बापदादा हल्का कर रहा है, 20 परसेन्ट छोड़ रहा है क्योंकि बापदादा देखते हैं कि कहाँ-कहाँ चलते चलते माया अलबेला और आलस्य, रॉयल आलस्य यह था, यह था, यह रॉयल आलस्य, अलबेलापन यह तीव्र पुरुषार्थ में कमी डालता है क्योंकि अभी बापदादा सभी जो भी स्टूडेन्ट हैं, हर एक स्टूडेन्ट को अभी पहले यह १५ दिन की रिहर्सल कराके कुछ समय ऐसे ही अभ्यास कराने चाहते हैं, जो सभी से हाथ उठवाये, एवररेडी। सब हाथ उठा सके, समय का भी अभ्यास चाहिए। इसलिए यह थोड़ा सा अभ्यास कराते हैं। अच्छा।

(30.11.2009)

अच्छा जो इस बारी नये आये है वह उठ खड़े हो जाओ। अच्छा। बहुत आये है। आधा संगठन तो नया है। तो आपको सभी नये आने वालों को, सारे ब्रह्मण परिवार, बापदादा सबके तरफ से मधुबन आने की मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है। मुबारक के साथ एक बात याद रखना तो अभी कामन पुरुषार्थ का

समय गया, अभी समय है तीव्र पुरुषार्थ का, तो आप सभी लेट आये हो लेकिन बापदादा के प्यारे हो। टू लेट के बजाए लेट आये हो, बापदादा खुश है कि फिर भी लक के समय पहुंच गये हो इसलिए जो भी आये हो, बापदादा के प्यारे हो इसलिए चलना नहीं उड़ना। अभी चलेंगे ना तो नम्बर आगे नहीं ले सकेंगे इसीलिए उड़ती कला में चलना। चलना नहीं उड़ना। तो उड़ना तो फास्ट होता हैना, तो उड़ती कला से आगे जा सकते हो। यह मार्जिन है। इसी को ही तीव्र पुरुषार्थ कहते है। तो क्या करेंगे? उड़ेंगे। उड़ेंगे? अच्छा। जो भी बातें ऐसी आवे जो बेकार है, आनी नहीं चाहिए लेकिन आ जाती है क्योंकि पेपर तो होना है ना! तो क्या करेंगे? अगर ऐसी कोई बात आवे तो बापदादा को दे देना। देना आता है ना! लेना तो आता है लेकिन देना भी आता है ना। छोटे बन जाना। जैसे छोटे बच्चे होते है ना वह क्या करते है कोई भी चीज़ पसन्द नहीं आती है तो क्या करते है? मम्मी यह आप सम्भलो। ऐसे ही छोटे बनके बाप को दे दो। फिर अगर आवे, आयेगी, बापदादा ने देखा है कि बहुत समय रखी है ना, तो छोड़ने से फिर आती भी है लेकिन अगर आवे भी तो यही सोचना कि दी हुई चीज़ यूज़ की जाती है क्या! देना अर्थात् आपके पास आई, तो अमानत आई। आपने तो दे दी ना! तो आपकी रही नहीं। अमानत में ख्यानत नहीं करना चाहिए। आपको मदद मिलेगी तो यह मेरी नहीं है, यह अमानत है। मैंने दे दी इसमें फायदा हो जायेगा। क्योंकि समय कम है और पुरुषार्थ आपको तीव्र करना है। तो जो भी नये आये है बापदादा उन्हों को लक्की और लवली कहते है, जो आ तो गये अभी मेरा बाबा कहा है ना। हाथ उठाओ जो कहते हैं मेरा बाबा। जो भी आये हैं, मेरा बाबा कहते हैं। तो जब मेरा बाबा कहा तो और कोई मेरा है क्या! बाबा ही मेरा है ना। तो बाप पर अधिकार रख करके अमानत समझके बाप को दे दो। अपने पास आने नहीं देना। अच्छा है। फिर भी बाप को खुशी है, बाप को पहचान तो लिया। अभी सिर्फ यह ध्यान पक्का-पक्का रखना, उड़ना है, चलना नहीं है उड़ना है। अच्छा, बहुत है। अच्छा ब्राह्मणियाँ जो है क्लास टीचर्स, उन्हों को भी अपने नये भाई-बहिनों के ऊपर क्षमा करनी है। हर सप्ताह इन्हों का

हालचाल पूछते रहना, कोई प्रॉबलम तो नहीं है! और कोई भी प्रॉबलम हो तो सुना देना, उसका निवारण ले लेना। छोड़ नहीं देना। आया और गया, दिल में रखना नहीं। अच्छा। सारे परिवार की भी मुबारक है।

बापदादा अभी समय की सूचना बार-बार दे रहा है। फिर नहीं कहना हमने तो समझा अभी टाइम पड़ा है क्योंकि अपने को भी सम्पन्न बनाना है, सेवा में भी आगे जाना है दो काम है। एक पुरुषार्थ, पुरुषार्थ में एक याद और दूसरी सेवा दोनों में नम्बरवन हो। तीसरा स्वभाव संस्कार उसमें परिवतर्नन। यह नहीं कोई कहे यह है तो अच्छा, है तो अच्छा..... नहीं कहो है अच्छा। इसको कहा जाता है अच्छे ते अच्छा क्योंकि हालतें बदलती जायेंगी। आप चाहते हुए भी सेवा नहीं कर सकेंगे। बातें ऐसी होंगी जो व्यर्थ संकल्प चला देगी। इसलिए तीव्र पुरुषार्थ, धरनी पर पाँव नहीं हो, उड़ते रहो। फरिश्ते के पाँव धरती पर नहीं दिखाते है। तो स्थूल पाँव नहीं लेकिन यह स्थिति के पाँव। तो गुजरात बापदादा के मधुबन के सहयोगी बहुत है। नजदीक है ना। तो कभी भी कोई भी बात हो तो पहले किसको बुलावा होता है? आते है ना फोन, गुजरात से इतने भेज दो। अच्छा है। नजदीका का फायदा है, प्राप्ति भी है। इसलिए गुजरात के जो रेग्युलर स्टूडेन्ट है उन सबको बापदादा की एक-एक श्रीमत पर चलने वाला सैम्पुल बनना है। कोई भी सेन्टर पर जाये तो ऐसे दिखाई दे कि यह सब बापदादा के नजदीक वाले रत्न है। ठीक है! स्टूडेन्ट समझते है हाथ उठाओ, ऐसा कोई भी श्रीमत कम नहीं हो। ठीक है हिम्मत वाले है। अच्छी हिम्मत है।

(31.12.2009)

डबल विदेशी - विदेश में भी भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवायें चल रही हैं और चलती रहेंगी। बापदादा ने देखा कि नये-नये प्लैन बनाते रहते हैं और प्रैक्टिकल में कर भी रहे हैं, फारेन वाले इन्डिया वालों को अपना अनुभव सुनाके सेवा कर रहे हैं और इन्डिया वाले फारेन वालों को अपने अनुभव सुना करके देश विदेश में आवाज फैला रहे हैं, अभी भी प्रोग्राम कर रहे हैं ना। अच्छा है।

अभी दूसरा नम्बर है। (अभी सर्व इन्डिया प्रोग्राम चेन्नई में है) बापदादा के पास सभी का उमंग उत्साह का पत्र और यादप्यार एडवांस में मिली है, जो भी करते हैं, आरम्भ करते हैं तो पहले छोटा होता है फिर बढ़ता जाता है क्योंकि आजकल के समय में सभी को आवश्यकता लगती है, तीन सत्ता होते भी धर्म सत्ता भी है, आध्यात्मिकता अलग है, धर्म सत्ता अलग है लेकिन सत्ता तो है। तो भी जो चाहते हैं वह नहीं हो रहा है। तो सभी सोचने लगते हैं कि कमी किसकी है? तीन तो काम कर रही हैं, तो भी जो चाहते हैं वह नहीं हो रहा है। तो अभी चाहते हैं लेकिन समय का बहाना देते हैं। समय नहीं हैं। क्या करें, क्या नहीं करें... लेकिन ऐसे अगर एक दो ग्रुप अपने को सहयोगी बनायें तो बापदादा का वरदान है कि भारत स्वर्ग बनना ही है। दोनों बापू की आशायें पूर्ण होनी ही है। तो फारेन वाले भी मन्सा सेवा से सहयोगी हैं ना! बापदादा ने देखा कि वृद्धि सब धर्मो में हो रही है, एक धर्म नहीं सिर्फ हिन्दू नहीं लेकिन मुस्लिम, बुद्धिष्ठ सब धर्म, क्रिश्चियन, सब धीरे धीरे आध्यात्मिकता में रूची ले रहे हैं। पहले देखो ब्रह्माकुमारियों का नाम सुनके डरते थे, विनाश-विनाश क्या कहती हैं। और अभी क्या कहते हैं? अभी कहते हैं बताओ विनाश कब होगा, कैसे होगा और क्या करें? इसलिए होना तो है ही यह तो गैरन्टी है। आप सबको गैरन्टी है ना चाहे विदेश वाले चाहे भारत वाले गैरन्टी है ना, आपका सहयोग है ही है। होना ही है। ताली बजाओ। सभी को उमंग अच्छा है। और निमित्त बनी हुई आत्मायें चाहे पाण्डव, चाहे शक्तियां दोनों में उमंग उत्साह है। सिर्फ अभी बापदादा ने जो इशारा दिया पुरुषार्थ को तीव्र करो। पुरुषार्थ नहीं, पुरुषार्थ का समय गया अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है। और कभी-कभी पर नहीं ठहरो, अभी। अभी करना है, अभी बनना है। तो होना ही है। अच्छा।

(18.01.2010)

आज जो पहली बार आये है वह उठके खड़े हो। हाथ हिलाओ। बापदादा पहले बारी आने वालों को विशेष मुबारक दे रहे है क्योंकि टूलेट के

बजाए लेट में भी आ तो गये। और बापदादा सभी आने वालों को यह खुश खबरी सुनाते है कि अगर देरी से आने वाले भी तीव्र पुरुषार्थ अर्थात् उड़ती कला का पुरुषार्थ कर आगे बढ़ने चाहे तो तीव्र पुरुषाथ्र द्वारा आगे जा सकते हो। लेकिन तीव्र पुरुषार्थ। साधारण पुरुषार्थी नहीं। हर बारी बापदादा पहले बारी आने वालों को देख खुश भी होते है और सभी आने वाले को परिवार, सारा ही परिवार आपको देख करके खुश होते है। आ तो गये है, कुछ न कुछ वर्सा लेने के अधिकारी तो बनेंगे। इसलिए बापदादा भी कहते है भले पधारे, बाप के बिछुडे हुए बच्चे भले पधारे। अच्छा। बैठ जाओ। अच्छा।

बापदादा और एडवांस पार्टी दोनों का एक ही संकल्प है कि अब कब गेट खोलने आयेंगे। क्योंकि अकेले एडवांस पार्टी भी खोल नहीं सकती, बापदादा भी खोल नहीं सकते, साथ खोलेंगे। तो पूछते है एडवांस पार्टी वाले और बापदादा भी कहते है कि आखिर भी सभी निराकारी फरिश्ते स्वरूप में कब एवररेडी होंगे! आजकल प्रकृति भी बहुत पुकारती है, बोझ बहुत बढ़ जाता है। मन का भी, शरीरों का भी। इसलिए सभी आपका आवाह्न कर रहे है। अब थोड़ा-थोड़ा अपना एवररेडी का नज़ारा दिखाओ। वह नज़ारा है ज्यादा में ज्यादा समय या फरिश्ता रूप या निराकारी रूप, प्रैक्टिकल में प्रत्यक्ष करो अपना। गुप्त पुरुषार्थ करते है लेकिन अभी प्रत्यक्ष दिखाई दे, आपके मस्तक से लाइट का प्रकाश अनुभव हो। नयनों से रूहानियत की शक्ति अनुभव हो। मुख से, चेहरे से मधुरता, मुस्कुराता चेहरा अनुभव हो। तारीख पूछेंगे तो हर एक सोचेगा क्योंकि संगठन रूप में जो भी महावीर है, तीव्र पुरुषार्थी है उनको संगठन रूप में जाना है। आगे पीछे नहीं जाना है। पहले यहाँ एवररेडी का रूप प्रत्यक्ष होना है, जिससे प्रत्यक्षता हो बापदादा की, कार्य की। तो अभी तीव्र पुरुषार्थ करो, एक दो को सहयोग दो, आगे बढ़ाओ। कमजोर को सहारा दो। ऐसा संगठन बनाओ। अच्छा।

(30.01.2010)

चारों ओर के कम्बाइन्ड रहने वाले देख भी रहे हैं, सुन भी रहे हैं लेकिन सभी जो नहीं भी सुन रहे हैं, वह मुरली द्वारा तो सुनेंगे ही। तो चारों ओर के बाप के स्नेही सहयोगी मीठे-मीठे, प्यारे-प्यारे बच्चों को बापदादा पदम पदमगुणा बधाईयां भी दे रहे हैं, मुबारक भी दे रहे हैं और साथ-साथ प्रत्यक्षता का झण्डा जल्दी से जल्दी लहराने का संकल्प भी दे रहे हैं। समय पर नहीं रहो, समय को टीचर नहीं बनाना, जब बाप; बाप, शिक्षक और सतगुरू है तो जैसे आपकी जगत अम्बा ने किया, दो शब्द में नम्बर ले लिया। बाप का कहना और जगत अम्बा का करना - ऐसे तीव्र पुरुषार्थ किया और नम्बर लिया। आप सब भी मानते हो ना, तो आप भी फालो मदर जगत अम्बा। अच्छा। सबको यादप्यार और बहुत-बहुत दिल की दुआयें स्वीकार हो। साथ-साथ बाप बच्चों को मालिकपन में देख नमस्ते कर रहे हैं।

बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा फहराया:- आज शिव जयन्ती पर आप और बाप के जन्म दिवस का यादगार यह झण्डा लहराया। आप सबका भी झण्डा लहराया, सालिग्राम हो ना। एक-एक सालिग्राम बाप के साथ के हैं। जैसे बाप की पूजा होती वैसे सालिग्राम की भी होती है। उन सभी की निशानी बिन्दू लगाते हैं। तो शिवरात्रि पर विशेष बिन्दू की महिमा होती है। तो आज तो यह झण्डा लहराया लेकिन वह दिन जल्दी से जल्दी आना है जो सबके बाप के स्नेह का झण्डा लहरायेगा। अभी बाप ने इशारा आज दिया वह आप करेंगे ना, तो प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी होगी। आया कि आया, आपके सामने भी यह दृश्य, सभी के मुख से यह आवाज निकले हमारा बाबा आ गया। अभी तीव्र पुरुषार्थ करके यह समय जल्दी से जल्दी समीप लाना ही है, आना ही है, होना ही है और सबको बोलना ही है। अच्छा - आप सभी को बापदादा विशेष स्नहे का हार पहना रहे हैं। बढ़ते चलो, उड़ते चलो, उड़ाते चलो। अच्छा।

(11.02.2010)

आप सभी नये बच्चे वा रीयल गोल्ड बच्चे सदा बाप के आज्ञाकारी हो ना! तो आज इस मैं को जलाके ही जाना। जो पहले बारी आये हैं वह उठो। अच्छा। बापदादा पहले बारी आने वाले बच्चों को पहले बारी आने की पदमगुणा मुबारक दे रहे हैं। लेकिन जैसे अभी पहले बारी आये हो ऐसे ही पहला नम्बर फर्स्ट डिवीजन, पहला नम्बर में तो फिक्स है लेकिन फर्स्ट डिवीजन में आयेंगे, यह हिम्मत है, हाथ उठाओ जिसमें हिम्मत है? देखो सोच के उठाओ। अच्छा। तो लक्ष्य रखो कि हम लास्ट आये हैं लेकिन फास्ट जायेंगे क्योंकि समय का कोई भरोसा नहीं। अभी जो करना है वह तीव्र पुरुषार्थी बन कर लो क्योंकि बहुत समय का पुरुषार्थ आप सबको थोड़े समय में पूरा करना पड़ेगा। तो हिम्मत है? है हिम्मत? हाथ उठाओ। देखो फोटो निकल रहा है आपका। बापदादा ऐसे हिम्मत वालों को मुबारक देते हैं कि हिम्मत आपकी मदद बाप की। लेकिन हिम्मत नहीं हारना। अपने भाग्य का सितारा सदा चमकाते रहना क्योंकि इस जन्म का तीव्र पुरुषार्थ, पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ अनेक जन्मों का भाग्य बनाने वाला है इसलिए हिम्मत कभी नहीं हारना। बातें आयेंगी लेकिन बात महावीर नहीं है, आप सर्वशक्तिवान के बच्चे हो, आपके आगे बात क्या है! बात आती है और चली जाती है। जो चली जाने वाली है उसके पीछे अपनी तकदीर नहीं गंवाना। अच्छा बैठो।

(28.02.2010)

सेवा का टर्न महाराष्ट्र ज़ोन का है:- अच्छा यह सीन सभी को दिखाओ। अभी देखो महाराष्ट्र का पौना क्लास है। पुराने हैं या नये हैं लेकिन महाराष्ट्र के हैं। अच्छा जो खड़े हुए हैं उसमें जो रेग्युलर स्टूडेन्ट हैं, सेवा करने वाले हैं, सेन्टर सम्भालने वाले हैं वह बैठ जाओ। तो भी देखो नये भी कितने हैं। अच्छा जो नये हैं वह उठो और सभी बैठ जाओ। अच्छा। नयों की भी संख्या तो काफी है, बापदादा खुश होते हैं कि टूलेट के पहले आ गये हो। इसीलिए आप सभी आने वालों को मुबारक है। आने वालों को बापदादा यही वरदान देते हैं कि

थोड़े समय में फास्ट पुरुषार्थ तीव्र पुरुषार्थ कर आगे बढ़ सकते हो। अगर हर समय अटेन्शन रखेंगे, परिवर्तन करने का और सारे दिन में अपने पढ़ाई और प्राप्ति इकट्ठी करते रहेंगे तो आप भी आगे बढ़ सकते हो। चांस है। अभी टूलेट नहीं है, लेट है इसीलिए आप जितना हो सके उतना अपने चार ही सबजेक्ट में, पढ़ाई में अटेन्शन देते रहना। बाप भी देखते रहते हैं कौन-कौन लास्ट वाला भी फास्ट जाता है। ऐसे नहीं है कि नहीं जाते हैं, जाते हैं। तो बाप की तो एक एक बच्चे में यही आशा है कि हर एक बच्चा आगे से आगे जाये और अपना स्वराज्य और बापदादा के दिल का तख्त ले। अच्छा।

महाराष्ट्र नाम ही महा है। पहले महा आता है ना! तो महान आत्मायें तो हो और महान आत्माओं में महान उमंग-उत्साह तीव्र पुरुषार्थ सदा बाप की आशाओं को प्रैक्टिकल में लाने का लक्ष्य और लक्षण भी है। दोनों है ना! लक्ष्य भी है और लक्षण भी है। समान है या फर्क है? जितना बड़ा लक्ष्य है उतना ही लक्षण की भी स्पीड है वा फर्क है? जो समझते हैं कि लक्ष्य ऊंचा है और लक्षण के तरफ भी अटेन्शन इतना ही है, वह हाथ उठाओ। लक्ष्य और लक्षण हैं? वह थोड़ों ने उठाया है। अभी महाराष्ट्र की एक एक आत्मा अमृतवेले बापदादा से मिलन मनाने के बाद यह अटेन्शन देना कि आज के दिन लक्ष्य और लक्षण एक करना है। यह कर सकते हो ना! और रात को बापदादा को समाचार देना कि आज के दिन लक्ष्य और लक्षण समान रहा या फर्क रहा! और दूसरे दिन खास अटेन्शन रखके जो कमी हुई ना उसको भरना। तीसरे दिन उस कमी को सदा के लिए समाप्त करना। ऐसे आगे आगे बढ़ते रहना। तो महाराष्ट्र नम्बरवन हो जायेगा ना! सबमें। चार ही सबजेक्ट में। ज्ञान, योग, धारणा.. धारणा को पहला नम्बर रखना। धारणा में नम्बरवन हो सकता है! हो सकता है? टीचर्स हो सकता है? हाथ उठाओ। करना पड़ेगा, ऐसे नहीं। जो करेंगे वह हाथ उठाओ। अच्छा है। जितनी संख्या है और टीचर्स ने हाथ उठाया है तो बापदादा वरदान देता है कि बाप भी एक्सट्रा मदद देंगे क्योंकि महाराष्ट्र है। कमाल करके दिखाना। बाबा कहेंगे और एक्सट्रा ताकत अनुभव करेंगे। दिल से कहना बाबा तो एक्सट्रा मदद

अनुभव होगी। बापदादा का अटेन्शन रहेगा। अच्छा है। आप करेंगे ना प्रैक्टिकल तो सबको उमंग आयेगा। कोई भी बात आवे ना, आप नहीं कर सकते हो, हिम्मत थोड़ी कम है तो एकस्ट्रा बाप को जो अपना हिम्मत कम करने वाला काम है, उसे बाबा को सुपुर्द कर दो, बाबा मैं यह नहीं कर सकती हूँ। आप ले लो। मैं यह संकल्प में भी नहीं लाऊंगी। बिल्कुल उस संकल्प को आने नहीं देना। दे दो वापस आवे तो दिल में नहीं रखना। फिर वापस कर देना। बापदादा चाहता है कि मेरा एक एक बच्चा जो सोचे वह करके दिखावे। सोचते तो सभी अच्छा हैं, तो करना!। पाण्डव भी करेंगे ना! करेंगे? पाण्डव हाथ उठाओ करेंगे? अच्छा। फिर बापदादा बहुत एक अच्छी बात सुनायेगा, करने के बाद। अच्छा। बाकी सेवा तो अच्छी कर रहे हैं। आपने क्या सर्टीफिकेट दिया। अच्छी हो रही है सेवा।

डबल विदेशी :- डबल विदेशियों को बापदादा एक बात की बहुत-बहुत मुबारक देते हैं। कौन सी बात की? डबल विदेशियों में एक विशेषता देखी जो पहले अपना कल्चर बदलना मुश्किल लगता था, इन्डियन कल्चर मुश्किल लगता था लेकिन अभी यह प्रॉबलम मैजारिटी समाप्त है। अभी कई आत्माओं में जो है विदेशी लेकिन पुरुषार्थ में अच्छे हैं, उन्हों को ऐसी महसूसता आती है कि हम तो थे ही बाबा के, सेवा के लिए सिर्फ विदेश में यह जन्म लिया है। यह देखकर बापदादा को इस चेंज की खुशी है। आप में से जो समझते हैं हम तो हैं ही यहाँ के, सिर्फ सेवा के लिए यह जन्म लिया है चारों ओर सेवा के लिए। वह हाथ उठाओ। यहाँ के ही थे और यहाँ के ही रहेंगे क्योंकि वायदा है, ब्रह्मा बाबा के साथ अभी भी बापदादा के साथ जायेंगे, पक्का। साथ जायेंगे, कांध हिलाओ। और सतयुग में भी साथ आयेंगे। कांध हिलाओ। अच्छा। और द्वापर में भक्ति में भी साथ में रहेंगे। साथ ही रहेंगे ना! वह थोड़े होंगे। सारा कल्प ब्राह्मण परिवार के कोई न कोई के सम्पर्क में होंगे। यह अविनाशी नाता भिन्न-भिन्न रूप में थोड़ा दूर या नजदीक कईयों का रहेगा। तो डबल विदेशियों में की यह भी विशेष एक कमाल है, अगर समझ में बात आ जाती हैं ना तो समझने वाले डगमग नहीं होते,

पक्के रहते हैं। समझ में आ जाये तो हिलते कम हैं। समझ में जब तक नहीं आयेगी तब तक क्वेश्चन भी होगा और थोड़ा हिलना जुलना होगा लेकिन समझ लिया तो पक्के चलते रहते हैं। ऐसे कई बच्चे बाबा के आंखों में समाये हुए जो हिलने वाले नहीं हैं। उड़ने वाले हैं। बापदादा सदा विदेश में चक्कर लगाने आते हैं। अमृतवेले में भी आते हैं। तो क्या देखते हैं? रिजल्ट में थोड़ा-थोड़ा मिसिंग भी होती है और कोई कोई मेहनत करते हैं। छोड़ते नहीं हैं, मेहनत करके बैठते हैं और मेहनत में बीच-बी में सफलता भी होती है। लेकिन जो नियम है उसमें मैजारिटी अच्छे रिजल्ट में हैं। बापदादा खुश है। और जो होमवर्कदिया वह किया है? जिसने किया है वह हाथ उठाओ। क्रोध छोड़ा है? क्रोध छोड़ा है? हाथ उठाओ। क्रोध नहीं किया? मन में। हाथ उठाओ। थोड़े हैं। अभी यह होम वर्क भी करते पास मार्क्स लेना। अटेन्शन है बच्चों का, बापदादा ने टोटल रिजल्ट देखी कि जब भी क्रोध करते हैं ना उस समय आधे में याद आ जाता है, हाँ। और अपने को चेक करते हैं नहीं नहीं, क्रोध नहीं करना है। लेकिन थोड़ा मन में आ जाता है। मुख को कन्ट्रोल कर लेते हैं लेकिन मन में आ जाता है। लेकिन करना है पक्का। करना है ना! पक्का है ना! सभी को यह रिजल्ट सभी की बापदादा ने सुनाई। चाहे इन्डिया चाहे विदेश। लेकिन साथ चलना है तो यह तो बाप समान बनना ही पड़ेगा ना। बातें तो आयेंगी लेकिन बातें आती हैं और चली जाती हैं आपका प्रॉमिस नहीं जाना चाहिए। बाकी बापदादा ने देखा कि विदेश में भी वृद्धि अच्छी हो रही है। प्रोग्रामस भी अच्छे करते हैं। पुरुषार्थ के तरफ जो निमित्त बने हुए हैं वह अटेन्शन दिलाते भी अच्छा हैं। मेहनत करते हैं। अच्छा। जो सदा खुश रहते हैं, वह हाथ उठाओ। खुश रहते हैं। खुशी तो रहती है ना! खुशी जाती तो नहीं? खुशी नहीं जानी चाहिए। क्योंकि खुशी परमात्म गिफ्ट है। परमात्म गिफ्ट सम्भाल के रखनी चाहिए। बात, बात में हो गई, खुशी क्यों जावें। बात पॉवरफुल या खुशी परमात्मा गिफ्ट? तो यह भी कोशिश करो खुशी नहीं जाये। सदा फेस खुशनुमा रहे। खुशनुमा। रह सकती है खुशी? रह सकती है? कांध हिलाओ। रह सकती है अटेन्शन देंगे तो हो जायेगी ना। हो

जायेगी? पीछे वाले? तो बापदादा सभी के लिए कह रहे हैं एक मास के बाद सभी से यह चार्ट मंगायेंगे कि एक ही मास खुश रहा? आज की तारीख याद करना। सभी को कह रहे हैं सिर्फ फॉरेनर्स को नहीं। एक मास की ट्रायल करो, कोई भी बात आवे दिल में नहीं समाना। समझना बात राइट है रांग है क्या करना है लेकिन दिल में नहीं समाना। दिल में समा जाती है तभी खुशी जाती है। समझने वाला खुश रहेगा और बात को समझके पूरी करेगा। तो एक मास का पेपर है यह। खुश रहना है। हो सकता है? यह सभी हाथ उठाओ, हो सकता है? तो बापदादा एक मास के लिए आपको इकट्ठी मुबारक देते हैं। क्योंकि करना ही है। हो जायेगा, का पाठ नहीं, करना ही है। आखिर भी आप लोगों के ऊपर चाहे नये आये हैं या पुराने, है तो ब्राह्मण परिवार के। तो ब्राह्मण परिवार दुनिया के लिए विश्व परिवर्तक है। तो परिवर्तक परिवर्तन नहीं करेंगे तो विश्व का परिवर्तन कैसे होगा! जिम्मेवारी समझो। अलबेलापन छोड़ो। हो जायेगा, हो जायेगा नहीं। करना ही है। क्योंकि बापदादा जानते हैं कि समय आप ब्राह्मणों के रोकने से रुका हुआ है। समय को समीप लाने वाले आप हो। तो तीव्र पुरुषार्थ करो। दृढ़ संकल्प करो तो हो जायेंगे। रोज़ यह गीत याद करो अब घर चलना है। ठीक है। अच्छा।

बापदादा सभी चारों ओर के बच्चों को देख खुश भी होते हैं क्योंकि बापदादा बच्चों के सिवाए अकेला कुछ नहीं करने चाहता। इसलिए हर रोज़ बच्चों का आह्वान करते रहते हैं। तीव्र पुरुषार्थी बच्चे, मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे अब चलो। अच्छा।

(31.03.2010)

बापदादा अमृतवेले चक्कर लगाते हैं तो हर एक के पुरुषार्थ को चेक करते हैं। क्या चार ही सबजेक्ट में पुरुषार्थ तीव्र है वा साधारण है? तो क्या देखा? समय की रफ्तार प्रमाण अभी पुरुषार्थ में सदा तीव्र पुरुषार्थ की आवश्यकता है। तो बापदादा इशारा दे रहा है समय तीव्रगति से समीपता के

नजदीक आ रहा है। उस हिसाब से अभी विशेष स्वभाव और संस्कार के परिवर्तन में तीव्रगति चाहिए।

८० देशों से २२०० डबल विदेशी आये हैं:- तो बापदादा हर एक बच्चे को दिल के प्यार की गिफ्ट दे रहे हैं। जो फर्स्ट टाइम आये हैं वह उठो। आप सबको अपने आध्यात्मिक जन्म दिन की मुबारक हो, मुबारक हो क्योंकि आप हर एक परिवार की शोभा हो, श्रृंगार हो। इसीलिए बापदादा यही चाहते कि भले लेट आये हो लेकिन टूलेट के पहले आये हो, इसकी विशेष परिवार को आपके आने की खुशी है। आ गये, हमारे बिछुड़े हुए परिवार के साथी आ गये। अभी समय अनुसार आपको तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा। स्लो पुरुषार्थ ढीला पुरुषार्थ नहीं करना, तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो लास्ट सो फास्ट और फास्ट सो फर्स्ट आ सकते हैं। करेंगे ना! करेंगे? अच्छा है। बहुत बहुत परिवार की तरफ से, बापदादा की तरफ से बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार लेते रहना और बढ़ते रहना। अच्छा।

(24.10.2010)

सभी मिलने के लिए उमंग-उत्साह से पहुंच गये हैं तो बापदादा बच्चों का उमंग देख खुश है। अभी अटेन्शन देना है, सम्पन्न और सम्पूर्ण बनने में क्योंकि कम से कम 108 की माला तैयार कर सको, कर सकते हो? 108 की माला तैयार है? तैयार है? क्योंकि राजधानी में राज्य अधिकारी तो वही बनेंगे ना। लिस्ट अभी निकाल सकते हो 108 रत्नों की? निकाल सकते हो? निकाल सकते हैं? हाँ जी नहीं कहते हैं? 108 राज्य अधिकारी, फिर 16 हजार 108 राज्य अधिकारी के साथी। फिर उसके बाद है नम्बरवार। तो बापदादा अभी समय प्रमाण, समय को समीप लाने वाले बच्चों से यही चाहते हैं कि 108 की माला एवररेडी हो, बाप समान हो। हैं ना इतना, पहली लाइन निकाल सकती है 108, हाँ या ना करो ना! साकार में जब ब्रह्मा बाप थे तो कई बार ट्रायल की लेकिन फाइनल नहीं हो सकी, लेकिन अब तो 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं, तो इस

७५ वर्ष की जुबिली में कोई तो नवीनता करेंगे ना! तो नवीनता यही करो जो हर एक अपने को 108 की माला के मणके बनाये, जो गिनती में आये हाँ 108 की माला तो बन गई क्योंकि जब पहले राज्य अधिकारी बनें तब तो पीछे राज्य के सम्पर्क वाले बनें। उनको भी तो जगह चाहिए ना! तो बापदादा का कहने का यही सार है कि अभी हर एक को अपना तीव्र पुरुषार्थ कर और दृढ़ संकल्प करना है कि मुझे बाप समान बनना ही है क्योंकि बापदादा ने सुना दिया है कि अचानक परिवर्तन होना है। उसके पहले कम से कम जो सेवा के निमित्त बने हुए हैं, ज़ोन हेडस साथ में सेन्टर इन्चार्ज, साथ में उनके नजदीक के साथी पाण्डव, सेन्टर हेड नहीं बनते लेकिन कोई न कोई विशेष कार्य के निमित्त बने हुए जिनको विशेष आत्मा की नज़र से देखते हैं, उन पाण्डवों को भी अभी तीव्र पुरुषार्थ कर स्व परिवर्तन की झलक बाहर स्टेज पर लानी पड़ेगी। इसके लिए एवररेडी हैं? जो समझते हैं कि यह कार्य तो करना ही है, अपने को बाप समान, ब्रह्मा बाप समान फालो फादर करना ही है, करना है? हाथ उठाओ। हाथ तो इतने उठाते हैं खुश कर देते हैं। अच्छा करते हैं। लेकिन हाथ के साथ दृढ़ संकल्प भी करो। दृढ़ता की शक्ति बहुत सहयोग देती है।

(15.11.2011)

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि दो बातों का विशेष अटेन्शन दो। दो बातें कौन सी? याद हैं ना! एक समय और दूसरा संकल्प। संकल्प व्यर्थ न जाये, समय व्यर्थ न जाये। एक एक सेकण्ड सफल हो। तो बोलो इतना अटेन्शन देना पड़ेगा ना! बापदादा का तो सभी बच्चों से प्यार है। बापदादा यही चाहते कि एक बच्चा भी साथ से रह नहीं जाए। साथ है, साथ चलेंगे, साथ राज्य अधिकारी बन सदा जीवन में सुख शान्ति का अनुभव करेंगे। तो बोलो, साथ चलेंगे ना! चलेंगे? रह तो नहीं जायेंगे? देखो, तीन भाग्य तो हर एक के मस्तक में चमक रहे हैं। अपने मस्तक में यह तीनों ही भाग्य दिखाई देते हैं ना! संगमयुग ही भाग्यवान युग है। जो जितना भाग्य बनाने चाहे उतना बना सकते हैं। लेकिन

बहुत समय का अटेन्शन चाहिए। तो सभी बच्चे अपने अपने पुरुषार्थ में अभी तीव्रता लाओ। पुरुषार्थी हैं, बापदादा देखते हैं पुरुषार्थ करते हैं लेकिन सभी का तीव्रता का पुरुषार्थ अभी होना चाहिए। बापदादा हर बच्चे को बालक सो मालिक देखने चाहते हैं। किसका मालिक? सर्व खजानों का मालिक। कभी कभी कोई बच्चे बापदादा को कहते हैं कि बाबा आपने तो सर्वशक्तियां दी हैं और हम भी अपने को मास्टर सर्वशक्तिवान मानते हैं लेकिन कई बच्चे उल्हना देते हैं कि कभी कभी जिस समय जो शक्ति की आवश्यकता होती है, वह समय पर नहीं आती है। लेकिन इसका कारण क्या? बाप ने हर एक को सर्व शक्तियां दी हैं। दी हैं कि किसको कम दी हैं किसको ज्यादा? सर्वशक्तियां मिली हैं, हाथ उठाओ। सभी को मिली हैं लेकिन समय पर क्यों नहीं काम पर आती हैं? इसका कारण? कारण को जानते भी हो लेकिन उस समय भूल जाते हो। सर्वशक्तियों का खजाना हर बच्चे को वर्से में मिला है। बाप ने सभी को सर्वशक्तियों का वर्सा दिया है, कोई को कम कोई को ज्यादा नहीं दिया है। सर्वशक्तियां दी हैं लेकिन समय पर क्यों नहीं आती हैं, आप सोचो कोई भी अगर अपने स्वमान के सीट पर नहीं होता तो उसका आर्डर कोई मानता है? तो जिस समय शक्ति नहीं आती हैं, उसका कारण है कि आप अपने मास्टर सर्वशक्तिवान की सीट पर सेट नहीं होते इसीलिए बिना सीट के आर्डर कोई नहीं मानता। तो सदा अपनी सीट पर सेट रहो। कभी वेस्ट थॉटस चलते हैं वा कभी टेन्शन आता है तो उससे ही स्वमान की सीट छूट जाती है। बापदादा ने हर एक को कितने स्वमान दिये हैं। कितनी बड़ी स्वमान की सीट है! गिनती करो, कितने स्वमान बाप ने दिये हैं? स्वमान में सेट नहीं होते हैं तो जहाँ स्वमान नहीं वहाँ क्या होता है? जानते हो ना! देह अभिमान आता है। या तो स्वमान है या तो देहभान है। तो देहभान की सीट पर आर्डर करेंगे तो शक्ति नहीं मानती हैं। नहीं तो मास्टर सर्वशक्तिवान की शक्ति नहीं मानें यह हो नहीं सकता। सीट पर सेट होना इसका अभ्यास सदा करो। चेक करो चाहे कर्मयोग में हो, चाहे सेवा में हो, चाहे अपने मनन मंथन में हो लेकिन सीट पर सेट हैं तो सर्वशक्तियां हाज़िर होती हैं।

बापदादा अभी यही चाहते हैं कि एक एक बच्चा फॉलो फादर करते हुए बाप समान सम्पन्न जरूर बनें। बापदादा ने देखा कि पुरुषार्थ भी सब बच्चे करते हैं। पुरुषार्थ की लगन भी है, अपने से ही प्रॉमिस भी बहुत करते हैं, अब नहीं करेंगे, अब नहीं करेंगे... लेकिन कारण क्या होता है? कारण है पुरुषार्थ में दृढ़ता कम है। बीच बीच में अलबेलापन आ जाता है। हो जायेंगे, बन जायेंगे... यह अलबेलापन पुरुषार्थ को ढीला कर देता है। तो अब क्या करेंगे? अभी यही विशेष अटेन्शन दो, अपने आप अपना प्रोग्राम बनाओ, जिसमें सारा दिन मन को बिजी रखो। अपना प्रोग्राम आप बनाओ। टाइमटेबुल अपना आप बनाओ, मन को बिजी रखने का। चाहे मनन करो, चाहे सेवा करो, चाहे एक दो को अटेन्शन खिंचवाओ लेकिन बिजी रखो। मन से बिजी, शरीर से बिजी तो होते हो लेकिन मन से बिजी रहो। मन के बिजी रहने में बिजनेसमैन नम्बरवन बनो। यह कर सकते हो? करेंगे? करेंगे? क्योंकि आप जानते हो ब्रह्मा बाप भी आपका इन्तजार कर रहे हैं और आपकी एडवांस पार्टी भी आपका इन्तजार कर रही है, कब समय को समीप लाते हैं क्योंकि समय को समीप लाने के जिम्मेवार आप हो। अपने को सम्पन्न बनाना अर्थात् समय को समीप लाना।

तो बापदादा विशेष एक मास दे चुका है। इस एक मास में हर एक को तीव्र पुरुषार्थी बन, पुरुषार्थी नहीं तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। मंजूर है? है मंजूर? हाथ उठाओ। अच्छा, मुबारक हो। अभी हर एक को दृढ़ संकल्प कर रोज़ बापदादा को अपनी रिजल्ट सारे दिन की कैसी देनी है? तीव्र पुरुषार्थ की। पुरुषार्थ नहीं तीव्र पुरुषार्थ। इसके लिए तैयार हैं? हैं तैयार? दो हाथ उठाओ। बहुत अच्छा। अभी बापदादा अचानक ही बीच में रिजल्ट मंगायेगा। डेट नहीं बताते हैं। अचानक ही एक मास के अन्दर कोई भी डेट पर रिजल्ट मंगायेंगे। करना ही है। यह प्रॉमिस अपने आप करो। बापदादा करायेगा वह तो कराते ही हैं लेकिन अपने आप से यह संकल्प करो और प्रैक्टिकल करके दिखाओ। करना ही है। करेंगे, गे-गे नहीं.. अभी गे-गे अच्छी नहीं है। समय आगे बढ़ रहा है, अति में जा रहा है, तो समय का परिवर्तन करने वाले क्या आप पूर्वजों को अपने

दु:खी परिवार पर रहम नहीं आता? रहमदिल बनो। दु:खियों को सुख का रास्ता बताओ, चाहे मन्सा से, चाहे वाचा से, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क से। अपना परिवार है ना! तो परिवार का दु:ख मिटाना है। रहमदिल बनो। अच्छा।

अभी जहाँ भी जो बैठे हैं उन सबको चाहे टी.वी. में देख रहे हैं, चाहे यहाँ भिन्न-भिन्न स्थान पर बैठे हैं वह भी टी.वी. में देख रहे हैं, एक एक बच्चे को बापदादा आज तीव्र पुरुषार्थी का टाइटल दे रहा है। अभी इसी टाइटल को सदा याद रखना। कोई पूछे आप कौन हैं? तो यही कहना तीव्र पुरुषार्थी। ठीक है सभी को मंजूर है। मंजूर है? अभी ढीला पुरूषार्थ नहीं चलेगा, समय आगे भाग रहा है इसीलिए अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है, समय की पुकार है - तीव्र पुरुषार्थी भव। तो सभी बच्चों को बापदादा की बहुत-बहुत यादप्यार और तीव्र पुरुषार्थ की सौगात दे रहे हैं।

पहली बार आने वालों से :- अच्छा, पहली बार आने वाले बच्चों को बापदादा विशेष मुबारक दे रहे हैं। बापदादा आप बच्चों को देख खुश हो रहे हैं, क्यों खुश हो रहे हैं? क्योंकि आप सभी लास्ट समय के पहले पहुंच गये हो इसलिए मुबारक दे रहे हैं। अपना हक लेने के अधिकारी बन गये इसलिए आप सभी जो आज बापदादा बार-बार कह रहे हैं तीव्र पुरुषार्थी बनना। तीव्र पुरुषार्थी बन आगे से आगे बढ़ सकते हो। यह वरदान अभी प्राप्त हो सकता है। सभी जो भी आये हैं उन सबको यह अटेन्शन देना है कि सदा एक तो मुरली की स्टडी कायदेप्रमाण करते रहना और साथ-साथ मन्सा सेवा या वाचा सेवा करने का गोल्डन चांस लेते रहना। तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

बापदादा की तो उम्मींद हर बच्चे के लिए श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ है कि हर बच्चा बाप का बन औरों को भी बाप का बनायेंगे। अभी तीव्र पुरुषार्थ सेवा में भी, धारणा में भी दोनों में तीव्र पुरुषार्थ।

(30.11.2011)

बापदादा ने देखा कि वर्तमान समय सभी को रूचि है, प्लैन बनाया भी है, प्रैक्टिकल किया भी है, इस ७५ वर्ष की जुबिली मनाने का। बापदादा यही चाहते हैं, प्रोग्राम तो सब अच्छे किये हैं, इसकी मुबारक भी दे रहे हैं। लेकिन अभी समय के प्रमाण जल्दी-जल्दी उन्हों को वारिस बनाओ, जो कुछ न कुछ वर्से के अधिकारी बन जायें। अच्छा- अच्छा बहुत कहते हैं, बापदादा ने भी बच्चों के सेवा की यह रिजल्ट तोदेखी है और बाप बच्चों पर खुश भी है। दिल से कर रहे हैं और अभी समय प्रमाण सुनते भी रूचि से हैं। इतना अन्तर तो आया है। अच्छा-अच्छा लगता है लेकिन अच्छा बनाके कुछ न कुछ वर्से के अधिकारी बनाओ। इसके लिए बापदादा ने पहले भी इशारा दिया है कि अभी समय अनुसार तीव्र पुरूषार्थी बनने की आवश्यकता है। तीव्र पुरुषार्थी बनने के लिए मुख्य पुरुषार्थ है सेकण्ड में बिन्दी लगाना। सेकण्ड और बिन्दी, दोनों समान। तो अब बापदादा बच्चों का तो बेफिक्र बादशाह का रूप देख रहा है। अभी इसी रूप को सदा अनुभव करो। कोई भी कुछ भी आवे तो मेरे को तेरे में समा दो।

डबल विदेशी भाई बहिनों से:- डबल विदेशी भी बापदादा ने देखा सेवा में भारत की आत्माओं से कम नहीं हैं। बापदादा खुश होते हैं कि हर एक अपने-अपने स्थान में सेवा की वृद्धि भी कर रहे हैं और स्वयं को भी अच्छे उमंग उत्साह में चला रहे हैं। डबल विदेशियों का यह संस्कार है कि जो करेंगे वह उमंग उत्साह से करके पूरा करेंगे और पुरुषार्थ के तरफ भी अटेन्शन है। तो सभी हाथ उठाओ कि सभी तीव्र पुरुषार्थी हैं? तीव्र पुरुषार्थी हैं? अच्छा। सबके तरफ से भी बहुत-बहुत मुबारक है क्यों? तीव्र पुरुषार्थी अर्थात् बापदादा की आशाओं को पूर्ण प्रैक्टिकल करने वाले। तो बापदादा तीव्र पुरुषार्थ की मुबारक दे रहे हैं। तीव्र पुरुषार्थी हैं और सदा तीव्र पुरुषार्थी बन औरों को भी तीव्र पुरुषार्थी बनायेंगे। तो सारा विदेश तीव्र पुरुषार्थी की लिस्ट में आ जाये। ऐसा रिकार्ड कुछ है और कुछ दिखाना है। लेकिन बापदादा पुरुषार्थ की मुबारक दे रहे हैं। मुरली के ऊपर भी अटेन्शन है, यह बापदादा को मुरली का स्नेह अच्छा लगता है।

मधुबन से भी प्यार, मुरली से भी प्यार, परिवार से भी प्यार और मेरा बाबा से भी प्यार। अभी सूक्ष्म पुरुषार्थ के तरफ भी अटेन्शन अच्छा है और बापदादा ने देखा कि जनक बच्ची का भी बहुत ध्यान है। यहाँ रहते भी हर क्लास पहले फारेन को पहुंचता है। तो पालना भी अच्छी मिल रही है। यह भी आपका लक है। लकीएस्ट और स्वीटेस्ट दोनों ही हैं। अच्छा।

पहली बार आने वालों से:- यह तो बहुत हैं। हाथ हिलाओ। तो सभी अपने मधुबन घर में पधारे हैं, उसकी बापदादा एक-एक बच्चे को मुबारक दे रहे हैं क्योंकि लास्ट समय के पहले पहुंच गये हो। लास्ट सो फास्ट जाने का चांस है। बापदादा बच्चों को देख खुश हो रहे हैं। आये, भले पधारे और आगे के लिए अब तीव्र पुरुषार्थ कर आगे से भी आगे जाने का दृढ़ संकल्प करो। दृढ़ता सफलता की चाबी है। तो बापदादा जो भी आज बच्चे आये हैं उन्हों को विशेष दृढ़ता के चाबी की सौगात दे रहे हैं। दृढ़ता को कभी भी हल्का नहीं करना। दृढ़ता आपको सदा सहज आगे बढ़ाती रहेगी। तो बापदादा खुश है भले पधारे, अपना वर्सा लेने के लिए आये, इसकी बहुत-बहुत मुबारक। अच्छा।

(15.12.2011)

आज तो सभी इस श्रेष्ठ दिन पर बाप से मिलने आये हैं। आज का दिन है संगम का दिन। विदाई भी है और बधाई भी है। वैसे भी संगम का महत्व है। जहाँ भी सागर और नदी का संगम होता है उसका बहुत महत्व होता है। तो आज के दिन का भी महत्व बहुत गायन योग्य है। पुराना वर्ष समाप्त और नया वर्ष आरम्भ होना है। आज के दिन सभी के दिल में आगे आने वाले वर्ष के लिए कितना उमंग है! हर एक ने अपने-अपने दिल में प्लैन बनाया है क्या छोड़ना है और क्या बनना है, दोनों ही प्लैन बनाया है? बनाया है? जिसने आने वाले वर्ष के लिए अपने आगे बढ़ने का, तीव्र पुरुषार्थ का प्लैन बनाया है वह हाथ उठाना। बनाया है! मुबारक हो। क्योंकि सब जानते हैं कि बापदादा हर बच्चे के लिए क्या चाहता है। बापदादा हर बच्चे के लिए यही शुभ भावना रखते हैं कि हर

बच्चा बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बन जाये। अब तो समय भी साथ दे रहा है। तो हर एक ने अपने मन में अपने प्रति नया प्लैन बनाया है ना! कुछ छोड़ना है और कुछ आगे बढ़ना है। तो छोड़ना क्या है? बापदादा ने देखा कि पुराने संसार और सम्बन्ध में छोड़ने में सबका पुरुषार्थ पर अटेन्शन भी है। एक बात जो छोड़ने भी चाहते हैं लेकिन अब तक बापदादा ने देखा कि पुराने संस्कार उसको छोड़ने में थोड़ी मेहनत लगती है। तो बापदादा यही चाहते हैं कि इस नये वर्ष में हर एक बच्चा अपना निज़ी संस्कार का संस्कार कर ले। आप सब भी इसी संकल्प को पूरा करने चाहते हैं ना! क्योंकि पुराना संस्कार जिसको आप लोग कहते हो मेरी नेचर है, भाव नहीं है लेकिन नेचर है। तो नेचर इस जन्म के ब्राह्मण की नहीं है लेकिन पुरानी है। तो उस पुराने संस्कार का आज के दिन, हर एक अपने को तो जानते हैं तो आज वर्ष की विदाई के साथ-साथ उस पुराने संस्कार को छोड़ने का दृढ़ संकल्प कर सकते हो? कर सकते हो? चाहते भी हैं, ऐसा नहीं है कि चाहते नहीं हैं लेकिन फिर भी बार-बार पुरुषार्थ में तीव्रता लाने में वही संस्कार भिन्न-भिन्न रूप से विघ्न डालते हैं तो बापदादा यही चाहते हैं कि वर्ष को विदाई देने के साथ आज के दिन उसको भी विदाई दे दो। इसके लिए तैयार हैं, जो तैयार हैं वह हाथ उठाओ। इसके लिए क्या करेंगे? अपने लिए कोई प्लैन भी सोचा है? इसके लिए सबसे अच्छी बात है दृढ़ संकल्प। संकल्प है, होना चाहिए लेकिन संकल्प में तीव्रता चाहिए। जैसे ब्राह्मण बनने के साथ-साथ यह प्रतिज्ञा की कि कोई भी अशुद्ध भोजन स्वीकार नहीं करना है। तो बापदादा ने देखा इसमें दृढ़ संकल्प द्वारा मैजारिटी पास हैं। जैसे तन के लिए अशुद्ध भोजन का संकल्प किया और प्रैक्टिकल कर रहे हो, ऐसे ही मन के लिए यह दृढ़ संकल्प करना है कि कभी भी किसी के प्रति भी किसी भी सरकमस्टांश प्रमाण कोई भी व्यर्थ संकल्प न कर सदा हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना रखनी ही है। मन का भोजन है संकल्प, तो जैसे तन के लिए दृढ़ संकल्प मैजारिटी ने किया है, ऐसे ही क्या मन के लिए व्यर्थ संकल्प, अशुद्ध भावना

मिटा नहीं सकते? हर आत्मा के प्रति दिल का स्नेह और सहयोग अपने मन में नहीं रख सकते हैं?

तो आज बापदादा इस पुराने वर्ष के साथ इस वृत्ति वा दृष्टि को हर बच्चे से विदाई चाहते हैं। यह दृढ़ संकल्प कर सकते हो? कर सकते हैं? बोलो, मातायें, टीचर्स, सब भाई भी चाहते हैं। हाँ हाथ उठाओ। कल से किसी भी आत्मा के प्रति अगर कोई भी व्यर्थ है, व्यर्थ भावना वा व्यर्थ भाव उसकी आज समाप्ति समारोह मनाने चाहते हैं। बोलो, टीचर्स सब तैयार हैं? टीचर दो दो हाथ उठाओ। उठाओ। अच्छा। जिन्होंने नहीं उठाया वह उठाओ। जिन्होंने नहीं उठाया वह थोड़ा सा उठके खड़े हो जाओ। अच्छा हैं! जो पुरुषार्थ करेंगे लेकिन दृढ़ संकल्प नहीं करेंगे, ऐसे हैं? जो उठे हैं वह लक्ष्य और पुरुषार्थ करेंगे तो हाथ उठाओ। क्योंकि समय का अटेन्शन रखें, यह सोचो कि सभी को इस संगम समय में भविष्य बहुत समय की सफलता प्राप्त करनी हैं। 21 जन्म का वर्सा लेना है। तो कहाँ यह एक जन्म और कहाँ 21 जन्म। तो इस एक जन्म में भी काफी समय अपना पुरुषार्थ तीव्र करना पड़े तभी बहुत समय की जो प्राप्ति करनी है, बाप से प्यार है ना तो साथ रहना है ना! नजदीक रहना है ना! ब्रह्मा बाप के साथी बनके राज्य अधिकारी बनना है ना! तो अब भी इतना समय बाप समान तो बनना पड़े। ब्रह्मा बाप का एक-एक बच्चे से कितना प्यार है वह तो जानते ही हो। हर एक कहता है मेरा बाबा। बाबा को जितना मेरे से प्यार है उतना किससे नहीं है, मेरे से प्यार है। तो यह प्यार, बापदादा दोनों का प्यार इस जन्म में ही अनुभव कर रहे हो। और जिससे प्यार होता है उसकी बात कभी भी टाली नहीं जाती है। तो ब्रह्मा बाप से सबका प्यार है, कितना प्यार है? बहुत प्यार है। चाहे दिखा नहीं सकते हैं लेकिन बाप जानते हैं कि प्यार सभी बच्चों का है, नम्बरवार है लेकिन प्यार है इसमें बापदादा भी सभी बच्चों को सर्टीफिकेट देते हैं कि प्यार है। प्यार तो है लेकिन बाप ने देखा कि कभी-कभी नटखट हो जाते हैं, तो बाप उस समय क्या करता? बाप देख-देख विशेष शक्ति देता रहता क्योंकि बाप यही चाहते हैं कि हर बच्चा राजा बच्चा है, दुनिया में जो लाडला बच्चा होता है

उसको राजा बच्चा कहते हैं। होता राजा नहीं लेकिन कहते हैं राजा बच्चा लेकिन आप सभी बापदादा के अब भी राजा बच्चा हो और भविष्य में भी राजा बच्चा हो। अभी स्वमान है, स्वराज्य है। अभी आत्मा का राज्य सर्व कर्मेन्द्रियों के ऊपर है। तो स्वराज्यधारी अभी हो और विश्व राज्यधारी भविष्य में हो। तो राजा बच्चे हो ना! हैं तो कांध हिलाओ।

बापदादा ने यह भी कहा कि सभी अपने अन्दर अपने लिए समय निश्चित करो कि कब तक अपने को बाप समान बनायेंगे। अपने अन्दर अपने लिए निश्चित करो। तो निश्चित करना आता है ना? बापदादा तो आज हर बच्चे को देख यही वरदान दे रहे हैं अगले वर्ष में हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी भव। अमृतवेले जब याद में बैठते हो और जब उठने का समय होता है उस समय बापदादा का यह वरदान अपने दिल में याद रखना तीव्र पुरुषार्थी भव। जैसे बापदादा ने दो बातें पहले ही अटेन्शन में दिलाई हैं क्योंकि संगम का समय अचानक समाप्त होना है। तो एक समय, दूसरा संकल्प, दोनों पर हर घड़ी अटेन्शन। बापदादा की यह भी हर बच्चे के प्रति शुभ भावना है कि हर बच्चा इस वर्ष में क्या बनें? क्या बनेंगे? जो भी आपके चेहरे में देखे आपके चेहरे से फरिश्ता रूप दिखाई दे। फलानी हूँ, फलाना हूँ नहीं। फरिश्ता अनुभव में आवे। इसके लिए ज्वालामुखी योग, कोई व्यर्थ नहीं। लाइट और माइट स्वरूप योग से व्यर्थ को जलाओ। समर्थ फरिश्ता नज़र आये। जिसको भी देखे, क्योंकि बाप के सिकीलधे बच्चे तो हो। बाप ने आपको खास कहाँ-कहाँ से चुन करके अपना बनाया है। तो लक्ष्य रखो मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। तो अमृतवेले अपनी दिनचर्या में यह याद रखना मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ। चलते फिरते फरिश्ता रूप, फरिश्ता स्वरूप तो अच्छा लगता है ना! ब्रह्मा बाप फरिश्ता बना, फालो फादर।

तो इस वर्ष का वरदान जो दिया तीव्र पुरुषार्थी, साधारण पुरुषार्थ नहीं, साधारण पुरुषार्थ है तो राज्य के साथी नहीं बनेंगे। और बाप यही चाहता है जितने भी स्टूडेन्ट, बापदादा की मुरली अध्ययन करने वाले हैं, गॉडली स्टूडेन्ट हैं वह सबके सब क्या बनेंगे? फरिश्ता। सब बोझ उतर जायेगा। कोई भी संस्कार का

बोझ समाप्त हो जायेगा। तो इस वर्ष का होमवर्क क्या रहा? फरिश्ता स्वरूप में रहना है, इसको ही कहा जाता है तीव्र पुरुषार्थ। अभी हर एक सेन्टर, हर सप्ताह, हर स्टूडेन्ट की रिजल्ट देखे की तीव्र पुरुषार्थी रहे? अगर कोई भी बात आई, उसके लिए सहयोगी बन करके, स्नेह से उनको हिम्मत दे और अपने सेन्टर को, स्टूडेन्ट को तीव्र पुरुषार्थी बनाये, हर सप्ताह रिजल्ट देखे क्योंकि समय हलचल का होना ही है।

(31.12.2011)

अभी समय अनुसार जो उमंग है कि बाप को प्रत्यक्ष करना है, वह धीरे-धीरे आत्माओं के दिल में भी आने लगा है। समझते हैं कि ब्रह्माकुमारियों ने कुछ पाया है, परिवर्तन हो रहा है। पहले जो समझते थे पता नहीं क्या करते हैं, अभी यहाँ तक आये हैं कि अच्छा कार्य कर रहे हैं। जो हम नहीं कर सकते वह इन्होंने अपने संगठन में सफलता पाई है इसलिए आज बापदादा सामने बैठे हुए बच्चों को वा चारों ओर जो भी बच्चे सुन रहे हैं, देख रहे हैं सभी बच्चों को दिल का स्नेह, दिल का प्यार विशेष दे रहे हैं। अभी आगे क्या करना है? सेवा की मुबारक तो बापदादा ने दे दी, अब बापदादा यही चाहते हैं कि अभी हर एक बच्चे को यह उमंग-उत्साह, दृढ़ निश्चय, तीव्र पुरुषार्थ करना है कि अब बाप समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि अभी सभी को बाप के साथ रिटर्न जरनी करनी है। समान फरिश्ता बनना ही है क्योंकि सभी का वायदा है साथ चलेंगे, साथ राज्य करेंगे। तो ब्रह्मा बाप भी फरिश्ता बन गया, तो साथ कैसे चलेंगे? ब्रह्मा बाप ने जीवन में ही फरिश्तापन का स्वरूप दिखाया। कितनी जिम्मेवारी रही! सभी को योगी बनाना ही है लेकिन इतनी जिम्मेवारी होते भी आप सबने देखा न्यारा और प्यारा रहा। सदा बेफिक्र बादशाह रहा, फिकर नहीं बेफिक्र बादशाह। ऐसे ही आप बच्चों को भी अभी बाप समान बेफिक्र बादशाह फरिश्ता बनना ही है। यह दृढ़ संकल्प है, बनना ही है! कि यह सोचते हो बन ही जायेंगे!

अभी बापदादा ने देखा कि अभी समय अनुसार जितना सेवा का उमंग-उत्साह प्रैक्टिकल में है इतना ही अभी तीव्र पुरुषार्थी बनना और बनाना, सम्पन्न बनना और बनाना, इस प्वाइंट के ऊपर भी अभी स्वयं भी उमंग-उत्साह में रहना और वायुमण्डल में भी उमंग-उत्साह दिलाना। एक दो के सहयोगी बन अब वायुमण्डल में तीव्र पुरुषार्थ की लहर फैलाओ। जैसे एक दो में सेवा का उमंग वायुमण्डल में फैलाया है ऐसे अभी बापदादा बच्चों में यही शुभ आशा रखते हैं कि यह लहर वायुमण्डल में फैले। बापदादा खुश है लेकिन अभी भी पुरुषार्थ है, तीव्र पुरुषार्थ करना है। अभी हर बच्चे में बापदादा की यही आश है तो हर बच्चा बाप के आशाओं का सितारा हो ना! हैं? जो समझते हैं हम बाप के आशाओं के सितारे बन यह उमंग-उत्साह वायुमण्डल में फैलायेंगे वह हाथ उठाओ। अच्छा। हाथ तो बहुत अच्छा उठाते हैं। बापदादा हाथों को देखके खुश हो जाते हैं। मैजारिटी ने हाथ उठाया है, पीछे वालों का दिखाई नहीं देता लेकिन आगे वालों का दिखाई दिया। अभी उठा रहे हैं पीछे वाले भी, मुबारक हो, मुबारक हो। अच्छा। बापदादा ने देखा कि विशेष मन में कोई भी बात का उमंग-उत्साह आता है तो वह कार्य साकार रूप में अच्छा हो जाता है इसलिए बापदादा इस बारी स्नेह के दिन में यह होमवर्क दे रहा है कि हर एक बच्चा मन के कारण जो संकल्प और समय व्यर्थ जाता है, अगर कभी भी कोई व्यर्थ संकल्प आ जाता है तो सभी को अनुभव होगा कि उसमें टाइम कितना वेस्ट जाता है। इनर्जी कितनी वेस्ट जाती है। तो बापदादा यह होमवर्क देने चाहता कि यह दो मास हर एक बच्चा मन के व्यर्थ संकल्प और व्यर्थ समय की बचत का अपने प्रति विधि बनावे। इन दो मास में हर एक अपना चार्ट रखे कि व्यर्थ समय, व्यर्थ संकल्प के ऊपर कितना कन्ट्रोल किया? क्योंकि अभी समय के प्रमाण आप सभी को मन्सा शक्ति द्वारा आत्माओं की मन्सा सेवा करने का समय होगा। इसके लिए सदा मन के ऊपर अटेन्शन रखना जरूरी है। कहा हुआ भी है मनजीत जगतजीत। तो मनमनाभव के वायुमण्डल में मन के व्यर्थ को सम्पन्न करना है। कर सकते हैं? करेंगे? वह हाथ उठाओ। बापदादा इनाम देगा। अपनी रिजल्ट

आप देखना। मन खुश तो मन की खुशी बांटेंगे। यह पुरुषार्थ में नम्बर सभी आगे से आगे लेने का अटेन्शन रखो। व्यर्थ समाप्त, संकल्प समय दोनों समाप्त और समर्थ संकल्प, समर्थ समय आने वाले समय में वायुमण्डल में फैलेगा।

बापदादा ने आज सभी का जो स्नेह है वह स्वीकार किया। अमृतवेले तो वतन में भी बहुत बच्चों की रिमझिम थी। एडवांस पार्टी भी वतन में आज अपने दिल का स्नेह देने लिए, लेने लिए आये थे। अब वह बाप से पूछते हैं कि आखिर हमारा यह पार्ट कब तक? क्या जवाब दें? पहली लाइन वाले बताओ क्या जवाब दें? क्या कहा? (दादी जानकी ने कहा हम रेडी हैं) आप अकेले जायेंगी? (सभी जायेंगे) आपका प्यार है ना, ऐसे छोड़कर राज्य कैसे करेंगे। (एडवांस पार्टी वाले हमको क्यों छोड़कर चले गये) उन्हों का पार्ट था ना। उन्हों को जाना ही था। अभी आप यह कोशिश करो कि जल्दी जल्दी संगठन तैयार करो। जो दो मास काम दिया है ना, अगर यह काम आप सभी को करा देंगे, रिजल्ट निकालेंगे तो जल्दी हो जायेगा। (बाबा के स्नेह में कर लेंगे) स्नेह तो है, स्नेह में सभी पास है। बापदादा भी देखते हैं कि स्नेह सबका है लेकिन स्नेह के साथ शक्ति भी चाहिए। इसके लिए अमृतवेले को पावरफुल बनाओ, बैठते हैं बापदादा बैठने की मुबारक देते हैं लेकिन जो बैठने का वायुमण्डल शक्तिशाली चाहिए, कोई कैसे बैठता है, कोई कैसे बैठता है। अगर आप फोटो निकालो ना, तो आपको खुद लगेगा कि और कुछ होना चाहिए। जो बापदादा ने ज्वालामुखी योग कहा, उसके ऊपर अभी और गहरा अटेन्शन देना। पुरुषार्थ करते हैं सभी लेकिन पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द जोड़ो। अभी बापदादा ने हर बच्चे को यह दो मास दिये हैं, इसमें जितना अटेन्शन देंगे तो अटेन्शन के साथ बापदादा भी एकस्ट्रा आपको सहयोग देगा। मन के मालिक, मन को ऐसे चलाओ जैसे पांव और बांह को चलाते हो। जो चाहते हो वह करते हैं ना। अभी आप चाहो यहाँ नहीं यहाँ रखूं तो रख सकते हो ना। ऐसे माइन्ड कन्ट्रोल, जो चाहे वही मन संकल्प करे। रोज़ रात को रिजल्ट देखो आज मन की रूलिंग पावर, कन्ट्रोलिंग पावर कहाँ तक रही? अभी व्यर्थ को समाप्त जल्दी-जल्दी करना चाहिए अब

समर्थ बन वायुमण्डल में समर्थपन की शक्ति फैलाओ। बापदादा तो बच्चों का दुःख दर्द, पुकार सुन करके बच्चों द्वारा अभी जल्दी समाप्ति कराने चाहते हैं। सुनाया ना, पुरुषार्थ सब कर रहे हैं लेकिन अभी एड करो तीव्र। करना ही है, करेंगे, देखेंगे... यह गे-गे नहीं चलेगा।

स्नेह का नज़ारा भी आज देखा, हर एक के दिल में कितना प्यार है लेकिन जितना प्यार है ना, साथ में उतना शक्ति भी चाहिए। अभी शक्ति को भरो। कभी भी कोई भी बहनें अपने को सिर्फ शक्ति नहीं, शिवशक्ति समझो। शिवशक्ति, बाप साथ है। पाण्डवों से पाण्डवपति साथ है। तो अभी क्या करेंगे? जो बापदादा ने कहा है पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द लगाओ। वायुमण्डल बनाओ। एक दो के सहयोगी बन हर एक अपने-अपने स्थान पर रहते हैं, स्थान को शक्तिशाली बनाओ, साथियों को शक्तिशाली बनाओ। तो क्या करेंगे अभी? नवीनता करेंगे ना! जब मेरा बाबा कहते हैं, तो 'मेरे' जैसा बनना तो पड़ेगा ना। हर एक अपने दिल में दृढ़ संकल्प करो, संकल्प अच्छे-अच्छे करते हो, अमृतवेले बापदादा देखते हैं कि संकल्प अच्छे करते हो यह करेंगे, यह करेंगे, यह करेंगे लेकिन जब कर्मयोगी बनते हो, सम्बन्ध-सम्पर्क में आते हो उसमें फर्क हो जाता है। कर्मयोगी की स्थिति उसमें अटेन्शन ज्यादा चाहिए। अच्छा।

सभी खुश तो हैं ना! खुश हैं? देखो नये-नये भी कितने आते हैं। जो नये पहली बार आये हैं वह हाथ उठाओ। देखो कितने हैं? आधा क्लास नये आये हैं। बापदादा आये हुए नये बच्चों को देख खुश है क्योंकि लास्ट समाप्ति के समय से तो पहले आ गये हैं। लेकिन जितना लेट आये हो इतना ही तीव्र पुरुषार्थ करना पड़ेगा क्योंकि इस थोड़े टाइम में आपको पूरे 21 जन्मों का भविष्य बनाना है। इतना अटेन्शन रखना पड़ेगा। समय को बचाना, सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं गंवाना। तीव्र पुरुषार्थी रहना, साधारण पुरुषार्थ से पहुंचना मुश्किल है। फिर भी बापदादा आये हुए बच्चों को दिल से मुबारक दे रहे हैं। मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

डबल विदेशी 400 आये हैं:- बहुत अच्छा। डबल विदेशी यज्ञ का श्रृंगार हैं। जब भी आते हैं ना तो यज्ञ का श्रृंगार हो, सभी कितने खुश होते हैं क्योंकि आपकी एक विशेषता अच्छी है, जो भी करना है ना वह फौरन करते हो, लम्बा नहीं करते हो। बापदादा देखते हैं कि उमंग-उत्साह ज्यादा बढ़ता जा रहा है। कोई भी ऐसा टर्न नहीं होता जिसमें डबल विदेशी नहीं हों। तो बापदादा डबल विदेशियों को टाइटल देता है डबल पुरुषार्थी। अभी करके दिखाना। डबल पुरुषार्थी बनके रिजल्ट दिखाना। बापदादा को मालूम है सेवा बढ़ती रहती है, समाचार आता रहता है। सेवा भी अच्छी है, अभी सिर्फ जो आज कहा ना, पुरुषार्थ के आगे तीव्र शब्द सदा लगाओ। तो तीव्र पुरुषार्थी बच्चे सदा बापदादा को अपने दिल में रखते और बापदादा हर बच्चे को अपने दिल में रखते। सबके दिल में बापदादा है ना। हाथ उठाओ। दिल में कौन रहता है? बापदादा। और बापदादा के दिल में आप बच्चे हैं।

(18.01.2012)

बापदादा ने देखा सभी अटेन्शन रखते हैं लेकिन नियमित रूप से अपनी दिनचर्या सेट करो। बीच-बीच में यह अपने स्वमान के स्मृति स्वरूप में स्थित रहो। जैसे ट्रैफिक कन्ट्रोल करते हो ऐसे यह स्वमान की स्मृति आदिकाल से रिटर्न जरनी तक की, बीच-बीच में टाइम फिक्स करो। यह चलते फिरते भी कर सकते हो क्योंकि मन को सीट पर बिठाना है। बापदादा ने देखा, पहले भी कहा है योग सब लगाते हो लेकिन अब आवश्यकता किसकी है? समय की हालतों को देख पहले भी सुनाया अब ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है, जिससे डबल काम होगा। एक तो अपने पुराने संस्कार का संस्कार हो जायेगा, अभी संस्कारों को मारते हो लेकिन जलाते नहीं हो। मारने के बाद फिर भी कभी-कभी वह जाग जाते हैं। जैसे रावण को सिर्फ मारा नहीं, जलाया। ऐसे आप भी अपने पुराने संस्कारों को जो बीच-बीच में तीव्र पुरुषार्थ में कमी कर देते हैं, उसके लिए ज्वालामुखी योग की आवश्यकता है। एक स्वयं के लिए और

दूसरा ज्वालामुखी योग द्वारा औरों को भी लाइट रूप होने के कारण, माइट रूप होने के कारण उन्हों को भी अपनी किरणों द्वारा सहयोग दे सकते हो। तो अभी सभी ने योग को ज्वालामुखी योग में परिवर्तन किया? समय अनुसार अभी आत्माओं को आपके सहयोग की आवश्यकता है। बाकी बापदादा तो अमृतवेले हर बच्चे को स्नेह देते हैं।

सभी चारों ओर के बच्चों को बापदादा दिल का स्नेह दे रहे हैं। साथ-साथ जो बापदादा ने दो मास का कार्य दिया है, उसकी भी स्मृति दिला रहे हैं क्यों? बहुत करके यह व्यर्थ संकल्प पुरुषार्थ को तीव्र के बजाए साधारण कर देते हैं इसलिए चारों ओर के बच्चों को बापदादा यादप्यार के साथ यह भी स्मृति दिला रहे हैं कि अब संगम का समय कितना श्रेष्ठ सुहावना हैं, इस संगम के समय ही सर्व खजाने बाप द्वारा प्राप्त होते हैं, संगम का एक-एक सेकण्ड महान है इसलिए संगम के समय का मूल्य सदा अपने बुद्धि में रखो। संगम का एक सेकण्ड प्राप्ति कितना कराता है। आपसे कोई पूछे आपको क्या मिला है, तो क्या जवाब देंगे? अप्राप्त नहीं कोई वस्तु हम ब्राह्मणों के दिल में। पाना था वो पा लिया। अब उसको कार्य में लगाते हुए तीव्र पुरुषार्थी बन समय को समीप लाओ। अच्छा। बापदादा देखते हैं सभी को उमंग भी आता है और यह उमंग सदा आगे बढ़ाते रहो। अच्छा।

आज पहली बार आने वाले उठो। पहले बारी आये हो तो कमाल करो। क्या कमाल करो? पहले नम्बर का पुरुषार्थ करो। लास्ट से फास्ट और फर्स्ट होके दिखाओ। हो सकता है, कोई रत्न ऐसे भी निकलने हैं तो आप ही दिखाओ। बापदादा की मदद सभी को है। तीव्र पुरुषार्थ, आने से ही साधारण पुरुषार्थ नहीं, तीव्र पुरुषार्थ करो। करना ही है, बनना ही है। आगे जाना ही है। यह दृढ़ संकल्प रखो और ऐसे कोई एक्जैम्पुल निकलने भी हैं। बापदादा को खुशी है कि समय से पहले तो आ गये। वर्से के अधिकारी तो बन गये। अच्छा। बापदादा खुश है, आये, भले आये, आपका सीज़न था लेकिन अभी आगे से आगे जाके दिखाओ। हम पीछे आये हैं यह नहीं सोचो, आगे जा सकते हो। बापदादा की, ड्रामा की

मदद मिलेगी। अच्छा है। देखो, कितने आते हैं। आधा क्लास तो पहले बारी का आता है। बापदादा को खुशी है कि बाप को पहचान तो लिया। वर्से के अधिकारी बन तो गये। अच्छा। सभी को बापदादा और सारे परिवार की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

(02.02.2012)

जो भी आज पहले बारी आये हैं, वह उठो। हाथ हिलाओ। बापदादा आने वाले बच्चों को आ गये, जान लिया मेरा बाबा, इसकी बहुत-बहुत मुबारक दे रहे हैं। बापदादा को खुशी है फिर भी हलचल जो होनी है उसके पहले पहुंच गये हो, इसकी मुबारक हो। अभी आने वाला हर बच्चा यह संकल्प करो दृढ़, साधारण संकल्प नहीं, दृढ़ संकल्प करो कि तीव्र पुरुषार्थी बनना ही है। तीव्र, साधारण नहीं। तो आने वाले अपने राज्य में आ जायेंगे इसलिए साधारण संकल्प का समय पूरा हुआ। अभी तीव्र पुरुषार्थ का समय है, चांस है, फिर भी चांस लेने वाले चांसलर तो बन गये। तो बापदादा हर बच्चे को देख खुश है और हर बच्चे को कह रहे हैं कि तीव्र पुरुषार्थ करेंगे तो साथ जायेंगे, साथ रहेंगे। तो मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

95 देशों से 1300 डबल विदेशी आये हैं:- बहुत अच्छा मधुबन का श्रृंगार मधुबन में पहुंच गया है। डबल विदेशियों का मधुबन से प्यार कितना है और मधुबन वालों का भी डबल फॉरेनर्स से प्यार है। डबल फॉरेनर्स मधुबन का श्रृंगार हैं। सभी ने अच्छी रीति से जो भी कान्फ्रेन्स प्रोग्राम करना था, वह आराम से किया। जगह थोड़ी कम मिली है, यह भी हो जायेगा आगे। बाकी डबल फारेनर्स को बापदादा यही वरदान दे रहे हैं कि जगत अम्बा के दो शब्द बाप का कहना और बच्चे का करना, यह सदा जगत अम्बा की सौगात याद रखना। बापदादा जानता है मुरली से प्यार सबका है, बाकी परिवार से भी प्यार है। बाप से तो है ही, अभी अपने में हर धारणा, हर सेवा में सफलतामूर्त एक-एक में यह दोनों ही विशेषता हो, जो बापदादा सेवा में आप लोगों का दृष्टान्त देकर औरों को

भी उमंग में लाये। ऐसा पुरुषार्थ कर एक्जैम्पुल बनो। करने में दृढ़ संकल्प से सफलता के अधिकारी हो इसलिए एक्जैम्पुल बनो। तीव्र पुरुषार्थी बनने का एक्जैम्पुल बनो, साधारण तो सभी हैं लेकिन आप तीव्र पुरुषार्थ का सैम्पुल बनो। उम्मीदवार हैं। बापदादा ने देखा डबल विदेशियों में निज़ी संस्कार होता है कि जो सोचा वह करना ही है। तो अभी तीव्र पुरुषार्थी का ऐसे सैम्पुल बनो, जो बापदादा आपका दृष्टान्त देकरके औरों को भी उमंग-उल्हास में लाये। उम्मीदवार हो। जो संकल्प करो वह कर सकते हो इसलिए बापदादा आज के दिन की पदम पदम पदम मुबारक दे रहे हैं।

बापदादा हर बच्चे को देख चाहे पीछे बैठे हैं चाहे कोने में बैठे हैं, लेकिन एक-एक बच्चे को सदा तीव्र पुरुषार्थी बन औरों को भी तीव्र पुरुषार्थी अपने संग से भी बना सकते हैं। किसी भी आत्मा को कोई सहयोग चाहिए वह दिल से सहयोग दे तीव्र पुरुषार्थी बनाते चलो। हर बच्चा तीव्र पुरुषार्थी हो। नम्बरवार नहीं, तीव्र पुरुषार्थी। कम से कम अपने सम्पर्क में रहने वाले, आने वाले हर स्थान तीव्र पुरुषार्थी स्थान हो। यही सं कल्प हर एक रखे और फिर बापदादा इसकी रिजल्ट देखेंगे। जहाँ सेन्टर वाले सब तीव्र पुरुषार्थी स्वरूप में है उनको बापदादा कोई-कोई नहीं, सभी साथी हो उनको एक गिफ्ट देंगे। हो सकता है ना! कि मुश्किल है? नहीं। कम से कम अपने स्थान को तो बना सकते हैं। अपने सेवाकेन्द्र को तो बना सकते हैं। ऐसा एक्जैम्पुल अभी बापदादा देखने चाहते हैं। जैसे मोहजीत की कहानी है ना, जिसे भी मिले मोहजीत। तो सुनने में अच्छी लगती है ना। ऐसे जिसे भी देखें तीव्र पुरुषार्थी ग्रुप। लक्ष्य रखो, लक्ष्य से लक्षण आ ही जायेंगे। हर एक सेन्टर सन्तुष्टमणियों का सेन्टर हो। अच्छा।

(19.02.2012)